# THE COLLECTED POEMS OF EMILY DICKINSON

With an Introduction and Notes By Rachel Wetzsteon

> Consulting Editorial Director George Stade

> > BARNES & NOBLE CLASSICS
> > NEW YORK

## **Table of Contents**

FROM THE PAGES OF THE COLLECTED POEMS OF EMILY **DICKINSON** Title Page Copyright Page **EMILY DICKINSON** THE WORLD OF EMILY DICKINSON AND HER POETRY Introduction

# PART ONE - LIFE

I

| II                                  |  |  |  |
|-------------------------------------|--|--|--|
| $\underline{\mathbf{III}}$          |  |  |  |
| <u>IV</u>                           |  |  |  |
| $\underline{\mathbf{V}}$            |  |  |  |
| <u>VI</u>                           |  |  |  |
| VII                                 |  |  |  |
| VIII                                |  |  |  |
| <u>IX</u>                           |  |  |  |
| $\overline{\underline{\mathbf{X}}}$ |  |  |  |
| XI                                  |  |  |  |
| XII                                 |  |  |  |
| XIII                                |  |  |  |
| XIV                                 |  |  |  |
| $\overline{XV}$                     |  |  |  |
| XVI                                 |  |  |  |
| XVII                                |  |  |  |
| XVIII                               |  |  |  |
|                                     |  |  |  |
|                                     |  |  |  |



| <u>XXXVI</u>  |  |  |
|---------------|--|--|
| <b>XXXVII</b> |  |  |
| XXXVIII       |  |  |
| XXXIX         |  |  |
| XL            |  |  |
| XLI           |  |  |
| XLII          |  |  |
| XLIII         |  |  |
|               |  |  |
| XLIV          |  |  |
| XLV           |  |  |
| <u>XLVI</u>   |  |  |
| XLVII         |  |  |
| XLVIII        |  |  |
| XLIX          |  |  |
| L             |  |  |
| <u>LI</u>     |  |  |
| LII           |  |  |
| <u> 1711</u>  |  |  |
|               |  |  |

| <u>LXX</u>     |  |  |
|----------------|--|--|
| <u>LXXI</u>    |  |  |
| <u>LXXII</u>   |  |  |
| LXXIII         |  |  |
| LXXIV          |  |  |
| LXXV           |  |  |
| LXXVI          |  |  |
| LXXVII         |  |  |
| LXXVIII        |  |  |
| LXXIX          |  |  |
|                |  |  |
| LXXX           |  |  |
| <u>LXXXI</u>   |  |  |
| <b>LXXXII</b>  |  |  |
| <b>LXXXIII</b> |  |  |
| <b>LXXXIV</b>  |  |  |
| LXXXV          |  |  |
| LXXXVI         |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

| <b>LXXXVII</b>  |  |  |
|-----------------|--|--|
| <b>LXXXVIII</b> |  |  |
| <b>LXXXIX</b>   |  |  |
| <u>XC</u>       |  |  |
| <u>XCI</u>      |  |  |
| XCII            |  |  |
| XCIII           |  |  |
| XCIV            |  |  |
| XCV             |  |  |
| <u>XCVI</u>     |  |  |
| <u>XCVII</u>    |  |  |
| <u>XCVIII</u>   |  |  |
| XCIX            |  |  |
| <u>C</u>        |  |  |
| <u>CI</u>       |  |  |
| <u>CII</u>      |  |  |
| <u>CIII</u>     |  |  |
|                 |  |  |

| <u>CIV</u>    |  |  |
|---------------|--|--|
| CV            |  |  |
| CVI           |  |  |
| CVII          |  |  |
| CVIII         |  |  |
| <u>CIX</u>    |  |  |
|               |  |  |
| <u>CX</u>     |  |  |
| CXI           |  |  |
| CXII          |  |  |
| CXIII         |  |  |
| CXIV          |  |  |
| CXV           |  |  |
| CXVI          |  |  |
|               |  |  |
| <u>CXVII</u>  |  |  |
| <b>CXVIII</b> |  |  |
| <b>CXIX</b>   |  |  |
| CXX           |  |  |
|               |  |  |
|               |  |  |

| <u>CXXI</u>    |  |  |
|----------------|--|--|
| <b>CXXII</b>   |  |  |
| CXXIII         |  |  |
| CXXIV          |  |  |
| CXXV           |  |  |
| CXXVI          |  |  |
| CXXVII         |  |  |
| CXXVIII        |  |  |
| CXXIX          |  |  |
| CXXX           |  |  |
|                |  |  |
| CXXXI          |  |  |
| <u>CXXXII</u>  |  |  |
| <b>CXXXIII</b> |  |  |
| <b>CXXXIV</b>  |  |  |
| CXXXV          |  |  |
| CXXXVI         |  |  |
| CXXXVII        |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

**CXXXVIII** 

XI XII XIII

## PART TWO - NATURE

II

 $\mathbf{III}$ 

<u>IV</u>

V

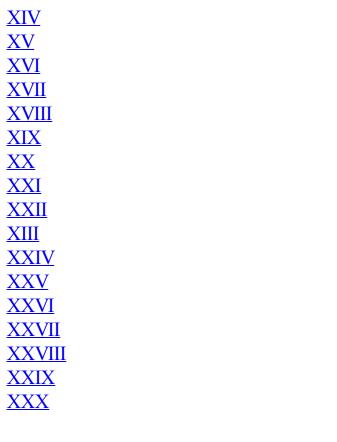
VI

**VII** 

VIII

<u>IX</u>

 $\underline{\mathbf{X}}$ 



| XXX I         |  |  |
|---------------|--|--|
| XXXII         |  |  |
| XXXIII        |  |  |
| XXXIV         |  |  |
| XXXV          |  |  |
| ΔΛΛΥ          |  |  |
| <u>XXXVI</u>  |  |  |
| <b>XXXVII</b> |  |  |
| XXXVIII       |  |  |
| XXXIX         |  |  |
| VI            |  |  |
| <u>XL</u>     |  |  |
| XLI           |  |  |
| XLII          |  |  |
| XLIII         |  |  |
| XLIV          |  |  |
|               |  |  |
| <u>XLV</u>    |  |  |
| <u>XLVI</u>   |  |  |
| <b>XLVII</b>  |  |  |
|               |  |  |
|               |  |  |

| <u>XLVIII</u> |  |  |
|---------------|--|--|
| XLIX          |  |  |
| L             |  |  |
| LI            |  |  |
| <u>LII</u>    |  |  |
| <u>LIII</u>   |  |  |
| <u>LIV</u>    |  |  |
| <u>LV</u>     |  |  |
| <u>LVI</u>    |  |  |
| <u>LVII</u>   |  |  |
| <u>LVIII</u>  |  |  |
| <u>LIX</u>    |  |  |
| <u>LX</u>     |  |  |
| <u>LXI</u>    |  |  |
| <u>LXII</u>   |  |  |
| <u>LXIII</u>  |  |  |
| <u>LXIV</u>   |  |  |
|               |  |  |
|               |  |  |

| <u>LXV</u>     |  |  |
|----------------|--|--|
| <u>LXVI</u>    |  |  |
| <b>LXVII</b>   |  |  |
| <b>LXVIII</b>  |  |  |
| LXIX           |  |  |
| LXX            |  |  |
| LXXI           |  |  |
| LXXII          |  |  |
| LXXIII         |  |  |
| LXXIV          |  |  |
| LXXV           |  |  |
| LXXVI          |  |  |
|                |  |  |
| LXXVII         |  |  |
| <u>LXXVIII</u> |  |  |
| <u>LXXIX</u>   |  |  |
| <u>LXXX</u>    |  |  |
| <b>LXXXI</b>   |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

| LXXXII        |  |
|---------------|--|
|               |  |
| LXXXIII       |  |
| <u>LXXXIV</u> |  |
| LXXXV         |  |
| LXXXVI        |  |
| LXXXVII       |  |
| LXXXVIII      |  |
| LXXXIX        |  |
| XC            |  |
| XCI           |  |
| XCII          |  |
| XCIII         |  |
| XCIV          |  |
| XCV           |  |
| XCVI          |  |
| XCVII         |  |
| XCVIII        |  |
|               |  |
|               |  |

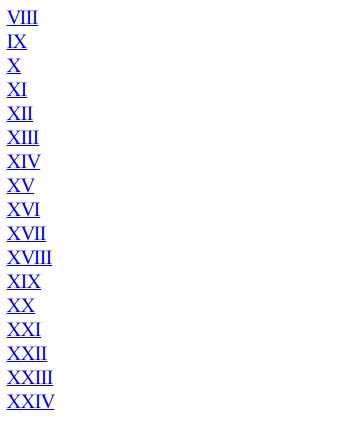
**XCIX** <u>C</u> <u>CI</u> CII CIII **CIV** CV **CVI CVII CVIII CIX** CX **CXI** PART THREE - LOVE

| II                         |  |  |
|----------------------------|--|--|
| $\underline{\mathbf{III}}$ |  |  |
| <u>IV</u>                  |  |  |
| $\underline{\mathbf{V}}$   |  |  |
| VI                         |  |  |
| VII                        |  |  |
| VIII                       |  |  |
| IX                         |  |  |
| <u>X</u>                   |  |  |
| XI                         |  |  |
|                            |  |  |
| XII<br>XIII                |  |  |
| XIII                       |  |  |
| XIV                        |  |  |
| XV                         |  |  |
| <u>XVI</u>                 |  |  |
| XVII                       |  |  |
| XVIII                      |  |  |
|                            |  |  |
|                            |  |  |



| <u>XXXVI</u>   |  |  |
|----------------|--|--|
| <b>XXXVII</b>  |  |  |
| XXXVIII        |  |  |
| XXXIX          |  |  |
| XL             |  |  |
| XLI            |  |  |
| XLII           |  |  |
| XLIII          |  |  |
|                |  |  |
| XLIV           |  |  |
| XLV            |  |  |
| <u>XLVI</u>    |  |  |
| <b>XLVII</b>   |  |  |
| XLVIII         |  |  |
| XLIX           |  |  |
| L              |  |  |
| _<br><u>LI</u> |  |  |
| LII            |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

| <u>LIII</u>                         |
|-------------------------------------|
| <u>LIV</u>                          |
| LV                                  |
| LVI                                 |
| LVII                                |
|                                     |
| PART FOUR - TIME AND                |
| ETERNITY                            |
|                                     |
| Ī                                   |
|                                     |
| —<br>III                            |
| <u>IV</u>                           |
| $\overline{\underline{\mathbf{V}}}$ |
| <u>VI</u>                           |
| <u>VII</u>                          |
|                                     |





| XLII       |  |  |
|------------|--|--|
| XLIII      |  |  |
| XLIV       |  |  |
| XLV        |  |  |
| XLVI       |  |  |
| XLVII      |  |  |
| XLVIII     |  |  |
| XLIX       |  |  |
| <u>L</u>   |  |  |
| <u>L</u>   |  |  |
| LI         |  |  |
| <u>LII</u> |  |  |
| LIII       |  |  |
| <u>LIV</u> |  |  |
| LV         |  |  |
| LVI        |  |  |
| LVII       |  |  |
| LVIII      |  |  |
| 27111      |  |  |
|            |  |  |

| <u>LIX</u>    |  |  |
|---------------|--|--|
| <u>LX</u>     |  |  |
| LXI           |  |  |
| LXII          |  |  |
| LXIII         |  |  |
| LXIV          |  |  |
| LXV           |  |  |
| LXVI          |  |  |
| LXVII         |  |  |
|               |  |  |
| <u>LXVIII</u> |  |  |
| <u>LXIX</u>   |  |  |
| LXX           |  |  |
| <u>LXXI</u>   |  |  |
| LXXII         |  |  |
| LXXIII        |  |  |
| LXXIV         |  |  |
| LXXV          |  |  |
| <u>LULLI</u>  |  |  |
|               |  |  |

| <u>LXXVI</u>   |  |  |
|----------------|--|--|
| <b>LXXVII</b>  |  |  |
| <b>LXXVIII</b> |  |  |
| LXXIX          |  |  |
| LXXX           |  |  |
| LXXXI          |  |  |
| LXXXII         |  |  |
| LXXXIII        |  |  |
| LXXXIV         |  |  |
| LXXXV          |  |  |
| LXXXVI         |  |  |
| LXXXVII        |  |  |
| LXXXVIII       |  |  |
| LXXXIX         |  |  |
|                |  |  |
| XC             |  |  |
| <u>XCI</u>     |  |  |
| XCII           |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

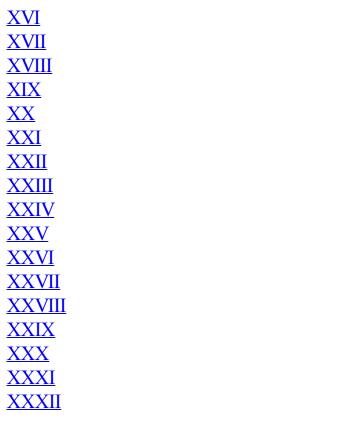
| <u>XCIII</u> |  |  |
|--------------|--|--|
| <b>XCIV</b>  |  |  |
| XCV          |  |  |
| XCVI         |  |  |
| XCVII        |  |  |
| XCVIII       |  |  |
|              |  |  |
| <u>XCIX</u>  |  |  |
| <u>C</u>     |  |  |
| <u>CI</u>    |  |  |
| <u>CII</u>   |  |  |
| CIII         |  |  |
| CIV          |  |  |
| CV           |  |  |
| CVI          |  |  |
| CVII         |  |  |
|              |  |  |
| <u>CVIII</u> |  |  |
| <u>CIX</u>   |  |  |
|              |  |  |
|              |  |  |

| <u>CX</u>     |  |  |
|---------------|--|--|
| <u>CXI</u>    |  |  |
| CXII          |  |  |
| CXIII         |  |  |
| CXIV          |  |  |
| CXV           |  |  |
|               |  |  |
| <u>CXVI</u>   |  |  |
| <u>CXVII</u>  |  |  |
| <b>CXVIII</b> |  |  |
| CXIX          |  |  |
| CXX           |  |  |
| CXXI          |  |  |
| CXXII         |  |  |
|               |  |  |
| <b>CXXIII</b> |  |  |
| <b>CXXIV</b>  |  |  |
| <b>CXXV</b>   |  |  |
| CXXVI         |  |  |
|               |  |  |
|               |  |  |

```
CXXVII
CXXVIII
CXXIX
CXXX
CXXXI
CXXXII
CXXXIII
CXXXIV
CXXXV
CXXXVI
CXXXVII
CXXXVIII
CXXXIX
CXL
CXLI
PART FIVE - THE SINGLE
```

# HOUND I II III IV V

<u>VI</u> <u>VII</u> <u>VIII</u> <u>IX</u> <u>X</u> <u>XI</u> **XII** XIII **XIV** XV



| 3/3/3/111     |  |  |
|---------------|--|--|
| XXXIII        |  |  |
| XXXIV         |  |  |
| XXXV          |  |  |
| XXXVI         |  |  |
| XXXVII        |  |  |
| XXXVIII       |  |  |
| XXXIX         |  |  |
| <u>XL</u>     |  |  |
| XLI           |  |  |
| <u>XLII</u>   |  |  |
| <u>XLIII</u>  |  |  |
| <u>XLIV</u>   |  |  |
| XLV           |  |  |
| <u>XLVI</u>   |  |  |
| <u>XLVII</u>  |  |  |
| <b>XLVIII</b> |  |  |
| <u>XLIX</u>   |  |  |
|               |  |  |
|               |  |  |

| L            |  |  |  |
|--------------|--|--|--|
| <u>LI</u>    |  |  |  |
| <u>LII</u>   |  |  |  |
| <u>LIII</u>  |  |  |  |
| <u>LIV</u>   |  |  |  |
| <u>LV</u>    |  |  |  |
| <u>LVI</u>   |  |  |  |
| <u>LVII</u>  |  |  |  |
| <u>LVIII</u> |  |  |  |
| <u>LIX</u>   |  |  |  |
| <u>LX</u>    |  |  |  |
| <u>LXI</u>   |  |  |  |
| <u>LXII</u>  |  |  |  |
| <u>LXIII</u> |  |  |  |
| <u>LXIV</u>  |  |  |  |
| <u>LXV</u>   |  |  |  |
| <u>LXVI</u>  |  |  |  |
|              |  |  |  |
|              |  |  |  |

| туулг          |  |  |
|----------------|--|--|
| <u>LXVII</u>   |  |  |
| <u>LXVIII</u>  |  |  |
| <u>LXIX</u>    |  |  |
| <u>LXX</u>     |  |  |
| <u>LXXI</u>    |  |  |
| <u>LXXII</u>   |  |  |
| <b>LXXIII</b>  |  |  |
| <b>LXXIV</b>   |  |  |
| <u>LXXV</u>    |  |  |
| <u>LXXVI</u>   |  |  |
| <b>LXXVII</b>  |  |  |
| <b>LXXVIII</b> |  |  |
| <u>LXXIX</u>   |  |  |
| <u>LXXX</u>    |  |  |
| <u>LXXXI</u>   |  |  |
| <b>LXXXII</b>  |  |  |
| <b>LXXXIII</b> |  |  |
|                |  |  |
|                |  |  |

| <u>LXXXIV</u>   |  |  |
|-----------------|--|--|
| <u>LXXXV</u>    |  |  |
| <b>LXXXVI</b>   |  |  |
| <b>LXXXVII</b>  |  |  |
| <b>LXXXVIII</b> |  |  |
| <u>LXXXIX</u>   |  |  |
| <u>XC</u>       |  |  |
| <u>XCI</u>      |  |  |
| <u>XCII</u>     |  |  |
| XCIII           |  |  |
| <u>XCIV</u>     |  |  |
| <u>XCV</u>      |  |  |
| <u>XCVI</u>     |  |  |
| <u>XCVII</u>    |  |  |
| <b>XCVIII</b>   |  |  |
| XCIX            |  |  |
| <u>C</u>        |  |  |
|                 |  |  |
|                 |  |  |

| <u>CI</u>              |  |  |  |
|------------------------|--|--|--|
| <u>CII</u>             |  |  |  |
| СШ                     |  |  |  |
| <u>CIV</u>             |  |  |  |
| $\overline{\text{CV}}$ |  |  |  |
| CVI                    |  |  |  |
| CVII                   |  |  |  |
| CVIII                  |  |  |  |
| CIX                    |  |  |  |
| CX                     |  |  |  |
|                        |  |  |  |
| <u>CXI</u>             |  |  |  |
| CXII                   |  |  |  |
| CXIII                  |  |  |  |
| <u>CXIV</u>            |  |  |  |
| <u>CXV</u>             |  |  |  |
| <u>CXVI</u>            |  |  |  |
| <b>CXVII</b>           |  |  |  |
|                        |  |  |  |
|                        |  |  |  |

CXXXV CXXXVI **CXXXVII** CXXXVIII CXXXIX **CXL CXLI CXLII CXLIII CXLIV CXLV CXLVI** INSPIRED BY EMILY DICKINSON'S **POETRY COMMENTS & OUESTIONS** FOR FURTHER READING

#### **INDEX OF FIRST LINES**

#### FROM THE PAGES OF THE COLLECTED POEMS OF EMILY DICKINSON

If I can stop one heart from breaking, I shall not live in vain. (page 8)

Pain has an element of blank; It cannot recollect When it began, or if there were A day when it was not. (page 16)

Hope is the thing with feathers
That perches in the soul,
And sings the tune without the words,

And never stops at all. (page 22)

For each ecstatic instant
We must an anguish pay
In keen and quivering ratio
To the ecstasy. (page 25)

Surgeons must be very careful When they take the knife!
Underneath their fine incisions
Stirs the culprit,—Life! (page 28)

And all we need of hell. (page 56) We never know how high we are

Parting is all we know of heaven,

Till we are called to rise; And then, if we are true to plan, Our statures touch the skies. (page 56)

And then the streets stood still. Eclipse was all we could see at the window, And awe was all we could feel. (pages

It sounded as if the streets were running,

I'll tell you how the sun rose,— A ribbon at a time. (page 127)

102-103)

If certain, when this life was out,

That yours and mine should be, I'd toss it yonder like a rind, And taste eternity. (pages 154-155)

Because I could not stop for Death, He kindly stopped for me; The carriage held but just ourselves And Immortality. (page 200)

They say that "time assuages",—
Time never did assuage;
An actual suffering strengthens,
As sinews do, with age. (page 233)

Death is the common right

Of toads and men. (pages 257-258)

To be alive is power, Existence in itself. (page 266)

That Love is all there is, Is all we know of Love. (page 312)

# THE COLLECTED POEMS OF EMILY DICKINSON

With an Introduction and Notes By Rachel Wetzsteon

> Consulting Editorial Director George Stade

> > BARNES & NOBLE CLASSICS

### BARNES & NOBLE CLASSICS NEW YORK

Published by Barnes & Noble Books 122 Fifth Avenue New York, NY 10011

www.barnesandnoble.com/classics

Emily Dickinson's poems were first published between 1890 and 1891 in three volumes, edited by Thomas Wentworth Higginson and

Mabel L. Todd.

The Single Hound was edited by Dickinson's niece Martha

Dickinson Bianchi, and published in 1914.

Published in 2003 by Barnes & Noble Classics with

new Introduction,
Notes, Biography, Chronology, Inspired By, Comments
& Questions,
and For Further Reading.

Introduction, Notes, and For Further Reading Copyright © 2003 by Rachel Wetzsteon.

Note on Emily Dickinson, The World of Emily
Dickinson and Her Poetry,
Inspired by Emily Dickinson's Poetry, and Comments
& Questions
Copyright © 2003 by Barnes & Noble, Inc.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without the prior written permission of

the publisher.

The Collected Poems of Emily Dickinson ISBN-13: 978-1-59308-050-1 ISBN-10: 1-59308-050-6 eISBN: 978-1-411-43193-5 L.C. Control Number 2003106733

Produced and published in conjunction with:
Fine Creative Media, Inc.
322 Eighth Avenue
New York, NY 10001

Michael J. Fine, President and Publisher

Printed in the United States of America
QM
5 7 9 10 8 6 4

#### **EMILY DICKINSON**

Emily Dickinson was born on December

10, 1830, in Amherst, Massachusetts, the second child of Emily Norcross and Edward Dickinson. Emily's family was prosperous and well established in Amherst society: Her grandfather, Samuel Fowler Dickinson, was the founder of the prestigious Amherst Academy and a cofounder of Amherst College; her father, Edward, a lawyer and politician, was treasurer of Amherst College. The family lived in Amherst's first brick building, the Homestead, built by Emily's grandfather in 1813. Dickinson grew up in a strict religious

father, who often censored her reading choices.

She attended Amherst Academy until she was seventeen, and then spent a year

household governed mainly by her

at the Mount Holyoke Female Seminary (now Mount Holyoke College). She studied a diversity of subjects, including botany and horticulture, which would become lifelong interests. Among writers she studied, she was particularly inspired by the poet Elizabeth Barrett Browning and the novelist George Eliot. It was during her year at Mount Holyoke that she began to question, and even to voice dissension from, her father's strict religious views.

to the Homestead, where she lived for the rest of her life. She left home for only a few brief trips to Philadelphia, Washington, D.C., and Boston. It was during a trip to Philadelphia that she met her lifelong friend the Reverend Charles Wadsworth. In 1856 her brother, Austin, married Susan Huntington Gilbert, who would become one of Dickinson's closest friends. The couple moved next door to the Homestead into a house built by Dickinson's father, the Evergreens. At the Evergreens, Dickinson met and began a correspondence with Samuel Bowles, editor of the Springfield

In 1848, when she was eighteen years old, Dickinson left college and returned

### Republican. Dickinson wrote the bulk of her nearly

sending four poems in 1862 to Thomas Wentworth Higginson, poetry editor of the *Atlantic Monthly*. Higginson advised her against publication, saying that the style of her poetry—its unusual rhythm and rhyming—was not commercial. The

two continued to correspond, however,

Following the death of her father in 1874. Dickinson became increasingly

and became close friends.

1,800 poems during her years at the Homestead. Five of her poems were printed in the Springfield *Republican*, but Dickinson herself made only one serious attempt at further publication,

Over the next ten years, many of her close friends and family died, including Samuel Bowles, Charles Wadsworth, her mother, and her nephew. In 1884 Dickinson was diagnosed with Bright's disease, a serious kidney disorder. She died from complications of the disease on May 15, 1886.

reclusive, corresponding with friends mainly through letters. She continued writing poetry, and she and her sister, Lavinia, nursed their bedridden mother.

After Dickinson's death, Lavinia discovered her sister's poems, arranged into little packets bundled with string. She gave them to Higginson and her friend Mabel Loomis Todd for editing.

came out in 1890. A revival of interest in Dickinson's life and poetry occurred in the late 1950s, when Thomas H. Johnson published the first complete edition of Dickinson's poems that was faithful in wording and punctuation to her original manuscripts.

The first of three volumes, titled *Poems*,

## THE WORLD OF EMILY DICKINSON AND HER POETRY

Nathaniel Dickinson, the first of Emily Dickinson's family to arrive in America, settles in New England.

Dickinson's grandfather,
Samuel Fowler Dickinson,
builds the Homestead in

1813 Amherst, Massachusetts; the
town's first brick house, it
will be Dickinson's home for
most of her life.

| 1814 | founds Amherst Academy,<br>which quickly becomes a<br>leading preparatory school in<br>western Massachusetts. |
|------|---|
| 1821 | He cofounds the Amherst<br>Collegiate Institution, renamed<br>Amherst College in 1825.                        |
| 1830 | Emily Elizabeth Dickinson is<br>born on December 10, the<br>second child of Edward                            |
| 1020 | Dickinson, a prominent  |

lawyer, and Emily Norcross

Edward Dickinson is appointed treasurer of

Dickinson

1835

Samuel Fowler Dickinson

Amherst College.

The Dickinsons move from the Homestead to North Pleasant Street. In the fall Emily and her sister, Lavinia, enter Amherst Academy. Emily is 1840 particularly influenced by a teacher, Edward Hitchcock, who emphasizes both religion and science in his lectures and writings.

She attends Mount Holyoke Female Seminary (now Mount Holyoke College) in nearby South Hadley, Massachusetts. At Mount Holyoke, she begins to question her father's
Puritanical religious
convictions.
In the fall Dickinson leaves

Mount Holyoke and moves back into her father's home.
She becomes friends with Ben Newton, a young lawyer in her father's office.

Her brother, Austin, begins courting Susan Huntington Gilbert, with whom Dickinson develops an intimate correspondence. Ben Newton gives her a copy of Emerson's poems for Christmas.

| 1853 | Ben Newton's death on March 24 has a profound effect on Dickinson.  |
|------|---|
| 1855 | Dickinson makes a brief trip with her sister and father to Philadelphia; she meets the Reverend Charles Wadsworth, who becomes a close friend and correspondent. Edward Dickinson repurchases the Homestead; he builds an addition to the house, including a conservatory for |

including a conservatory for Emily's exotic plants.

Austin Dickinson and Susan Gilbert marry; they move into the Evergreens, a house

wedding present.

At the Evergreens, Dickinson meets the literary editor and critic Samuel Bowles, editor of the Springfield *Republican*; they begin a correspondence.

adjacent to the Homestead

built for them by Edward as a

Dickinson sends four of her poems to Thomas Wentworth Higginson, poetry editor of the *Atlantic Monthly*. He advises her to regularize the "rough rhythms" and "imperfect

rhymes" of her poetry, which

| 1855 | he thinks damage its<br>commercial potential. She<br>instead chooses not to publish<br>her works. Dickinson and<br>Higginson begin a<br>correspondence that lasts<br>twenty years. |
|------|--|
| 1864 | Dickinson makes two trips to<br>Boston over the next two years<br>to visit an eye specialist.<br>These are the last times she<br>leaves Amherst.                                   |
|      | Dickinson's father dies in<br>Boston on June 16. With his<br>death, Dickinson becomes<br>more reclusive, keeping   |

1874 contact with friends and

|      | She and Lavinia maintain the Homestead and nurse their invalid mother.                              |
|------|---|
| 1878 | Samuel Bowles dies on January 16.   |
| 1882 | Charles Wadsworth dies on<br>April 1; Dickinson's mother<br>also dies this year, on<br>November 14. |
| 1883 | Dickinson's nephew Gilbert,<br>the son of Austin and Susan  |

On June 14 Dickinson suffers

her first attack of Bright's

Gilbert, dies.

family mainly through letters.

| 1007 | disorder.                 |
|------|---------------------------|
|      | Dickinson dies on May 15. |

disanca a carious kidney

1001

Among those attending her
1886 funeral is her lifelong friend
and mentor Thomas
Higginson.

Lavinia finds Dickinson's poems, untitled and bundled into fascicles (sewn paper booklets). She gives them to Higginson and Mabel Loomis Todd, another friend of Dickinson's, for editing. The first of three volumes titled Poems is published (the other

|      | 1896). The manuscripts are then kept in storage for the next sixty years.  |
|------|--|
| 1894 | Letters of Emily Dickinson, edited by Mabel Todd, is published.  |
| 1899 | Lavinia dies in 1899.  |
| 1914 | An edition of Dickinson's poetry— <i>The Single Hound: Poems of a Lifetime</i> —edited by her niece Martha Dickinson Bianchi is published. |
|      | Thomas H. Johnson  |

rediscovers Dickinson's

two are published in 1891 and

| 1955 | The Poems of Emily <i>Dickinson</i> , the first complete collection of her poetry that is free from editorial revisions. The book's publication leads to a renewed interest in Dickinson's poetry. |
|------|--|
| 1963 | The Homestead is designated a National Historic Landmark.  |
| 1965 | Amherst College purchases the Homestead and opens the  |

house as the Emily Dickinson

The State of Massachusetts

establishes the Emily

Museum.

original poems; he publishes

Dickinson Historic District, which includes the Homestead, the Evergreens, and surrounding properties.

1977

#### INTRODUCTION

Emily Dickinson, writing to the editor

Thomas Wentworth Higginson in July 1862, reported that she "had no portrait," but offered the following description in place of one: "Small, like the Wren, and my Hair is bold, like the Chestnut Bur—and my eyes, like the Sherry in the Glass, that the Guest leaves

—Would this do just as well?" (Selected Letters, edited by Thomas H. Johnson, p. 175; see "For Further Reading"). Despite Dickinson's claim, we do possess one photograph of her—a daguerreotype taken in 1847 or 1848, when she was in her late teens. The

portrait: Her frame is tiny; her shiny hair does indeed sit boldly atop her head; and her dark eyes really do glisten like liquor at the bottom of a glass.

The photograph also suggests many of

image certainly confirms her self-

the rich puzzles and paradoxes that have informed our view of Dickinson since the last decade of the nineteenth century, when readers and critics began to read, study, and obsess over her poems. Dickinson's body, with its delicate hands and slender torso, may resemble the fragile form of someone too weak to venture far from home; but her huge moist eyes stare at us with the wisdom, depth, and longing of a woman who has

subjects as flowers and books. We look away from the photograph intrigued and stirred: What's going on in her mind? How could this slight figure be the author of some of the most passionate love poems, the most searing descriptions of loss, the most haunting religious lyrics ever written? Emily Elizabeth Dickinson was born

in Amherst, Massachusetts, on

traveled around the world and come back with stories, not all of them fit for mixed company. She demurely clutches a bouquet of flowers, and a book rests primly at her side; but her full, sensuous lips reveal a person whose thoughts may not always tend toward such tidy December 10, 1830, the middle child of Edward and Emily Norcross Dickinson; her brother, Austin, was born in 1829 and her sister, Lavinia, in 1833. Her father, a lawyer, served as treasurer of Amherst College (her grandfather was a cofounder of the college), and also occupied important positions on the General Court of Massachusetts, the Massachusetts State Senate, and the United States House of Representatives. "His Heart," Dickinson wrote in a letter, "was pure and terrible and I think no other like it exists" (Selected Letters, p. 223). He was strictly religious (something she would later rebel against), leading the family prayers every day and often censoring her

wrote that she "does not care for thought" (Selected Letters, p. 173); more harshly, she claimed, "I never had a mother. I suppose a mother is one to whom you hurry when you are troubled" (Letters, vol. 2, p. 475). Even so, the Dickinsons remained an extremely close-knit family; after her brother,

Austin, married, he and his wife settled

Dickinson attended the coeducational Amherst Academy from the ages of ten

right next door.

reading; but he also ensured that Dickinson grew up in a household surrounded by books and heated intellectual debates. Her mother was a more shadowy presence; Dickinson

revival meeting, when she was asked to stand and declare herself a Christian and refused. After one year at Mount Holyoke she returned in 1848 to Amherst, where she remained, apart from brief trips to Boston, Cambridge, Philadelphia, and Washington, D.C., for the rest of her life.

At school and at home, Dickinson

received an excellent education. At the

to seventeen, and then went on to the Mount Holyoke Female Seminary (now Mount Holyoke College) in nearby South Hadley. She blossomed there into a social and spirited young woman. The most significant event of her stay occurred at a fundamentalist Calvinist

Amherst Academy alone she studied the arts, English literature, rhetoric, philosophy, Latin, French, German, history, geography, classics, and the Bible; she also received a firm grounding in the sciences, mathematics, geology, botany, natural history, physiology, and astronomy. At home the Dickinsons' large and varied library included books by Hawthorne, Emerson, Thoreau, Longfellow, Shakespeare, Keats, the Brownings, the Brontës, and George Eliot, along with Noah Webster's An American Dictionary of the English Language—which for Dickinson would prove one of the most important books of all—and a healthy dose of newspapers and romance

During her early twenties, Dickinson began to dress in white, to leave her house only on rare occasions, and to

restrict the circle of her acquaintances until it numbered just a few people.

Often speaking to visitors through a screen or from an adjoining room, she soon developed a reputation as a town eccentric. The young Mabel Loomis Todd, having recently moved to Amherst

with her husband, David, remarked in a letter to her parents about a strange

resident:

I must tell you about the *character* of Amherst. It is a lady whom all the people call the *Myth*. She is a sister of

Mr. Dickinson, & seems to be the climax of all the family oddity. She has not been outside her house in fifteen years, except once to see a new church, when she crept out at night, & viewed it by moonlight. No one who calls upon her mother & sister ever sees her, but she allows little children once in a great while, & one at a time, to come in, when she gives them cake or candy, or some nicety, for she is very fond of little ones. But more often she lets down the sweetmeat by a string, out of a window, to them. She dresses wholly in white, &

to them. She dresses wholly in white, & her mind is said to be perfectly wonderful. She writes finely, but no one *ever* sees her. Her sister... invited me to come & sing to her mother sometime....

People tell me the *myth* will hear every note—she will be near, but unseen.... Isn't that like a book? So interesting (Farr, Emily Dickinson: A Collection of Critical Essays, p. 20). One can hardly blame Todd for being fascinated by such an unusual "character." But unfortunately, the "myth" she takes such pleasure in describing influenced our later notions

of Dickinson much too heavily. Despite her seclusion, a large number of prominent figures came and went through her house. She also developed deep, though largely epistolary, friendships with several people: the clergyman Charles Wadsworth, whom she met in Bowles, editor of the Springfield *Republican*; and Judge Otis Phil lips Lord of Salem, Massachusetts.

During this time Dickinson also began to write poetry. On April 15, 1862, she read in the *Atlantic Monthly* a "Letter to

Philadelphia and described as her "dearest earthly friend"; Samuel

a Young Contributor," by Thomas Wentworth Higginson. In the letter Higginson, a man of letters, active abolitionist, and early supporter of women's rights offered advice to novice writers about finding an audience for their work. Dickinson sent him four poems, along with a letter inquiring "if my Verse is alive?" and telling

—and had you leisure to tell me, I should feel quick gratitude—" (Selected Letters, p. 171). Although Higginson may have been politically ahead of his time, his literary tastes were not quite as advanced; he suggested that Dickinson revise her unusual punctuation and

Higginson, "Should you feel it breathed

syntax. Still, their correspondence, which lasted until the last month of her life, seems to have gone a long way toward helping Dickinson feel part of a greater literary community. Dickinson experienced her most

tumultuous decade during the 1860s, when several events took their toll on

her: the outbreak of the Civil War, the

changed circumstances of several friends (Bowles was sick in Europe, Wadsworth moved to San Francisco, and Higginson served as an officer in the Union Army), and her own severe eye trouble in 1864 and 1865. After the late 1860s she never again left her home. In April 1862 she wrote mysteriously to Higginson, "I had a terror—since September—I could tell to none—and so I sing, as the Boy does by the Burying Ground—because I am afraid—" (Selected Letters, p. 172). These lines certainly confirm Dickinson's difficulties during this time, even though no one knows exactly what her "terror" was. This period, however, proved to be the most productive of Dickinson's life;

between 1860 and 1865 she wrote an average of three hundred poems each year.

Although Dickinson never married, her

passionate poems, as well as a series of letters that have come to be called "The Master Letters," suggest that she may have been deeply in love at least once; it remains in doubt whether the object of her affection was Charles Wadsworth,

Otis Lord, her sister-in-law Susan, or

indeed any real person.

The last years of Dickinson's life were sad ones, due to the numerous deaths she experienced. Her father died in 1874, Samuel Bowles in 1878, her nephew

Gilbert in 1883, and both Charles

April 1884 Otis Lord died, and Dickinson herself suffered the first attack of an illness that would prove fatal; she died on May 15, 1886.

Wadsworth and her mother in 1882. In

poems are quite short, and they consist of stanzas written in what is known as common measure, also called common meter: four iambic lines that alternate between four and three beats. They

With a few exceptions, Dickinson's

meter: four iambic lines that alternate between four and three beats. They recall the hymns that would have been intimately familiar to Dickinson from her childhood on. By far the most popular writer of these hymns was Isaac Watts, whose collections of hymns and other

would have encountered stanzas like this: Let dogs delight to bark and bite, For God hath made them so: Let bears and lions growl and fight, For 'tis their nature, too. But, children, you should never let Such angry passions rise;

Your little hands were never made

(from "Against Quarreling

and

To tear each other's eyes.

Fighting")

books could be found in every New England home. Opening Watts's *Divine Songs for Children* (1715), Dickinson

common measure is the hymn "Amazing Grace," which begins: "Amazing grace, how sweet the sound / That saved a wretch like me." But, although Dickinson's poems may superficially resemble sternly moralistic or sweetly consoling hymns, a closer look reveals that they are anything but:

The Soul's superior instants

Another perennially popular example of

The Soul's superior instants
Occur to Her alone,
When friend and earth's occasion
Have infinite withdrawn. (p. 275)
Faith is a fine invention
For gentlemen who see;
But microscopes are prudent
In an emergency! (p. 36)

with their preference for individuality over community, attention to detail over the "invention" of faith—how in Dickinson's crafty hands form is an occasion for cutting ironies, allowing her poems to enact an ongoing battle between received opinion and "superior instants." (The abrupt rhythm achieved by her characteristic use of dashes in place of expected punctuation also helps advance the battle; Dickinson's use of dashes may not always be evident in this edition, as discussed later in this essay.) Dickinson's idiosyncratic use of rhyme

adds even more tension to

Unfolding as predictably as a hymn, these two stanzas nevertheless show—

And then, excuse from pain;
And then, those little anodynes
That deaden suffering;
And then, to go to sleep;

This wrenching little poem attains much

The heart asks pleasure first,

And then, if it should be The will of its Inquisitor, The liberty to die. (p. 10)

deceptively hymn-like poems. "Tell all the Truth but tell it slant," she famously wrote (*The Complete Poems of Emily Dickinson*, edited by Thomas H. Johnson, poem 1129); and she practiced this wily doctrine in almost every poem:

don't allow the comfort that might come from exact rhymes and instead remind us of life's conflicts and near misses. Slant rhyme can also be a way to express the pleasure of messiness, the joy of not being able to "Tell all the Truth" once and for all: To tell the beauty would decrease, To state the Spell demean, There is a syllableless sea Of which it is the sign. (pp. 316-317) Appropriately for a poem about how not "telling beauty" only increases beauty's

strength, the near-rhymes "demean" and

of its power from Dickinson's use of "slant rhymes," or off-rhymes, like "pain-suffering" and "be-die," which

"syllableless" is a good example of Dickinson's fondness for making up new words when the old ones are not adequate to her needs.)

Dickinson is as ardent a revisionist of syntax as she is of form, as is evident in

"sign" mirror the inexactness that Dickinson applauds. (The coinage

the following single-stanza poem:

Adventure most unto itself
The Soul condemned to be;

Attended by a Single Hound— Its own Identity. (p. 264) Here, by reordering a statement that we might have expected to begin, "The Soul

is condemned," Dickinson can start her poem with her true subject: the terror

is] attended"), and by boldly capitalizing its final word, "Identity," she increases its starkness and strangeness. Isaac Watts would be appalled by such stylistic departures from tradition, but it is precisely these quirks that make Dickinson's poems so continually exciting.

and the necessity of the soul's "Adventure." Similarly, by stripping the poem of verbs ("[is] condemned," "[It

Her liberties extend even further. Rather than begin her poems with elaborate contexts or settings, Dickinson plunges us right away into the pulsing heart of things. Her poems often start with a bold proclamation or definition

```
that the rest of the poem explores:
"Hope is the thing with feathers / That
perches in the soul" (p. 22); "Heaven is
what I cannot reach!" (p. 53);
"Presentiment is that long shadow on the
lawn" (p. 124). Other poems lead us
straight into an extreme situation without
warning:
My life closed twice before its close;
It yet remains to see
If Immortality unveil
A third event to me. (p. 56)
I felt a cleavage in my mind
As if my brain had split;
I tried to match it, seam by seam,
But could not make them fit. (p. 61)
```

Wild nights! Wild nights! Were I with thee, Wild nights should be Our luxury! (p. 168) Her endings can be just as abrupt. Whether a poem takes the form of a riddle, proverb, or narrative—for her genres are just as varied as her use of common measure is uniform—it often ends with a terrifying lack of closure. Two of her most well-known poems make this clear. In "Because I could not stop for Death," the speaker rides with Death in most leisurely fashion past

children at play and the setting sun; but at the poem's end, time rushes suddenly forward, and the speaker looks back on the scene just described from the sudden vantage point of one who has been dead a long time: Since then 'tis centuries: but each

Since then 'tis centuries; but each
Feels shorter than the day
I first surmised the horses' heads
Were toward eternity. (p. 201)
In "I heard a fly buzz when I died,"

Dickinson again assumes the role of a dead person and imagines the "stillness" of the scene around her, then brings the poem to a crashing halt with the following lines, horrifying for their utter absence of comfort or conclusion: "And then the windows failed, and then / I

could not see to see" (p. 253).

an unstable thing, too. The majority of her poems feature an "I" who tells stories, describes nature, or dissects belief (142 of them even begin with "I"), and her use of first-person perspective is every bit as innovative as is her handling of form, language, and structure. Writing to Higginson in July 1862, Dickinson remarked, "When I state myself, as the Representative of the Verse—it does not mean—me—but a supposed person" (Selected Letters, p. 176). Thus, in the two poems described above, Dickinson's narrators are not actual people who lived and died in a specific time and place, but emblematic figures

Point of view in Dickinson's hands is

She also occasionally employs a "we" to narrate, as in the poem "Our journey had advanced" (p. 200).

Perhaps Dickinson's most radical

whose deaths might just as well be ours.

departures from convention occur in her use of paradox to unsettle our most firmly held opinions and beliefs. As the critic Alfred Kazin writes, "She unsettles, most obviously, by not being easily locatable" (Kazin, "Wrecked, Solitary, Here: Dickinson's Room of Her Own," p. 164). To enter Dickinson's world is to step into a scary but electrifying funhouse where paradoxes serve like distorting mirrors to show us new ways of seeing just

of presence; alone-ness is the greatest company. In several painful but illuminating poems, for example, she argues in favor of hunger and longing, maintaining that the lack that occasions desire makes the object of desire all the more precious: Success is counted sweetest By those who ne'er succeed. To comprehend a nectar Requires sorest need. (p. 6)

I taste a liquor never brewed,

about everything: love, death, solitude, the soul. Throughout her work, opposites change places: Distance is nearness in disguise; absence is the most vital form Yield such an alcohol! (p. 16) Delight becomes pictorial When viewed through pain,— More fair, because impossible That any gain. (pp. 29-30) Elsewhere Dickinson uses paradox to

From tankards scooped in pearl; Not all the vats upon the Rhine

destroy and reassemble our notions of other states of being, as when she writes, "Much madness is divinest sense / To a discerning eye" (p. 11), or asserts, "A death-blow is a life-blow to some" (p.

210), or describes just how deep still waters can run: The reticent volcano keeps

His never slumbering plan;

Confided are his projects pink To no precarious man. (p. 61)

But for all the paradoxes, a wonderfully direct and opinionated personality emerges from Dickinson's poems; the

we become with all her cranky, passionate likes and dislikes. Often she wears her disapproval on her sleeve, as in the following poem:

What soft, cherubic creatures

more of them we read, the more familiar

These gentlewomen are!
One would as soon assault a plush
Or violate a star.

Such dimity convictions,

A horror so refined Of freckled human nature, Of Deity ashamed,—

It's such a common glory,

Redemption, brittle lady,

A fisherman's degree!

Be so, ashamed of thee. (p. 72)
The poem's opening lines prepare us for a hymn of praise to these delicate ladies.

But Dickinson's descriptions are double-edged: "Soft" connotes flimsy as well as feminine, and even though "cherubic" likens the women to angels, it also reveals their infantile, diminutive status. As the poem goes on, Dickinson's

mocking scorn becomes more evident:

appreciate the rich complexity of "freckled human nature." As the poem reaches its close, Dickinson grows even harsher, calling the women "brittle" —a far cry from the first stanza's "soft"— and claiming that "Redemption" is "ashamed" of, and therefore unavailable to, these "creatures" in all their superficiality and passiveness.

Dickinson also disapproves of people

The women are compared to "plush"—
the filling of a sofa!—and their "star"like nature may make them celestial, but
it also puts them miserably out of touch
with the real world. Their beliefs are as
fragile as "dimity," a sheer cotton fabric;
they are so "refined" that they cannot

who are incapable of feeling or showing emotions:

A face devoid of love or grace,

A hateful, hard, successful face,

A face with which a stone
Would feel as thoroughly at ease
As were they old acquaintances,—
First time together thrown. (p. 58)
If soft flimsiness is a fault in the

previous poem, here it is stone-like hardness that Dickinson cannot abide; the face may be a conventionally "successful" one, but Dickinson is outraged by the idea that nothing deeper or richer lurks beneath it. Like the "gentlewomen" poem, with its

references to "assaulting" and

Dickinson's dislike: The last line conjures an almost wittily surreal image of the face and the stone being recklessly "thrown" at each other.

In two single-stanza poems, Dickinson

"violating," this poem contains hints of violence that reveal the depth of

expresses her strong distaste for still other personality types. She simply cannot understand how people can look at the world and not be fascinated by it: The Hills erect their purple heads,

Yet Man has not, of all the throng, A curiosity. (p. 287) She denounces people who don't know

The Rivers lean to see-

how to keep secrets:

Come not to play with me!
The Myrrhs and Mochas of the Mind
Are its Iniquity. (p. 311)

Candor, my tepid Friend,

Dickinson—who writes elsewhere in praise of indirection, claiming that "Success in Circuit lies" (Complete Poems, poem 1129)—directness creates

While many appreciate directness, for

a false sense of comfort, an overly perfumed "Myrrh" and a sickeningly sweet "Mocha."

In rich contrast to these poems, however, are moments in other poems

however, are moments in other poems when Dickinson lavishes praise on the types of people and behavior she does like. Pain, in her opinion, reveals

people's depths more than any intrusive "candor":

I like a look of agony

Because I know it's true; Men do not sham convulsion, Nor simulate a throe.

Peril as a possession

Impossible to feign
The beads upon the forehead
By homely anguish strung. (pp. 192-193)
Dickinson also heartily approves of
those who are willing to put themselves
in danger, since it puts them in touch
with their own deepest "creases":

The eyes glaze once, and that is death.

Danger disintegrates satiety;
There's Basis there
Begets an awe,
That searches Human Nature's creases

'T is good to bear,

As clean as Fire. (pp. 265-266)

She likes people who respect privacy:

The suburbs of a secret
A strategist should keep,
Better than on a dream intrude

To scrutinize the sleep. (pp. 271-272) And she is utterly smitten with the transporting power of books, a love she reveals in poem after poem:

There is no frigate like a book To take us lands away, Nor any coursers like a page Of prancing poetry.

This traverse may the poorest take Without oppress of toll; How frugal is the chariot That bears a human soul! (pp. 57-58)

Even though Dickinson is one of the most difficult poets to interpret, she is also, as these poems reveal, one of the most refreshingly straightforward.

In Dickinson's work, apparent opposites—hunger and fulfillment, the self and God, death and life—turn out to have more in common than we'd thought. In her more explicitly religious poems,

Christian beliefs in order to create her own homespun theology. Despite her revisionary zeal, Dickinson never completely abandons her faith in God: "I know that he exists," she writes, "Somewhere, in silence" (p. 49). Rather, she is determined to explore new forms that God's "existence" might take. She is achingly up-front about her desire to know what God is really like: The Look of Thee, what is it like? Hast thou a hand or foot, Or mansion of Identity, And what is thy Pursuit? (p. 303) But she also admits the possibility that we have invented the concept of life

she violently overturns traditional

Immortal is an ample word
When what we need is by,
But when it leaves us for a time,
'T is a necessity. (p. 241)

after death:

She is capable of considerable anger about the rift between humans and God: Is Heaven a physician?

They say that He can heal;

But medicine posthumous Is unavailable. (p. 30) Still, faced with this "unavailable" comfort, Dickinson responds not by giving up faith, but rather by constructing

new versions of it. In several poems she asserts that the self's depths bring us as

close to God as we can hope to come, and allow us a glimpse of what she calls "Finite Infinity" (p. 272): To be alive is power, Existence in itself,

Omnipotence enough. (pp. 266-267) Other poems locate divinity in nature:

Without a further function,

The color on the cruising cloud,

The interdicted ground, Behind the hill, the house behind,— There Paradise is found! (p. 53)

In the name of the bee And of the butterfly

And of the breeze, amen! (p. 110)

the traditional image of a distant, allpowerful God with a local divinity residing right by her side. Although "Some keep the Sabbath going to church," she writes, "I keep it staying at home.... / So instead of getting to heaven at last, / I'm going all along!" (p. 116). Dickinson never becomes complacent she remains one of the greatest poets of loss—but she does find great solace in her bravely domestic cosmology:

Whether looking inward or out her window, Dickinson radically replaces

Will fail of it above. God's residence is next to mine, His furniture is love. (p. 58).

Who has not found the heaven below

death-some of which happen to be among her most famous—Dickinson has been unfairly labeled a morbid poet. In fact, her interest in death makes perfect sense for a number of reasons. For one thing, Dickinson's subject matter is so varied that it would be stranger if she didn't write about death. Furthermore, as her biographer Cynthia Griffin Wolff has pointed out, Dickinson grew up in a culture highly preoccupied with death. Nineteenth-century children were taught to read with the New England Primer, which contained prayers that, as Wolff writes, "served to initiate even the youngest into an acknowledgment of

Because of her many poems about

death" (Wolff, Emily Dickinson, p. 69). Deaths from childbirth were extraordinarily common; New England grave-stones frequently represented death with vivid and memorable icons; and deathbed vigils—so eerily described in "I heard a fly buzz" (p. 252)—were practically social events. Not surprisingly, this cultural saturation influenced Dickinson's poetry. This does not make her morbid; it merely shows how she transformed cultural preoccupations into poetic concerns. If Dickinson is obsessed with death, she is also capable of writing the most lifeaffirming of poems, as the following poem not included in this edition demonstrates:

The men that daily live
Would stand so deep in joy
That it would clog the cogs
Of that revolving reason
Whose esoteric belt
Protects our sanity. (Complete Poems, poem 1717)

Here adding her breaing contribution to

Did life's penurious length

Italicize its sweetness,

Here, adding her bracing contribution to the *carpe diem* genre, Dickinson argues that an awareness of death can fill us with an intoxicating, almost crazy joy in being alive. It is one of the least morbid poems ever written.

could fill its own volume. Only seven of her poems were published in her lifetime, five of them in the Springfield Republican. But after her death, her sister Lavinia discovered almost two thousand poems in her desk drawer, many written on scraps of paper or the back of grocery lists, others bound into what were later called "fascicles," or sewn paper booklets. Lavinia resolved to see them into print. Soon she had persuaded Mabel Loomis Todd and Thomas Higginson to help her edit the poems, and the three of them approached Robert Brothers, a publishing house in

The long, involved story of the posthumous fate of Dickinson's poems

Boston. The first volume of *Poems* appeared in 1890 and became a bestseller. Already, however, the long history of modifying Dickinson's poems had begun, with some of her best and strangest lines omitted or changed, sentimental titles attached, rhymes regularized, and syntax standardized. Later editions, including The Single Hound: Poems of a Lifetime (1914), edited by Dickinson's niece Martha Dickinson Bianchi, also distorted the poems. In her acute short poem "Emily Dickinson," the contemporary British poet Wendy Cope wryly comments on this unfortunate trend: Higgledy-piggledy

Liked to use dashes Instead of full stops.

Nowadays, faced with such

**Emily Dickinson** 

Idiosyncrasy,

Critics and editors
Send for the cops.
(Cope, Making Cocoa for Kingsley
Amis, p. 23)

Finally, in 1955, Thomas H. Johnson's *The Poems of Emily Dickinson* offered readers access to all of Dickinson's poems, arranged in estimated chronological order and with her

idiosyncrasies—slant rhymes, dashes, capitals—intact. Johnson's restored text

follies of earlier editors. (To take just one example, Todd and Higginson had changed "Because I could not stop for Death" (p. 200) so that the line "Cornice—in the Ground" read "The cornice but a mound," thereby reducing an eerily sinking grave to a simple pile of dirt.)

went a long way toward undoing the

For a long while (until the publication in 1999 of an edition of the poems by R. W. Franklin), most readers, scholars, and teachers regarded Johnson's edition as the authoritative one. But for some, it did not go far enough. The critics Sharon Cameron and Susan Howe, for example, argue that the variant words Dickinson often included at the bottom of a

manuscript page should be read as essential parts of the poems; among Dickinson's myriad innovations, they claim, is a new approach to poetics in which writers and readers need not always choose one word and meanings can proliferate in fruitful mayhem. (Cameron, Choosing Not Choosing: Dickinson's Fascicles, and Howe, My Emily Dickinson). Others have complained that the fascicles should be treated as separate volumes; or that Johnson's division of most of the poems into quatrains is too sweeping and Dickinson's stanza divisions are more varied than he allowed. In the original manuscript, for example, the first words of the poem "A Narrow Fellow in the

the left margin; Johnson argues that this was due to lack of writing space, but others suggest a more deliberate experimentation with line breaks on

It should be noted that this edition

Dickinson's part.

Grass" (p. 96) are on two lines, with "the Grass" set as a separate line against

arranges Dickinson's poems by theme, and regularizes her punctuation and capitalization; readers eager for a version of the poems closer to the manuscripts should seek out Johnson's edition, as well as the stimulating criticism of Cameron, Howe, and others.

In a poem not included in this edition, Dickinson wrote about the posthumous The Poets light but Lamps—
Themselves—go out—

fate of poets:

The wicks they stimulate—
If vital Light

Inhere as do the SunsEach Age a Lens
Disseminating their
Circumference—(Complete Poems, poem 883)

Crudely paraphrased, the poem asserts that after poets die, they are interpreted—if they are "vital" enough—in different ways by different people. This has certainly been the case with

Dickinson, who has influenced later writers in an astonishing variety of ways.

Hart Crane's sonnet "To Emily Dickinson," though it overlooks her wit

and range, tenderly invokes a "sweet, dead Silencer":
You who desired so much—in vain to

ask-Yet fed your hunger like an endless task, Dared dignify the labor, bless the quest

Achieved that stillness ultimately best. (Crane, *The Poems of Hart Crane*, p.

Here and elsewhere, Crane's obsessive use of dashes shows that Dickinson's

Archibald MacLeish claimed, somewhat condescendingly, "Most of us are half in love with this girl" (in Bogan, *Emily Dickinson:* Three Views, p. 20). William Carlos Williams remarked in an interview,

ghost was never far from his side.

She was an independent spirit... She did her best to get away from too strict an interpretation. And she didn't want to be confirmed to rhyme or reason.... And she

followed the American idiom.... She

was a wild girl. She chafed against restraint. But she speaks the spoken language, the idiom, which would be deformed by Oxford English.... She was a real good guy (Williams, *Poets at* 

Work: The Paris Review Interviews, p. 169). Elizabeth Bishop, though she admitted

that "I still hate the oh the-pain-of-it-all poems," noted, "I admire many others" (Kalstone, *Becoming a Poet*, p. 132).

Confessional poetry, with its harsh

excavations of the self's deepest places,

would not be as rich without Dickinson's example. Robert Frost, though seldom classed as a confessional poet, wrote several poems in which exploration of his "Desert Places" leads him to a terrifying inner antagonist, a "blanker whiteness" (Frost, *The Poetry of Robert Frost*, p. 296) that recalls both Dickinson's customary dress color and

Finding depths within oneself, of course, can be cause for celebration as well as fear, a fact of which Wallace Stevens seems acutely aware in these lines from "Tea at the Palaz of Hoon": Out of my mind the golden ointment rained, And my ears made the blowing hymns they heard. I was myself the compass of that sea: I was the world in which I walked, and

Or heard or felt came not but from

what I saw

her observations: "Pain has an element of blank" (p. 16) and "One need not be a chamber to be haunted" (p. 224).

myself; And there I found myself more truly and more strange. (Stevens, *The Collected Poems*, p. 65)

Here, as often happens in Dickinson's work, the human and the divine change places, and the mind's capacity is found

to be equal or superior to God's. Several later poets, like Dickinson before them, make death a character:

Anne Sexton titled one of her poems "For Mr. Death Who Stands with His Door Open," and Sylvia Plath's "Death & Co." personifies not one but two

Deaths. (There are also numerous moments in the work of both poets when they imagine their own deaths.) And the mystique in "Taking Off Emily Dickinson's Clothes," describing how I could plainly hear her inhale when I undid the very top hook-and-eye fastener of her corset

popular poet Billy Collins cheerfully profanes Dickinson's woman-in-white

and I could hear her sigh when finally it was unloosed, the way some readers sigh when they realize that Hope has feathers,

that looks right at you with a yellow eye. (Collins, *Picnic*, *Lightning*, p. 75)

that reason is a plank, that life is a loaded gun Adrienne Rich, in several striking poems, presents a feisty and determined Dickinson. In the fourth section of "Snapshots of a Daughter-in-Law," she portrays her

Reading while waiting

bird,

for the iron to heat, writing, My Life had stood—a Loaded Gun— in that Amherst pantry while the jellies boil and scum, or, more often,

dusting everything on the whatnot every day of life. (Rich, *The Fact of a Doorframe*, p. 18)

iron-eyed and beaked and purposed as a

angrily describes the Emily Dickinson Industry's invasion of her home:
In Emily Dickinson's house in Amherst cocktails are served the scholars

gather in celebration

And in "The Spirit of Place," Rich

their pious or clinical legends festoon the walls like imitations of period patterns.
(Rich, *The Fact of a Doorframe*, p. 184)
But despite "The remnants pawed the relics / the cult assembled in the bedroom," the scholars do not get the

last word, for "you whose teeth were set on edge by churches / resist your shrine / escape." Rich vows that her relationship to Dickinson will be a very different one (Rich, *The Fact of a Doorframe*, pp. 184-185).

Dickinson's widespread influence can perhaps best be seen in poets who are in most ways nothing like her. e.e. cummings, as formally explosive as

Dickinson was—at least superficially—conservative, begins one poem in this

way:

in which "with the hands of a daughter I would cover you / from all intrusion even my own / saying rest to your ghost"

my father moved through dooms of love through sames of am through haves of give, singing each morning out of each night my father moved through depths of height (e.e. cummings: Complete Poems 1904-1962, p. 520)
cummings's "dooms of love," "sames of am," and "haves of give" recall

Dickinson's peculiar use of the genitive case in a poem in which she describes heaven as "The House of Supposition" that "Skirts the Acres of Perhaps" (*Complete Poems*, poem 696). In

addition, the paradoxes of the third and

fourth lines of cummings's stanza—"each morning out of each night" and "depths of height"—resemble Dickinson's characteristic trait, discussed earlier, of translating big into small, life into death, and—in the case of poem 696, riches into poverty: "The

Wealth I had—contented me—/ If 'twas a meaner size—".

Dickinson has even made her way into

fiction. Judith Farr's 1996 novel I Never

Came to You in White offers a fictionalized biography of Dickinson. And in A. S. Byatt's 1990 novel *Possession: A Romance—a* double love story in which two modern academics investigate the secret love affair of two Victorian poets, Randolph Henry Ash and Christabel LaMotte—Dickinson is the model for the female heroine. At the beginning of the novel, Byatt provides a list of some of the more silly-sounding articles critics have written about her heroine:

They wrote on "Arachne's Broken Woof: Art as Discarded Spinning in the Poems of LaMotte." Or "Melusina and the Daemonic Double: Good Mother, Bad Serpent." "A Docile Rage: Christabel LaMotte's Ambivalent Domesticity" (Byatt, Possession: A Romance, p. 43). But before long, these limited views of LaMotte give way to a much more rich and complex one, mostly because Byatt lets the poet speak for her eccentric, resourceful self, as in this letter: I have chosen a Way—dear Friend—I must hold to it. Think of me if you will as the Lady of Shalott—with a Narrower

Wisdom—who chooses not the Gulp of

deathwards—but who chooses to watch diligently the bright colours of her Web —to ply an industrious shuttle—to make —something—to close the Shutters and the Peephole too—(Byatt, p. 205). Dickinson's influence can be felt everywhere. Writers are in her thrall; every year the Poetry Society of America offers an award "for a poem inspired by Dickinson"; the 2002 Modern Language Association featured several panels on her work; she even has her own International Society. As Dickinson herself predicted, her light may have gone out, but the lenses of later

ages keep reflecting and refracting it in

Outside Air and the chilly river-journey

ways. The intense eyes of the young woman in the photograph will keep peering into ours for a very long time.

Rachel Wetzsteon received her

all sorts of inventive and unexpected

doctorate in English from Columbia University in 1999 and is Assistant Professor of English at William Paterson University. She has published two books of poems, *The Other Stars* and *Home and Away*, and has received various awards for her poetry. She currently

lives in New York City.

## **PART ONE**

#### *LIFE*

THIS is my letter to the world, That never wrote to me,— The simple news that Nature told, With tender majesty.

Her message is committed
To hands I cannot see;
For love of her, sweet countrymen,
Judge tenderly of me!

# I

SUCCESS is counted sweetest By those who ne'er succeed. To comprehend a nectar Requires sorest need.

Not one of all the purple host Who took the flag to-day Can tell the definition, So clear, of victory,

As he, defeated, dying, On whose forbidden ear The distant strains of triumph



## II

OUR share of night to bear, Our share of morning, Our blank in bliss to fill, Our blank in scorning.

Here a star, and there a star, Some lose their way. Here a mist, and there a mist, Afterwards—day!

# III

SOUL, wilt thou toss again? By just such a hazard Hundreds have lost, indeed, But tens have won an all.

Angels' breathless ballot Lingers to record thee; Imps in eager caucus Raffle for my soul.

## IV

'T is so much joy! 'T is so much joy! If I should fail, what poverty! And yet, as poor as I Have ventured all upon a throw; Have gained! Yes! Hesitated so This side the victory!

Life is but life, and death but death!
Bliss is but bliss, and breath but breath!
And if, indeed, I fail,
At least to know the worst is sweet.
Defeat means nothing but defeat,
No drearier can prevail!

And if I gain,—oh, gun at sea,
Oh, bells that in the steeples be,
At first repeat it slow!
For heaven is a different thing
Conjectured, and waked sudden in,
And might o'erwhelm me so!

#### V

GLEE! the great storm is over! Four have recovered the land; Forty gone down together Into the boiling sand.

Ring, for the scant salvation!

Toll, for the bonnie souls,—
Neighbor and friend and bridegroom,
Spinning upon the shoals!
How they will tell the shipwreck
When winter shakes the door,
Till the children ask, "But the forty?
Did they come back no more?"

Then a silence suffuses the story, And a softness the teller's eye; And the children no further question, And only the waves reply.

#### VI

IF I can stop one heart from breaking, I shall not live in vain;
If I can ease one life the aching,
Or cool one pain,
Or help one fainting robin
Unto his nest again,
I shall not live in vain.

#### VII

WITHIN my reach!
I could have touched!
I might have chanced that way!
Soft sauntered through the village,
Sauntered as soft away!
So unsuspected violets
Within the fields lie low,
Too late for striving fingers
That passed, an hour ago.

# VIII

A wounded deer leaps highest, I've heard the hunter tell; 'T is but the ecstasy of death, And then the brake<sup>2</sup> is still.

The smitten rock that gushes,
The trampled steel that springs:
A cheek is always redder
Just where the hectic<sup>3</sup> stings!

Mirth is the mail of anguish, In which it caution arm, Lest anybody spy the blood



## IX

THE heart asks pleasure first,
And then, excuse from pain;
And then, those little anodynes<sup>4</sup>
That deaden suffering;
And then, to go to sleep;
And then, if it should be

The will of its Inquisitor,

The liberty to die.

## X

A precious, mouldering pleasure 't is To meet an antique book, In just the dress his century wore; A privilege, I think,

His venerable hand to take, And warming in our own, A passage back, or two, to make To times when he was young.

His quaint opinions to inspect, His knowledge to unfold On what concerns our mutual mind,

What interested scholars most,

The literature of old;

What competitions ran
When Plato was a certainty,
And Sophocles a man;

When Sappho<sup>5</sup> was a living girl, And Beatrice<sup>6</sup> wore The gown that Dante deified. Facts, centuries before,

He traverses familiar,
As one should come to town
And tell you all your dreams were true:

He lived where dreams were born.

His presence is enchantment, You beg him not to go; Old volumes shake their vellum<sup>7</sup> heads And tantalize, just so.

## XI

MUCH madness is divinest sense
To a discerning eye;
Much sense the starkest madness.
'T is the majority
In this, as all, prevails.
Assent, and you are sane;
Demur,—you're straightway dangerous,

And handled with a chain

## XII

I asked no other thing,
No other was denied.
I offered Being for it;
The mighty merchant smiled.

Brazil? He twirled a button, Without a glance my way: "But, madam, is there nothing else That we can show to-day?"

# XIII

THE soul selects her own society,
Then shuts the door;
On her divine majority
Obtrude no more.

Unmoved, she notes the chariot's pausing
At her low gate;
Unmoved, an emperor is kneeling
Upon her mat.

I've known her from an ample nation Choose one;

# Then close the valves of her attention Like stone.

## XIV

SOME things that fly there be,— Birds, hours, the bumble-bee: Of these no elegy.

Some things that stay there be,—Grief, hills, eternity:
Nor this behoovet<sup>8</sup> me.

There are, that resting, rise. Can I expound the skies? How still the riddle lies!

## XV

I know some lonely houses off the road A robber'd like the look of,— Wooden barred, And windows hanging low, Inviting to A portico,

Where two could creep:
One hand the tools,
The other peep
To make sure all's asleep.
Old-fashioned eyes,
Not easy to surprise!

How orderly the kitchen'd look by night, With just a clock,—

But they could gag the tick, And mice won't bark; And so the walls don't tell, None will.

A pair of spectacles ajar just stir—

An almanac's aware.

Was it the mat winked, Or a nervous star?

The moon slides down the stair

The moon slides down the stair To see who's there.

Tankard, or spoon,
Earring, or stone,
A watch, some ancient brooch
To match the grandmamma,
Staid sleeping there.

Day rattles, too,
Stealth's slow;
The sun has got as far
As the third sycamore.
Screams chanticleer,
†

"Who's there?"

There's plunder,—where?

And echoes, trains away, Sneer—"Where?"

# While the old couple, just astir, Think that the sunrise left the door ajar!

## XVI

TO fight aloud is very brave, But gallanter, I know, Who charge within the bosom, The cavalry of woe.

Who win, and nations do not see, Who fall, and none observe, Whose dying eyes no country Regards with patriot love.

We trust, in plumed procession, For such the angels go, Rank after rank, with even feet



## XVII

WHEN night is almost done, And sunrise grows so near That we can touch the spaces, It's time to smooth the hair

And get the dimples ready, And wonder we could care For that old faded midnight That frightened but an hour.

# XVIII

READ, sweet, how others strove,
Till we are stouter;
What they renounced,
Till we are less afraid;
How many times they bore
The faithful witness,
Till we are helped,
As if a kingdom cared!

As if a kingdom cared! Read then of faith That shone above the fagot; 10 Clear strains of hymn The river could not drown; Brave names of men And celestial women, Passed out of record



## XIX

PAIN has an element of blank; It cannot recollect When it began, or if there were A day when it was not.

It has no future but itself, Its infinite realms contain Its past, enlightened to perceive New periods of pain.

# XX

I taste a liquor never brewed, From tankards scooped in pearl; Not all the vats upon the Rhine Yield such an alcohol!

Inebriate of air am I, And debauchee of dew, Reeling, through endless summer days, From inns of molten blue.

When landlords turn the drunken bee Out of the foxglove's 11 door, When butterflies renounce their drams, 12 I shall but drink the more!

Till seraphs<sup>13</sup> swing their snowy hats, And saints to windows run, To see the little tippler Leaning against the sun!

#### XXI

HE ate and drank the precious words,
His spirit grew robust;
He knew no more that he was poor,
Nor that his frame was dust.
He danced along the dingy days,
And this bequest of wings
Was but a book. What liberty
A loosened spirit brings!

## XXII

I had no time to hate, because The grave would hinder me, And life was not so ample I Could finish enmity.

Nor had I time to love; but since Some industry must be, The little toil of love, I thought, Was large enough for me.

## XXIII

'T was such a little, little boat That toddled down the bay! 'T was such a gallant, gallant sea That beckoned it away!

'T was such a greedy, greedy wave That licked it from the coast: Nor ever guessed the stately sails My little craft was lost!

# XXIV

WHETHER my bark<sup>14</sup> went down at sea,

Whether she met with gales, Whether to isles enchanted She bent her docile sails;

By what mystic mooring
She is held to-day,—
This is the errand of the eye
Out upon the bay.

## XXV

BELSHAZZAR<sup>15</sup> had a letter,—
He never had but one;
Belshazzar's correspondent
Concluded and begun
In that immortal copy
The conscience of us all
Can read without its glasses
On revelation's wall.

## XXVI

THE brain within its groove
Runs evenly and true;
But let a splinter swerve,
'T were easier for you
To put the water back
When floods have slit the hills,
And scooped a turnpike for themselves,
And blotted out the mills!

## XXVII

I'M nobody! Who are you? Are you nobody, too?

Then there's a pair of us—don't tell!

They'd banish us, you know.

How dreary to be somebody!

How public, like a frog

To tell your name the livelong day

To an admiring bog!

## XXVIII

I bring an unaccustomed wine To lips long parching, next to mine, And summon them to drink.

Crackling with fever, they essay; 16
I turn my brimming eyes away,
And come next hour to look.

The hands still hug the tardy glass; The lips I would have cooled, alas! Are so superfluous cold, I would as soon attempt to warm
The bosoms where the frost has lain
Ages beneath the mould.

Some other thirsty there may be To whom this would have pointed me Had it remained to speak.

And so I always bear the cup If, haply, mine may be the drop Some pilgrim thirst to slake,—

If, haply, any say to me, "Unto the little, unto me," 17 When I at last awake.

## XXIX

THE nearest dream recedes, unrealized. The heaven we chase Like the June bee Before the school-boy Invites the race; Stoops to an easy clover— Dips—evades—teases—deploys; Then to the royal clouds Lifts his light pinnace 18 Heedless of the boy Staring, bewildered, at the mocking sky.

Homesick for steadfast honey, Ah! the bee flies not



## XXX

WE play at paste, Till qualified for pearl, Then drop the paste, And deem ourself a fool.

The shapes, though, were similar, And our new hands Learned gem-tactics Practising sands.

## XXXI

I found the phrase to every thought I ever had, but one;
And that defies me,—as a hand
Did try to chalk the sun

To races nurtured in the dark;—How would your own begin?
Can blaze be done in cochineal,
Or noon in mazarin?

## XXXII

HOPE is the thing with feathers That perches in the soul, And sings the tune without the words, And never stops at all,

And sweetest in the gale is heard; And sore must be the storm That could abash the little bird That kept so many warm.

I've heard it in the chillest land, And on the strangest sea; Yet, never, in extremity, It asked a crumb of me.

## XXXIII

DARE you see a soul at the white heat? Then crouch within the door. Red is the fire's common tint; But when the vivid ore

Has sated flame's conditions, Its quivering substance plays Without a color but the light Of unanointed blaze.

Least village boasts its blacksmith, Whose anvil's even din Stands symbol for the finer forge That soundless tugs within,

Refining these impatient ores With hammer and with blaze, Until the designated light Repudiate the forge.

# XXXIV

WHO never lost, are unprepared A coronet to find;
Who never thirsted, flagons<sup>20</sup>
And cooling tamarind.<sup>21</sup>

Who never climbed the weary league-Can such a foot explore The purple territories On Pizarro's 22 shore?

How many legions overcome? The emperor will say. How many colors taken

# On Revolution Day?

How many bullets bearest? The royal scar hast thou? Angels, write "Promoted" On this soldier's brow!

# XXXV

I can wade grief, Whole pools of it,— I'm used to that. But the least push of joy Breaks up my feet, And I tip—drunken. Let no pebble smile, "T was the new liquor,— That was all! Power is only pain, Stranded, through discipline, Till weights will hang. Give balm to giants, And they'll wilt, like men. Give Himmaleh,— $\frac{23}{2}$ 



## XXXVI

I never hear the word "escape" Without a quicker blood, A sudden expectation, A flying attitude.

I never hear of prisons broad By soldiers battered down, But I tug childish at my bars,— Only to fail again!

#### XXXVII

FOR each ecstatic instant
We must an anguish pay
In keen and quivering ratio
To the ecstasy.

For each beloved hour Sharp pittances of years, Bitter contested farthings<sup>24</sup> And coffers heaped with tears.

# XXXVIII

THROUGH the straight pass of suffering The martyrs even trod, Their feet upon temptation, Their faces upon God.

A stately, shriven company; Convulsion playing round, Harmless as streaks of meteor Upon a planet's bound.

Their faith the everlasting troth;<sup>25</sup>
Their expectation fair;
The needle to the north degree



## XXXIX

I meant to have but modest needs, Such as content, and heaven; Within my income these could lie, And life and I keep even.

But since the last included both, It would suffice my prayer
But just for one to stipulate,
And grace would grant the pair.

And so, upon this wise I prayed,— Great Spirit, give to me A heaven not so large as yours, But large enough for me.

A smile suffused Jehovah's 26 face; The cherubim withdrew; Grave saints stole out to look at me, And showed their dimples, too.

I left the place with all my might,— My prayer away I threw; The quiet ages picked it up, And Judgment twinkled, too,

As take the tale for true
That "Whatsoever you shall ask,

That one so honest be extant

Itself be given you."

But I, grown shrewder, scan the skies With a suspicious air,—
As children, swindled for the first,
All swindlers be, infer.

#### XL

THE thought beneath so slight a film Is more distinctly seen,—
As laces just reveal the surge,
Or mists the Apennine. 28

#### XLI

THE soul unto itself
Is an imperial friend,—
Or the most agonizing spy
An enemy could send.

Secure against its own, No treason it can fear; Itself its sovereign, of itself The soul should stand in awe.

#### XLII

SURGEONS must be very careful When they take the knife!
Underneath their fine incisions
Stirs the culprit,—Life!

#### XLIII

I like to see it lap the miles, And lick the valleys up, And stop to feed itself at tanks; And then, prodigious, step Around a pile of mountains, And, supercilious, peer In shanties by the sides of roads; And then a quarry pare To fit its sides, and crawl between, Complaining all the while In horrid, hooting stanza; Then chase itself down hill

And neigh like Boanerges;<sup>29</sup>
Then, punctual as a star,
Stop—docile and omnipotent—
At its own stable door.

#### **XLIV**

THE show is not the show,

But they that go.

Menagerie to me

My neighbor be.

Fair play-

Both went to see.

#### XLV

DELIGHT becomes pictorial When viewed through pain,—
More fair, because impossible That any gain.

The mountain at a given distance In amber lies;

Approached, the amber flits a little,—And that's the skies!

#### **XLVI**

A thought went up my mind to-day That I have had before, But did not finish,—some way back, I could not fix the year,

Nor where it went, nor why it came The second time to me, Nor definitely what it was, Have I the art to say.

But somewhere in my soul, I know I've met the thing before; It just reminded me—'t was all—



#### **XLVII**

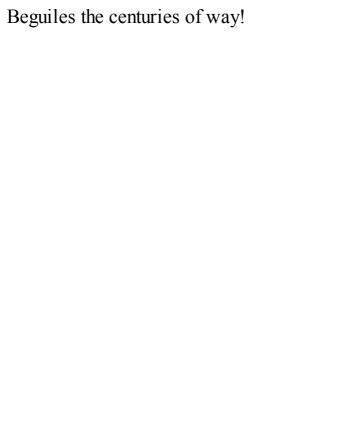
Is Heaven a physician? They say that He can heal; But medicine posthumous Is unavailable.

Is Heaven an exchequer?<sup>30</sup>
They speak of what we owe;
But that negotiation
I'm not a party to.

# **XLVIII**

THOUGH I get home how late, how late!
So I get home, 't will compensate.
Better will be the ecstasy
That they have done expecting me,
When, night descending, dumb and dark,
They hear my unexpected knock.
Transporting must the moment be,
Brewed from decades of agony!

To think just how the fire will burn, Just how long-cheated eyes will turn To wonder what myself will say, And what itself will say to me,



### **XLIX**

A poor torn heart, a tattered heart, That sat it down to rest, Nor noticed that the ebbing day Flowed silver to the west, Nor noticed night did soft descend Nor constellation burn, Intent upon the vision Of latitudes unknown.

The angels, happening that way,
This dusty heart espied;
Tenderly took it up from toil
And carried it to God.
There,—sandals for the barefoot;

There,—gathered from the gales, Do the blue havens by the hand Lead the wandering sails.

### L

I should have been too glad, I see,
Too lifted for the scant degree
Of life's penurious round;
My little circuit would have shamed
This new circumference, have blamed
The homelier time behind.

I should have been too saved, I see, Too rescued; fear too dim to me That I could spell the prayer I knew so perfect yesterday,—
That scalding one, "Sabachthani," 31
Recited fluent here.

Earth would have been too much, I see, And heaven not enough for me; I should have had the joy Without the fear to justify,—
The palm without the Calvary; 32
So, Saviour, crucify.

Defeat whets victory, they say; The reefs in old Gethsemane<sup>33</sup> Endear the shore beyond.

'T is beggars banquets best define;
'T is thirsting vitalizes wine,—

Faith faints to understand.

# $\mathbf{L}$

IT tossed and tossed,—
A little brig<sup>34</sup> I knew,—
O'ertook by blast,
It spun and spun,
And groped delirious, for morn.

It slipped and slipped,
As one that drunken stepped;
Its white foot tripped,
Then dropped from sight.

Ah, brig, good-night To crew and you;

The ocean's heart too smooth, too blue, To break for you.

### LII

VICTORY comes late, And is held low to freezing lips Too rapt with frost To take it. How sweet it would have tasted, Just a drop! Was God so economical? His table's spread too high for us Unless we dine on tip-toe. Crumbs fit such little mouths, Cherries suit robins: The eagle's golden breakfast Strangles them. God keeps his oath to sparrows, Who of little love



## LIII

GOD gave a loaf to every bird,
But just a crumb to me;
I dare not eat it, though I starve,—
My poignant luxury
To own it, touch it, prove the feat
That made the pellet mine,—
Too happy in my sparrow chance
For ampler coveting.

It might be famine all around, I could not miss an ear, Such plenty smiles upon my board, My garner<sup>35</sup> shows so fair.

I wonder how the rich may feel,—

An Indiaman—an Earl?

I deem that I with but a crumb



# LIV

EXPERIMENT to me Is every one I meet. If it contain a kernel? The figure of a nut

Presents upon a tree, Equally plausibly; But meat within is requisite, To squirrels and to me.

#### LV

MY country need not change her gown, Her triple suit as sweet
As when 't was cut at Lexington, 36
And first pronounced "a fit."
Great Britain disapproves "the stars";
Disparagement discreet,—
There's something in their attitude
That taunts her bayonet.

#### LVI

FAITH is a fine invention For gentlemen who see; But microscopes are prudent In an emergency!

# LVII

EXCEPT the heaven had come so near, So seemed to choose my door, The distance would not haunt me so; I had not hoped before.

But just to hear the grace depart I never thought to see,
Afflicts me with a double loss;
'T is lost, and lost to me.

#### LVIII

PORTRAITS are to daily faces As an evening west To a fine, pedantic sunshine In a satin vest.

#### LIX

I took my power in my hand And went against the world; 'T was not so much as David<sup>37</sup> had, But I was twice as bold.

I aimed my pebble, but myself Was all the one that fell. Was it Goliath was too large, Or only I too small?

# LX

A shady friend for torrid days Is easier to find Than one of higher temperature For frigid hour of mind.

The vane a little to the east Scares muslin souls away; If broadcloth breasts are firmer Than those of organdy, 38

Who is to blame? The weaver? Ah! the bewildering thread! The tapestries of paradise So notelessly are made!

# LX]

EACH life converges to some centre Expressed or still; Exists in every human nature A goal,

Admitted scarcely to itself, it may be, Too fair For credibility's temerity To dare.

Adored with caution, as a brittle heaven, To reach Were hopeless as the rainbow's raiment<sup>39</sup> To touch,

Again.

Yet persevered toward, surer for the distance;
How high
Unto the saints' slow diligence
The sky!

Ungained, it may be, by a life's low venture,
But then,
Eternity enables the endeavoring

# LXII

BEFORE I got my eye put out, I liked as well to see As other creatures that have eyes, And know no other way.

But were it told to me, to-day, That I might have the sky For mine, I tell you that my heart Would split, for size of me.

The meadows mine, the mountains mine,

All forests, stintless 40 stars,

As much of noon as I could take Between my finite eyes.

The motions of the dipping birds,
The lightning's jointed road,
For mine to look at when I liked,—
The news would strike me dead!

So, safer, guess, with just my soul Upon the window-pane Where other creatures put their eyes, Incautious of the sun.

#### LXIII

TALK with prudence to a beggar Of "Potosi" and the mines!
Reverently to the hungry
Of your viands 42 and your wines!

Cautious, hint to any captive You have passed enfranchised feet! Anecdotes of air in dungeons Have sometimes proved deadly sweet!

# LXIV

HE preached upon "breadth" till it argued him narrow,—
The broad are too broad to define;

And of "truth" until it proclaimed him a liar,—
The truth never flaunted a sign.

Simplicity fled from his counterfeit presence
As gold the pyrites 43 would shun.
What confusion would cover the innocent Jesus

To meet so enabled a man!

# LXV

GOOD night! which put the candle out? A jealous zephyr, 44 not a doubt. Ah! friend, you little knew How long at that celestial wick The angels labored diligent; Extinguished, now, for you!

It might have been the lighthouse spark Some sailor, rowing in the dark, Had importuned to see! It might have been the waning lamp That lit the drummer from the camp To purer reveille!

#### **LXVI**

WHEN I hoped I feared, Since I hoped I dared; Everywhere alone As a church remain; Spectre cannot harm, Serpent cannot charm; He deposes doom, Who hath suffered him.

# LXVII

A deed knocks first at thought, And then it knocks at will. That is the manufacturing spot, And will at home and well.

It then goes out an act, Or is entombed so still That only to the ear of God Its doom is audible.

# LXVIII

MINE enemy is growing old,—
I have at last revenge.
The palate of the hate departs;
If any would avenge,—

Let him be quick, the viand flits, It is a faded meat.

Anger as soon as fed is dead; 'T is starving makes it fat.

# LXIX

REMORSE is memory awake,
Her companies astir,—
A presence of departed acts
At window and at door.

Its past set down before the soul, And lighted with a match, Perusal to facilitate Of its condensed despatch.

Remorse is cureless,—the disease Not even God can heal;

# For 't is His institution,— The complement of hell.

#### LXX

THE body grows outside,—
The more convenient way,—
That if the spirit like to hide,
Its temple stands alway

Ajar, secure, inviting; It never did betray The soul that asked its shelter In timid honesty.

# LXXI

UNDUE significance a starving man attaches

To food Far off; he sighs, and therefore hopeless, And therefore good.

Partaken, it relieves indeed, but proves us
That spices fly

In the receipt. It was the distance Was savory.

# LXXII

HEART not so heavy as mine, Wending late home,
As it passed my window
Whistled itself a tune,—

A careless snatch, a ballad, A ditty of the street; Yet to my irritated ear An anodyne so sweet,

It was as if a bobolink, 46
Sauntering this way,
Carolled and mused and carolled,
Then bubbled slow away.

It was as if a chirping brook Upon a toilsome way Set bleeding feet to minuets<sup>47</sup> Without the knowing why.

To-morrow, night will come again, Weary, perhaps, and sore.
Ah, bugle, by my window,
I pray you stroll once more!

# LXXIII

I many times thought peace had come, When peace was far away; As wrecked men deem they sight the land

At centre of the sea,

And struggle slacker, but to prove, As hopelessly as I, How many the fictitious shores Before the harbor lie.

# LXXIV

UNTO my books so good to turn Far ends of tired days; It half endears the abstinence, And pain is missed in praise.

As flavors cheer retarded guests With banquetings to be, So spices stimulate the time Till my small library.

It may be wilderness without, Far feet of failing men, But holiday excludes the night, And it is bells within.

I thank these kinsmen of the shelf; Their countenances bland Enamour in prospective, 48

And satisfy, obtained.

# LXXV

THIS merit hath the worst,— It cannot be again. When Fate hath taunted last And thrown her furthest stone,

The maimed may pause and breathe, And glance securely round. The deer invites no longer Than it eludes the hound.

# LXXVI

I had been hungry all the years; My noon had come, to dine; I, trembling, drew the table near, And touched the curious wine.

'T was this on tables I had seen, When turning, hungry, lone, I looked in windows, for the wealth I could not hope to own.

I did not know the ample bread, 'T was so unlike the crumb The birds and I had often shared In Nature's dining-room.

The plenty hurt me, 't was so new,—
Myself felt ill and odd,
As berry of a mountain bush
Transplanted to the road.

Nor was I hungry; so I found That hunger was a way Of persons outside windows, The entering takes away.

# LXXVII

I gained it so,
By climbing slow,
By catching at the twigs that grow
Between the bliss and me.
It hung so high,
As well the sky
Attempt by strategy.

I said I gained it,—
This was all.
Look, how I clutch it,
Lest it fall,
AndIapauper go;
Unfitted by an instant's grace

# For the contented beggar's face I wore an hour ago.

# **LXXVIII**

TO learn the transport by the pain, As blind men learn the sun; To die of thirst, suspecting That brooks in meadows run;

To stay the homesick, homesick feet Upon a foreign shore Haunted by native lands, the while, And blue, beloved air—

This is the sovereign anguish, This, the signal woe! These are the patient laureates<sup>49</sup> Whose voices, trained below, Ascend in ceaseless carol, Inaudible, indeed, To us, the duller scholars Of the mysterious bard!

# LXXIX

I years had been from home, And now, before the door, I dared not open, lest a face I never saw before

Stare vacant into mine
And ask my business there.
My business,—just a life I left,
Was such still dwelling there?

I fumbled at my nerve, I scanned the windows near; The silence like an ocean rolled, And broke against my ear.

I laughed a wooden laugh
That I could fear a door,
Who danger and the dead had faced,
But never quaked before.

I fitted to the latch
My hand, with trembling care,
Lest back the awful door should spring,
And leave me standing there.

I moved my fingers off
As cautiously as glass,
And held my ears, and like a thief



# LXXX

PRAYER is the little implement Through which men reach Where presence is denied them. They fling their speech

By means of it in God's ear; If then He hear, This sums the apparatus Comprised in prayer.

# LXXXI

I know that he exists Somewhere, in silence. He has hid his rare life From our gross eyes.

'T is an instant's play, 'T is a fond ambush, Just to make bliss Earn her own surprise!

But should the play Prove piercing earnest, Should the glee glaze In death's stiff stare,
Would not the fun
Look too expensive?
Would not the jest
Have crawled too far?

# LXXXII

MUSICIANS wrestle everywhere:
All day, among the crowded air,
I hear the silver strife;
And—waking long before the dawn—
Such transport breaks upon the town
I think it that "new life!"

It is not bird, it has no nest;
Nor band, in brass and scarlet dressed,
Nor tambourine, nor man;
It is not hymn from pulpit read,—
The morning stars the treble led
On time's first afternoon!

Some say it is the spheres at play! Some say that bright majority Of vanished dames and men! Some think it service in the place Where we, with late, celestial face, Please God, shall ascertain!

# LXXXIII

JUST lost when I was saved!

Just felt the world go by!

Just girt<sup>50</sup> me for the onset with eternity,

When breath blew back,

And on the other side

I heard recede the disappointed tide!

Therefore, as one returned, I feel, Odd secrets of the line to tell! Some sailor, skirting foreign shores, Some pale reporter from the awful doors Before the seal! Next time, to stay!
Next time, the things to see
By ear unheard,
Unscrutinized by eye.

Next time, to tarry,
While the ages steal,—
Slow tramp the centuries,
And the cycles wheel.

# LXXXIV

'T is little I could care for pearls Who own the ample sea; Or brooches, when the Emperor With rubies pelteth me;

Or gold, who am the Prince of Mines; Or diamonds, when I see A diadem<sup>51</sup> to fit a dome Continual crowning me.

# LXXXV

SUPERIORITY to fate
Is difficult to learn.
'T is not conferred by any,
But possible to earn

A pittance at a time, Until, to her surprise, The soul with strict economy Subsists till Paradise.

# LXXXVI

HOPE is a subtle glutton; He feeds upon the fair; And yet, inspected closely, What abstinence is there!

His is the halcyon table
That never seats but one,
And whatsoever is consumed
The same amounts remain.

### LXXXVII

FORBIDDEN fruit a flavor has That lawful orchards mocks; How luscious lies the pea within The pod that Duty locks!

# LXXXVIII

HEAVEN is what I cannot reach! The apple on the tree, Provided it do hopeless hang, That "heaven" is, to me.

The color on the cruising cloud, The interdicted ground Behind the hill, the house behind, There Paradise is found!

# LXXXIX

A word is dead When it is said, Some say. I say it just Begins to live

That day.

### XC

TO venerate the simple days Which lead the seasons by, Needs but to remember That from you or me They may take the trifle Termed mortality! To invest existence with a stately air, Needs but to remember That the acorn there Is the egg of forests

For the upper air!

#### XCI

IT'S such a little thing to weep, So short a thing to sigh; And yet by trades the size of these We men and women die!

### XCII

DROWNING is not so pitiful As the attempt to rise. Three times, 't is said, a sinking man Comes up to face the skies, And then declines forever To that abhorred abode Where hope and he part company,— For he is grasped of God. The Maker's cordial visage, However good to see, Is shunned, we must admit it, Like an adversity.

### **XCIII**

How still the bells in steeples stand, Till, swollen with the sky, They leap upon their silver feet In frantic melody!

# **XCIV**

IF the foolish call them "flowers," Need the wiser tell?
If the savants "classify" them,
It is just as well!

Those who read the *Revelations*Must not criticise
Those who read the same edition
With beclouded eyes!

Could we stand with that old Moses Canaan denied,— Scan, like him, the stately landscape On the other side,—

Doubtless we should deem superfluous Many sciences Not pursued by learned angels In scholastic skies!

Low amid that glad *Belles lettres* Grant that we may stand, Stars, amid profound Galaxies, At that grand "Right hand"!

#### **XCV**

COULD mortal lip divine
The undeveloped freight
Of a delivered syllable,
'T would crumble with the weight.

### **XCVI**

MY life closed twice before its close; It yet remains to see If Immortality unveil A third event to me,

So huge, so hopeless to conceive, As these that twice befell. Parting is all we know of heaven, And all we need of hell.

# XCVII

WE never know how high we are Till we are called to rise; And then, if we are true to plan, Our statures touch the skies.

The heroism we recite Would be a daily thing, Did not ourselves the cubits 54 warp For fear to be a king.

# **XCVIII**

WHILE I was fearing it, it came, But came with less of fear, Because that fearing it so long Had almost made it dear. There is a fitting a dismay, A fitting a despair. 'T is harder knowing it is due, Than knowing it is here. The trying on the utmost, The morning it is new, Is terribler than wearing it A whole existence through.

### **XCIX**

THERE is no frigate<sup>55</sup> like a book To take us lands away, Nor any coursers<sup>56</sup> like a page Of prancing poetry.

This traverse may the poorest take Without oppress of toll; How frugal is the chariot That bears a human soul!

#### $\mathbf{C}$

WHO has not found the heaven below Will fail of it above.

God's residence is next to mine, His furniture is love.

#### CI

A face devoid of love or grace,
A hateful, hard, successful face,
A face with which a stone
Would feel as thoroughly at ease
As were they old acquaintances,—
First time together thrown.

# CII

I had a guinea<sup>57</sup> golden; I lost it in the sand, And though the sum was simple, And pounds were in the land, Still had it such a value Unto my frugal eye, That when I could not find it I sat me down to sigh.

I had a crimson robin
Who sang full many a day,
But when the woods were painted
He, too, did fly away.
Time brought me other robins.—

Their ballads were the same,—
Still for my missing troubadour<sup>58</sup>
I kept the "house at hame."<sup>59</sup>

I had a star in heaven;

One Pleiad<sup>60</sup> was its name,
And when I was not heeding
It wandered from the same.
And though the skies are crowded,
And all the night ashine,
I do not care about it,

My story has a moral: I have a missing friend,— Pleiad its name, and robin,

Since none of them are mine.

And guinea in the sand,— And when this mournful ditty, Accompanied with tear, Shall meet the eye of traitor In country far from here, Grant that repentance solemn May seize upon his mind, And he no consolation Beneath the sun may find.

### CIII

FROM all the jails the boys and girls Ecstatically leap,—
Beloved, only afternoon
That prison doesn't keep.

They storm the earth and stun the air, A mob of solid bliss. Alas! that frowns could lie in wait For such a foe as this!

#### CIV

FEW get enough,—enough is one; To that ethereal throng Have not each one of us the right To stealthily belong?

### CV

UPON the gallows hung a wretch,
Too sullied for the hell
To which the law entitled him.
As nature's curtain fell
The one who bore him tottered in,
For this was woman's son.
"'T was all I had," she stricken gasped;
Oh, what a livid boon!

### CVI

I felt a cleavage in my mind As if my brain had split; I tried to match it, seam by seam, But could not make them fit.

The thought behind I strove to join Unto the thought before, But sequence ravelled out of reach Like balls upon a floor.

# **CVII**

THE reticent volcano keeps His never slumbering plan; Confided are his projects pink To no precarious man.

If nature will not tell the tale Jehovah told to her, Can human nature not survive Without a listener?

Admonished by her buckled lips Let every babbler be. The only secret people keep



### **CVIII**

IF recollecting were forgetting,
Then I remember not;
And if forgetting, recollecting,
How near I had forgot!
And if to miss were merry,
And if to mourn were gay,
How very blithe the fingers
That gathered these to-day!

# CIX

THE farthest thunder that I heard Was nearer than the sky, And rumbles still, though torrid noons Have lain their missiles by. The lightning that preceded it Struck no one but myself, But I would not exchange the bolt For all the rest of life. Indebtedness to oxygen The chemist may repay, But not the obligation To electricity. It founds the homes and decks the days, And every clamor bright Is but the gleam concomitant 61

# Of that waylaying light. The thought is quiet as a flake,— A crash without a sound; How life's reverberation

Its explanation found!

## CX

ON the bleakness of my lot Bloom I strove to raise. Late, my acre of a rock Yielded grape and maize.

Soil of flint if steadfast tilled Will reward the hand; Seed of palm by Lybian sun Fructified in sand.

#### CXI

A door just opened on a street—
I, lost, was passing by—
An instant's width of warmth disclosed,
And wealth, and company.

The door as sudden shut, and I, I, lost, was passing by,—
Lost doubly, but by contrast most, Enlightening misery.

## **CXII**

ARE friends delight or pain? Could bounty but remain Riches were good.

But if they only stay Bolder to fly away, Riches are sad.

## CXIII

ASHES denote that fire was; Respect the grayest pile For the departed creature's sake That hovered there awhile.

Fire exists the first in light,
And then consolidates,—
Only the chemist can disclose
Into what carbonates. 62

## **CXIV**

FATE slew him, but he did not drop; She felled—he did not fall-Impaled him on her fiercest stakes— He neutralized them all.

She stung him, sapped his firm advance, But, when her worst was done, And he, unmoved, regarded her, Acknowledged him a man.

## CXV

FINITE to fail, but infinite to venture. For the one ship that struts the shore Many's the gallant, overwhelmed creature

Nodding in navies nevermore.

# CXVI

I measure every grief I meet With analytic eyes; I wonder if it weighs like mine, Or has an easier size.

I wonder if they bore it long, Or did it just begin? I could not tell the date of mine, It feels so old a pain.

I wonder if it hurts to live,
And if they have to try,
And whether, could they choose

between, They would not rather die.

I wonder if when years have piled—Some thousands—on the cause Of early hurt, if such a lapse Could give them any pause;

Or would they go on aching still Through centuries above, Enlightened to a larger pain By contrast with the love.

The grieved are many, I am told;
The reason deeper lies,—
Death is but one and comes but once,

There's grief of want, and grief of cold,

And only nails the eyes.

A sort they call "despair";
There's banishment from native eyes,
In sight of native air.

And though I may not guess the kind Correctly, yet to me A piercing comfort it affords In passing Calvary,

To note the fashions of the cross, Of those that stand alone,

# Still fascinated to presume That some are like my own.

# **CXVII**

I have a king who does not speak; So, wondering, thro' the hours meek I trudge the day away,— Half glad when it is night and sleep, If, haply, thro' a dream to peep In parlors shut by day.

And if I do, when morning comes,
It is as if a hundred drums
Did round my pillow roll,
And shouts fill all my childish sky,
And bells keep saying "victory"
From steeples in my soul!

And if I don't, the little Bird

Within the Orchard is not heard, And I omit to pray, "Father, thy will be done" to-day, For my will goes the other way, And it were perjury!

# **CXVIII**

IT dropped so low in my regard I heard it hit the ground, And go to pieces on the stones At bottom of my mind;

Yet blamed the fate that fractured, less Than I reviled myself For entertaining plated wares Upon my silver shelf.

## **CXIX**

TO lose one's faith surpasses
The loss of an estate,
Because estates can be
Replenished,—faith cannot.

Inherited with life,
Belief but once can be;
Annihilate a single clause,
And Being's beggary.

## CXX

I had a daily bliss
I half indifferent viewed,
Till sudden I perceived it stir,—
It grew as I pursued,

Till when, around a crag,
It wasted from my sight,
Enlarged beyond my utmost scope,
I learned its sweetness right.

## CXXI

I worked for chaff, and earning wheat Was haughty and betrayed. What right had fields to arbitrate In matters ratified?

I tasted wheat,—and hated chaff, And thanked the ample friend; Wisdom is more becoming viewed At distance than at hand.

## **CXXII**

LIFE, and Death, and Giants
Such as these, are still.
Minor apparatus, hopper 64 of the mill,
Beetle at the candle,
Or a fife s65 small fame,
Maintain by accident
That they proclaim.

# CXXIII

OUR lives are Swiss,—
So still, so cool,
Till, some odd afternoon,
The Alps neglect their curtains,
And we look farther on.

Italy stands the other side,
While, like a guard between,
The solemn Alps,
The siren Alps,
Forever intervene!

# **CXXIV**

REMEMBRANCE has a rear and front,

'T is something like a house; It has a garret<sup>66</sup> also For refuse and the mouse,

Besides, the deepest cellar That ever mason hewed; 67 Look to it, by its fathoms Ourselves be not pursued.

# CXXV

TO hang our head ostensibly, And subsequent to find That such was not the posture Of our immortal mind,

Affords the sly presumption
That, in so dense a fuzz,
You, too, take cobweb attitudes
Upon a plane of gauze!

# **CXXVI**

THE brain is wider than the sky, For, put them side by side, The one the other will include With ease, and you beside.

The brain is deeper than the sea, For, hold them, blue to blue, The one the other will absorb, As sponges, buckets do.

The brain is just the weight of God, For, lift them, pound for pound, And they will differ, if they do,



# **CXXVII**

THE bone that has no marrow; What ultimate for that? It is not fit for table, For beggar, or for cat.

A bone has obligations, A being has the same; A marrowless assembly Is culpabler than shame.

But how shall finished creatures A function fresh obtain?— Old Nicodemus '68 phantom



# **CXXVIII**

THE past is such a curious creature, To look her in the face A transport may reward us, Or a disgrace.

Unarmed if any meet her, I charge him, fly!
Her rusty ammunition
Might yet reply!

#### **CXXIX**

TO help our bleaker parts Salubrious hours are given, Which if they do not fit for earth Drill silently for heaven.

# CXXX

WHAT soft, cherubic creatures
These gentlewomen are!
One would as soon assault a plush
Or violate a star.

Such dimity<sup>69</sup> convictions, A horror so refined Of freckled human nature, Of Deity ashamed,—

It's such a common glory, A fisherman's degree! Redemption, brittle lady,



## **CXXXI**

WHO never wanted,—maddest joy Remains to him unknown;
The banquet of abstemiousness<sup>70</sup>
Surpasses that of wine.

Within its hope, though yet ungrasped Desire's perfect goal,
No nearer, lest reality
Should disenthrall thy soul.

## **CXXXII**

IT might be easier
To fail with land in sight,
Than gain my blue peninsula
To perish of delight.

## CXXXIII

YOU cannot put a fire out; A thing that can ignite Can go, itself, without a fan Upon the slowest night.

You cannot fold a flood And put it in a drawer,— Because the winds would find it out, And tell your cedar floor.

## **CXXXIV**

A modest lot, a fame *petite*,
A brief campaign of sting and sweet
Is plenty! Is enough!
A sailor's business is the shore,
A soldier's—balls. Who asketh more
Must seek the neighboring life!

# CXXXV

Is bliss, then, such abyss
I must not put my foot amiss
For fear I spoil my shoe?

I'd rather suit my foot
Than save my boot,
For yet to buy another pair
Is possible
At any fair.

But bliss is sold just once; The patent lost None buy it any more.

## **CXXXVI**

I stepped from plank to plank So slow and cautiously; The stars about my head I felt, About my feet the sea.

I knew not but the next Would be my final inch,— This gave me that precarious gait Some call experience.

## **CXXXVII**

ONE day is there of the series Termed Thanksgiving day, Celebrated part at table, Part in memory.

Neither patriarch nor pussy, I dissect the play; Seems it, to my hooded thinking, Reflex holiday.

Had there been no sharp subtraction From the early sum, Not an acre or a caption Where was once a room,

Not a mention, whose small pebble Wrinkled any bay,—
Unto such, were such assembly,
'T were Thanksgiving day.

# CXXXVIII

SOFTENED by Time's consummate plush,
How sleek the woe appears
That threatened childhood's citadel
And undermined the years!

Bisected now by bleaker griefs, We envy the despair That devastated childhood's realm, So easy to repair.

## **PART TWO**

#### *NATURE*

MY nosegays are for captives; Dim, long-expectant eyes, Fingers denied the plucking, Patient till paradise.

To such, if they should whisper Of morning and the moor, They bear no other errand, And I, no other prayer.

## I

NATURE, the gentlest mother, Impatient of no child, The feeblest or the waywardest,— Her admonition mild

In forest and the hill
By traveller is heard,
Restraining rampant squirrel
Or too impetuous bird.

How fair her conversation, A summer afternoon,— Her household, her assembly; And when the sun goes down

Her voice among the aisles Incites the timid prayer Of the minutest cricket, The most unworthy flower.

When all the children sleep She turns as long away As will suffice to light her lamps; Then, bending from the sky,

With infinite affection
And infiniter care,
Her golden finger on her lip,



## II

WILL there really be a morning? Is there such a thing as day? Could I see it from the mountains If I were as tall as they?

Has it feet like water-lilies?
Has it feathers like a bird?
Is it brought from famous countries
Of which I have never heard?

Oh, some scholar! Oh, some sailor! Oh, some wise man from the skies! Please to tell a little pilgrim

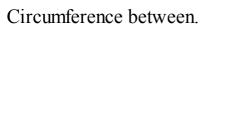


# III

AT half-past three a single bird Unto a silent sky Propounded but a single term Of cautious melody.

At half-past four, experiment Had subjugated test, And lo! her silver principle Supplanted all the rest.

At half-past seven, element Nor implement was seen, And place was where the presence was,



# IV

THE day came slow, till five o'clock,
Then sprang before the hills
Like hindered rubies, or the light
A sudden musket spills.

The purple could not keep the east,
The sunrise shook from fold,
Like breadths of topaz, packed a night,
The lady just unrolled.

The happy winds their timbrels<sup>71</sup> took; The birds, in docile rows, Arranged themselves around their prince (The wind is prince of those).

The orchard sparkled like a Jew,— How mighty 't was, to stay A guest in this stupendous place, The parlor of the day!

#### V

THE sun just touched the morning; The morning, happy thing, Supposed that he had come to dwell, And life would be all spring.

She felt herself supremer,—
A raised, ethereal thing;
Henceforth for her what holiday!
Meanwhile, her wheeling king
Trailed slow along the orchards
His haughty, spangled hems,
Leaving a new necessity,—
The want of diadems!

The morning fluttered, staggered, Felt feebly for her crown,—
Her unanointed forehead
Henceforth her only one.

#### VI

THE robin is the one That interrupts the morn With hurried, few, express reports When March is scarcely on.

The robin is the one
That overflows the noon
With her cherubic quantity,
An April but begun.

The robin is the one
That speechless from her nest
Submits that home and certainty
And sanctity are best.

# VII

FROM cocoon forth a butterfly As lady from her door Emerged—a summer afternoon-Repairing everywhere,

Without design, that I could trace, Except to stray abroad On miscellaneous enterprise The clovers understood.

Her pretty parasol was seen Contracting in a field Where men made hay, then struggling hard
With an opposing cloud,

Where parties, phantom as herself,
To Nowhere seemed to go
In purposeless circumference,
As 't were a tropic show.

And notwithstanding bee that worked, And flower that zealous blew, This audience of idleness Disdained them, from the sky,

Till sundown crept, a steady tide, And men that made the hay,

# And afternoon, and butterfly, Extinguished in its sea.

## VIII

BEFORE you thought of spring,
Except as a surmise,
You see, God bless his suddenness,
A fellow in the skies
Of independent hues,
A little weather-worn,
Inspiriting habiliments<sup>72</sup>
Of indigo and brown.

With specimens of song, As if for you to choose, Discretion in the interval, With gay delays he goes To some superior tree Without a single leaf,

And shouts for joy to nobody But his seraphic self!

## IX

AN altered look about the hills;
A Tyrian<sup>73</sup> light the village fills;
A wider sunrise in the dawn;
A deeper twilight on the lawn;
A print of a vermilion<sup>74</sup> foot;
A purple finger on the slope;
A flippant fly upon the pane;
A spider at his trade again;

An added strut in chanticleer; A flower expected everywhere; An axe shrill singing in the woods; Fern-odors on untravelled roads,— All this, and more I cannot tell, A furtive look you know as well, And Nicodemus' mystery Receives its annual reply.

## X

"WHOSE are the little beds," I asked,
"Which in the valleys lie?"
Some shook their heads, and others smiled,
And no one made reply.

"Perhaps they did not hear," I said; "I will inquire again.
Whose are the beds, the tiny beds
So thick upon the plain?"

" 'T is daisy in the shortest; A little farther on, Nearest the door to wake the first, Little leontodon. 75

"'T is iris, sir, and aster, Anemone and bell, Batschia in the blanket red, And chubby daffodil."

Meanwhile at many cradles
Her busy foot she plied,
Humming the quaintest lullaby
That ever rocked a child.

"Hush! Epigea wakens!
The crocus stirs her lids,
Rhodora's cheek is crimson,—

She's dreaming of the woods."

Then, turning from them, reverent, "Their bed-time 't is," she said; "The bumble-bees will wake them When April woods are red."

## X

PIGMY seraphs gone astray,

Velvet people from Vevav. 76 Belles from some lost summer day, Bees' exclusive coterie. Paris could not lay the fold Belted down with emerald; Venice could not show a cheek Of a tint so lustrous meek. Never such an ambuscade 77 As of brier and leaf displayed For my little damask <sup>78</sup> maid. I had rather wear her grace Than an earl's distinguished face; I had rather dwell like her Than be Duke of Exeter. 79

## Royalty enough for me To subdue the bumble-bee!

# XII

To hear an oriole sing May be a common thing, Or only a divine.

It is not of the bird
Who sings the same, unheard,
As unto crowd.

The fashion of the ear Attireth that it hear In dun<sup>80</sup> or fair.

So whether it be rune, 81 Or whether it be none,

Is of within;
The "tune is in the tree,"
The sceptic showeth me;
"No, sir! In thee!"

#### XIII

ONE of the ones that Midas touched, Who failed to touch us all, Was that confiding prodigal, The blissful oriole.

So drunk, he disavows it With badinage<sup>82</sup> divine; So dazzling, we mistake him For an alighting mine.

A pleader, a dissembler, An epicure, a thief,— Betimes an oratorio, 83 An ecstasy in chief; The Jesuit of orchards,
He cheats as he enchants
Of an entire attar<sup>84</sup>
For his decamping wants.

The splendor of a Burmah, 85
The meteor of birds,
Departing like a pageant
Of ballads and of bards.

I never thought that Jason<sup>86</sup> sought For any golden fleece; But then I am a rural man, With thoughts that make for peace. But if there were a Jason, Tradition suffer me Behold his lost emolument<sup>87</sup> Upon the apple-tree.

## XIV

I dreaded that first robin so, But he is mastered now, And I'm accustomed to him grown,— He hurts a little, though.

I thought if I could only live Till that first shout got by, Not all pianos in the woods Had power to mangle me.

I dared not meet the daffodils, For fear their yellow gown Would pierce me with a fashion I wished the grass would hurry,

So foreign to my own.

So when 't was time to see, He'd be too tall, the tallest one Could stretch to look at me.

I could not bear the bees should come,
I wished they'd stay away
In those dim countries where they go:
What word had they for me?

They're here, though; not a creature failed, No blossom stayed away In gentle deference to me, The Queen of Calvary.

Each one salutes me as he goes, And I my childish plumes Lift, in bereaved acknowledgment Of their unthinking drums.

### XV

A route of evanescence
With a revolving wheel;
A resonance of emerald,
A rush of cochineal;
And every blossom on the bush
Adjusts its tumbled head,—
The mail from Tunis, 88 probably,
An easy morning's ride.

## XVI

THE skies can't keep their secret!
They tell it to the hillsThe hills just tell the orchardsAnd they the daffodils!

A bird, by chance, that goes that way Soft overheard the whole. If I should bribe the little bird, Who knows but she would tell?

I think I won't, however, It's finer not to know; If summer were an axiom,

# What sorcery had snow?

So keep your secret, Father!
I would not, if I could,
Know what the sapphire fellows do,
In your new-fashioned world!

### XVII

WHO robbed the woods,
The trusting woods?
The unsuspecting trees
Brought out their burrs and mosses
His fantasy to please.
He scanned their trinkets, curious,
He grasped, he bore away.
What will the solemn hemlock,
What will the fir-tree say?

# XVIII

Two butterflies went out at noon
And waltzed above a stream.
Then stepped straight through the
firmament
And rested on a beam;

And then together bore away
Upon a shining sea,—
Though never yet, in any port,
Their coming mentioned be.

If spoken by the distant bird, If met in ether sea

# By frigate or by merchantman, Report was not to me.

## XIX

I started early, took my dog, And visited the sea; The mermaids in the basement Came out to look at me,

And frigates in the upper floor Extended hempen<sup>89</sup> hands, Presuming me to be a mouse Aground, upon the sands.

But no man moved me till the tide Went past my simple shoe, And past my apron and my belt, And past my bodice too,

And made as he would eat me up
As wholly as a dew
Upon a dandelion's sleeve—
And then I started too.

And he—he followed close behind; I felt his silver heel
Upon my ankle,—then my shoes
Would overflow with pearl.

Until we met the solid town,
No man he seemed to know;
And bowing with a mighty look



## XX

ARCTURUS<sup>90</sup> is his other name,—
I'd rather call him star!
It's so unkind of science
To go and interfere!

I pull a flower from the woods,— A monster with a glass Computes the stamens in a breath, And has her in a class.

Whereas I took the butterfly Aforetime in my hat, He sits erect in cabinets, What once was heaven, is zenith now.
Where I proposed to go

The clover-bells forgot.

changed!

When time's brief masquerade was done,
Is mapped, and charted too!

What if the poles should frisk about And stand upon their heads!
I hope I'm ready for the worst,
Whatever prank betides!

I hope I'm ready for the worst,
Whatever prank betides!

Perhaps the kingdom of Heaven's

I hope the children there Won't be new-fashioned when I come, And laugh at me, and stare!

I hope the father in the skies Will lift his little girl,-Old-fashioned, naughty, everything,—

Over the stile of pearl!

## XXI

AN awful tempest mashed the air, The clouds were gaunt and few; A black, as of a spectre's cloak, Hid heaven and earth from view.

The creatures chuckled on the roofs
And whistled in the air,
And shook their fists and gnashed their teeth,

And swung their frenzied hair.

The morning lit, the birds arose; The monster's faded eyes

## Turned slowly to his native coast, And peace was Paradise!

#### XXI

AN everywhere of silver, With ropes of sand To keep it from effacing The track called land.

# XIII

A bird came down the walk:

He did not know I saw;

He bit an angle-worm<sup>93</sup> in halves And ate the fellow, raw.

And then he drank a dew

From a convenient grass,

And then hopped sidewise to the wall

To let a beetle pass.

He glanced with rapid eyes

That hurried all abroad,—
They looked like frightened beads, I

thought
He stirred his velvet head

Like one in danger; cautious, I offered him a crumb, And he unrolled his feathers And rowed him softer home

Than oars divide the ocean,
Too silver for a seam,
Or butterflies, off banks of noon,
Leap, plashless, 94 as they swim.

## XXIV

A narrow fellow in the grass Occasionally rides; You may have met him,—did you not? His notice sudden is.

The grass divides as with a comb, A spotted shaft is seen; And then it closes at your feet And opens further on.

He likes a boggy acre, A floor too cool for corn. Yet when a child, and barefoot, I more than once, at morn,

Have passed, I thought, a whip-lash Unbraiding in the sun,-When, stooping to secure it, It wrinkled, and was gone.

Several of nature's people I know, and they know me; I feel for them a transport Of cordiality;

But never met this fellow, Attended or alone, Without a tighter breathing,



## XXV

THE mushroom is the elf of plants, At evening it is not; At morning in a truffled<sup>95</sup> hut It stops upon a spot

As if it tarried always; And yet its whole career Is shorter than a snake's delay, And fleeter than a tare. 96

'T is vegetation's juggler, The germ of alibi; Doth like a bubble antedate, And like a bubble hie.

I feel as if the grass were pleased To have it intermit; The surreptitious scion Of summer's circumspect.

Had nature any outcast face, Could she a son contemn, Had nature an Iscarioty <sup>97</sup> That mushroom,—it is him.

## XXVI

THERE came a wind like a bugle; It quivered through the grass, And a green chill upon the heat So ominous did pass We barred the windows and the doors As from an emerald ghost; The doom's electric moccason That very instant passed. On a strange mob of panting trees, And fences fled away, And rivers where the houses ran The living looked that day. The bell within the steeple wild The flying tidings whirled.

How much can come

### And much can go, And yet abide the world!

### XXVII

A spider sewed at night Without a light Upon an arc of white. If ruff it was of dame Or shroud of gnome, Himself, himself inform. Of immortality His strategy Was physiognomy. 98

## XXVIII

I know a place where summer strives With such a practised frost, She each year leads her daisies back, Recording briefly, "Lost."

But when the south wind stirs the pools And struggles in the lanes, Her heart misgives her for her vow, And she pours soft refrains

Into the lap of adamant, <sup>99</sup>
And spices, and the dew,
That stiffens quietly to quartz,
Upon her amber shoe.

### XXIX

THE one that could repeat the summer day

Were greater than itself, though he Minutest of mankind might be.

And who could reproduce the sun,

At period of going down—

The lingering and the stain, I mean—

When Orient has been outgrown,

And Occident becomes unknown, His name remain.

His name remain.

### XXX

THE wind tapped like a tired man, And like a host, "Come in," I boldly answered; entered then My residence within

A rapid, footless guest, To offer whom a chair Were as impossible as hand A sofa to the air.

No bone had he to bind him, His speech was like the push Of numerous humming-birds at once From a superior bush. His countenance a billow, His fingers, if he pass, Let go a music, as of tunes Blown tremulous in glass.

He visited, still flitting;
Then, like a timid man,
Again he tapped—'t was flurriedly—
And I became alone.

### XXXI

NATURE rarer uses yellow Than another hue; Saves she all of that for sunsets,— Prodigal of blue,

Spending scarlet like a woman, Yellow she affords Only scantly and selectly, Like a lover's words.

## XXXII

THE leaves, like women, interchange Sagacious confidence; Somewhat of nods, and somewhat of Portentous inference,

The parties in both cases Enjoining secrecy,—
Inviolable compact
To notoriety.

### XXXIII

How happy is the little stone That rambles in the road alone, And doesn't care about careers, And exigencies  $\frac{100}{100}$  never fears; Whose coat of elemental brown A passing universe put on; And independent as the sun, Associates or glows alone, Fulfilling absolute decree In casual simplicity.

## XXXIV

IT sounded as if the streets were running,

And then the streets stood still.

Eclipse was all we could see at the window,
And awe was all we could feel.

And awe was all we could feel.

By and by the boldest stole out of his covert,

To see if time was there.

Nature was in her beryl<sup>101</sup> apron, Mixing fresher air.

## XXXV

THE rat is the concisest tenant. He pays no rent,—
Repudiates the obligation,
On schemes intent.

Balking our wit
To sound or circumvent,
Hate cannot harm
A foe so reticent.

Neither decree Prohibits him, Lawful as



### XXXVI

FREQUENTLY the woods are pink, Frequently are brown; Frequently the hills undress Behind my native town.

Oft a head is crested I was wont to see, And as oft a cranny Where it used to be.

And the earth, they tell me, On its axis turned,— Wonderful rotation



#### XXXVII

THE wind begun to rock the grass With threatening tunes and low,—He flung a menace at the earth, A menace at the sky.

The leaves unhooked themselves from trees
And started all abroad;

And started all abroad;
The dust did scoop itself like hands
And throw away the road.

The wagons quickened on the streets, The thunder hurried slow; The lightning showed a yellow beak, And then a livid claw.

The birds put up the bars to nests,
The cattle fled to barns;
There came one drop of giant rain,
And then, as if the hands
That held the dams had parted hold,
The waters wrecked the sky,
But overlooked my father's house,

Just quartering a tree.

#### XXXVIII

SOUTH winds jostle them, Bumblebees come, Hover, hesitate, Drink, and are gone.

Butterflies pause On their passage Cashmere; I, softly plucking, Present them here!

#### XXXIX

BRING me the sunset in a cup, Reckon the morning's flagons up, And say how many dew; Tell me how far the morning leaps, Tell me what time the weaver sleeps Who spun the breadths of blue!

Write me how many notes there be In the new robin's ecstasy Among astonished boughs; How many trips the tortoise makes, How many cups the bee partakes,—The debauchee of dews!

Also, who laid the rainbow's piers,
Also, who leads the docile spheres
By withes of supple blue?
Whose fingers string the stalactite,
Who counts the wampum<sup>103</sup> of the night,
To see that none is due?

Who built this little Alban house And shut the windows down so close My spirit cannot see? Who'll let me out some gala day, With implements to fly away, Passing pomposity?

#### XL

SHE sweeps with many-colored brooms,
And leaves the shreds behind;
Oh, housewife in the evening west,
Come back, and dust the pond!

You dropped a purple ravelling in, You dropped an amber thread; And now you've littered all the East With duds of emerald!

And still she plies her spotted brooms, And still the aprons fly,

### Till brooms fade softly into stars—And then I come away.

#### XLI

LIKE mighty footlights burned the red At bases of the trees,— The far theatricals of day Exhibiting to these.

'T was universe that did applaud While, chiefest of the crowd, Enabled by his royal dress, Myself distinguished God.

#### XLII

WHERE ships of purple gently toss On seas of daffodil, Fantastic sailors mingle, And then—the wharf is still.

#### XLIII

BLAZING in gold and quenching in purple,

Leaping like leopards to the sky, Then at the feet of the old horizon Laying her spotted face, to die;

Stooping as low as the kitchen window, Touching the roof and tinting the barn, Kissing her bonnet to the meadow,—

And the juggler of day is gone!

#### XLIV

FARTHER in summer than the birds, Pathetic from the grass, A minor nation celebrates Its unobtrusive mass.

No ordinance is seen, So gradual the grace, A pensive custom it becomes, Enlarging loneliness.

Antiquest 106 felt at noon
When August, burning low,
Calls forth this spectral canticley 107

Repose to typify.

Remit as yet no grace, No furrow on the glow, Yet a druidic difference Enhances nature now.

#### XLV

As imperceptibly as grief
The summer lapsed away,—
Too imperceptible, at last,
To seem like perfidy.

A quietness distilled, As twilight long begun, Or Nature, spending with herself Sequestered afternoon.

The dusk drew earlier in,
The morning foreign shone,—
A courteous, yet harrowing grace,

As guest who would be gone.

And thus, without a wing,
Or service of a keel,
Our summer made her light escape
Into the beautiful

#### XLVI

IT can't be summer,—that got through; It's early yet for spring; There's that long town of white to cross Before the blackbirds sing.

It can't be dyings—it's too rouge,—
The dead shall go in white.
So sunset shuts my question down
With clasps of chrysolite. 109

#### XLVII

THE gentian<sup>110</sup> weaves her fringes, The maple's loom is red. My departing blossoms Obviate parade.

A brief, but patient illness, An hour to prepare; And one, below this morning, Is where the angels are.

It was a short procession,—
The bobolink was there,
An aged bee addressed us,

And then we knelt in prayer.

We trust that she was willing,—
We ask that we may be.
Summer, sister, seraph,
Let us go with thee!

In the name of the bee And of the butterfly And of the breeze, amen!

#### XLVIII

GOD made a little gentian; It tried to be a rose And failed, and all the summer laughed. But just before the snows There came a purple creature That ravished all the hill; And summer hid her forehead, And mockery was still. The frosts were her condition; The Tyrian<sup>111</sup> would not come Until the North evoked it. "Creator! shall I bloom?"

#### XLIX

BESIDES the autumn poets sing, A few prosaic days A little this side of the snow And that side of the haze.

A few incisive mornings,

A few ascetic eves,—
Gone Mr. Bryant's golden-rod, 112
And Mr. Thomson's 113 sheaves.
Still is the bustle in the brook,
Sealed are the spicy valves;
Mesmeric fingers softly touch
The eyes of many elves.

Perhaps a squirrel may remain, My sentiments to share.

Grant me, O Lord, a sunny mind, Thy windy will to bear!

#### L

IT sifts from leaden sieves, It powders all the wood, It fills with alabaster wool The wrinkles of the road.

It makes an even face
Of mountain and of plain,—
Unbroken forehead from the east
Unto the east again.

It reaches to the fence, It wraps it, rail by rail, Till it is lost in fleeces; It flings a crystal veil

On stump and stack and stem,—
The summer's empty room,
Acres of seams where harvests were,
Recordless, but for them.

It ruffles wrists of posts,
As ankles of a queen,—
Then stills its artisans like ghosts,
Denying they have been.

#### LI

No brigadier throughout the year So civic as the Jay.

A neighbor and a warrior too, With shrill felicity

Pursuing winds that censure us A February day, The brother of the universe Was never blown away.

The snow and he are intimate; I've often seen them play When heaven looked upon us all With such severity,

I felt apology were due
To an insulted sky,
Whose pompous frown was nutriment
To their temerity.

The pillow of this daring head
Is pungent evergreens;
His larder—terse and militant—
Unknown, refreshing things;

His character a tonic, His future a dispute; Unfair an immortality

# That leaves this neighbor out.

#### LII

NEW feet within my garden go, New fingers stir the sod; A troubadour upon the elm Betrays the solitude.

New children play upon the green, New weary sleep below; And still the pensive spring returns, And still the punctual snow!

#### LIII

PINK, small, and punctual.

Aromatic, low,

Covert in April, Candid in May,

Dear to the moss, Known by the knoll, Next to the robin In every human soul.

Bold little beauty, Bedecked with thee, Nature forswears Antiquity.

(With the first Arbutus.) $\frac{114}{}$ 

#### LIV

THE murmur of a bee A witchcraft yieldeth me. If any ask me why, 'T were easier to die Than tell.

The red upon the hill
Taketh away my will;
If anybody sneer,
Take care, for God is here,
That's all.

The breaking of the day

Addeth to my degree; If any ask me how, Artist, who drew me so, Must tell!

#### LV

PERHAPS you'd like to buy a flower? But I could never sell. If you would like to borrow Until the daffodil

Unties her yellow bonnet
Beneath the village door,
Until the bees, from clover rows
Their hock 115 and sherry draw,
Why, I will lend until just then,
But not an hour more!

#### LVI

THE pedigree of honey
Does not concern the bee;
A clover, any time, to him
Is aristocracy.

#### LVII

SOME keep the Sabbath going to church; I keep it staying at home, With a bobolink for a chorister, And an orchard for a dome.

Some keep the Sabbath in surplice; 116
I just wear my wings,
And instead of tolling the bell for church,
Our little sexton 117 sings.

God preaches,—a noted clergyman,— And the sermon is never long;

## So instead of getting to heaven at last, I'm going all along!

#### LVIII

THE bee is not afraid of me, I know the butterfly; The pretty people in the woods Receive me cordially.

The brooks laugh louder when I come, The breezes madder play. Wherefore, mine eyes, thy silver mists? Wherefore, O summer's day?

#### LIX

SOME rainbow coming from the fair! Some vision of the World Cashmere I confidently see! Or else a peacock's purple train, Feather by feather, on the plain Fritters itself away!

The dreamy butterflies bestir, Lethargic pools resume the whir Of last year's sundered tune. From some old fortress on the sun Baronial bees march, one by one, In murmuring platoon! The robins stand as thick to-day As flakes of snow stood yesterday, On fence and roof and twig.

The orchis 118 binds her feather on For her old lover, Don 119 the Sun,

Revisiting the bog!

Without commander, countless, still, The regiment of wood and hill In bright detachment stand. Behold! Whose multitudes are these? The children of whose turbaned seas, Or what Circassian 120 land?

# LX

THE grass so little has to do,—
A sphere of simple green,
With only butterflies to brood,
And bees to entertain,

And stir all day to pretty tunes
The breezes fetch along,
And hold the sunshine in its lap
And bow to everything;

And thread the dews all night, like pearls,
And make itself so fine,—

A duchess were too common For such a noticing.

And even when it dies, to pass In odors so divine,
As lowly spices gone to sleep,
Or amulets 121 of pine.

And then to dwell in sovereign barns, And dream the days away,— The grass so little has to do,

I wish I were a hay!

# LXI

A little road not made of man, Enabled of the eye, Accessible to thill 122 of bee, Or cart of butterfly.

If town it have, beyond itself, 'T is that I cannot say; I only sigh,—no vehicle Bears me along that way.

#### LXII

A drop fell on the apple tree.

Another on the roof;

A half a dozen kissed the eaves,

And made the gables  $\frac{123}{2}$  laugh.

A few went out to help the brook,
That went to help the sea.
Myself conjectured, Were they pearls,
What peaklages could be!

What necklaces could be!

The dust replaced in hoisted roads, The birds jocoser 124 sung; The sunshine threw his hat away, The orchards spangles hung. The breezes brought dejected lutes, And bathed them in the glee; The East put out a single flag, And signed the fête 125 away.

# LXIII

A something in a summer's day, As slow her flambeaux 126 burn away, Which solemnizes me.

A something in a summer's noon,— An azure depth, a wordless tune, Transcending ecstasy.

And still within a summer's night A something so transporting bright, I clap my hands to see;

Then veil my too inspecting face, Lest such a subtle, shimmering grace Flutter too far for me.

The wizard-fingers never rest,
The purple brook within the breast
Still chafes its narrow bed;

Still rears the East her amber flag, Guides still the sun along the crag His caravan of red,

Like flowers that heard the tale of dews, But never deemed the dripping prize Awaited their low brows; Or bees, that thought the summer's name Some rumor of delirium No summer could for them;

Or Arctic creature, dimly stirred
By tropic hint,—some travelled bird
Imported to the wood;

Or wind's bright signal to the ear, Making that homely and severe, Contented, known, before

The heaven unexpected came,
To lives that thought their worshipping
A too presumptuous psalm.

# LXIV

THIS is the land the sunset washes, These are the banks of the Yellow Sea; 127

Where it rose, or whither it rushes, These are the western mystery!

Night after night her purple traffic Strews the landing with opal bales; Merchantmen poise upon horizons, Dip, and vanish with fairy sails.

# LXV

LIKE trains of cars on tracks of plush I hear the level bee:
A jar across the flowers goes,
Their velvet masonry

Withstands until the sweet assault Their chivalry consumes, While he, victorious, tilts away To vanquish other blooms.

His feet are shod with gauze, His helmet is of gold; His breast, a single onyx<sup>129</sup>

# With chrysoprase, <sup>130</sup> inlaid. His labor is a chant,

His idleness a tune;
Oh, for a bee's experience
Of clovers and of noon!

# **LXVI**

THERE is a flower that bees prefer, And butterflies desire; To gain the purple democrat The humming-birds aspire.

And whatsoever insect pass,
A honey bears away
Proportioned to his several dearth
And her capacity.

Her face is rounder than the moon, And ruddier than the gown Of orchis in the pasture, Or rhododendron worn.

She doth not wait for June;
Before the world is green
Her sturdy little countenance
Against the wind is seen,

Contending with the grass,
Near kinsman to herself,
For privilege of sod and sun,
Sweet litigants for life.

And when the hills are full, And newer fashions blow, Doth not retract a single spice For pang of jealousy.

Her public is the noon,
Her providence the sun,
Her progress by the bee proclaimed
In sovereign, swerveless tune.

The bravest of the host, Surrendering the last, Nor even of defeat aware When cancelled by the frost.

# LXVII

PRESENTIMENT is that long shadow on the lawn Indicative that suns go down; The notice to the startled grass

That darkness is about to pass.

# **LXVIII**

As children bid the guest good-night, And then reluctant turn, My flowers raise their pretty lips, Then put their nightgowns on.

As children caper when they wake, Merry that it is morn, My flowers from a hundred cribs Will peep, and prance again.

# LXIX

ANGELS in the early morning May be seen the dews among, Stooping, plucking, smiling, flying: Do the buds to them belong?

Angels when the sun is hottest
May be seen the sands among,
Stooping, plucking, sighing, flying;
Parched the flowers they bear along.

# LXX

SO bashful when I spied her, So pretty, so ashamed! So hidden in her leaflets, Lest anybody find;

So breathless till I passed her, So helpless when I turned And bore her, struggling, blushing, Her simple haunts beyond!

For whom I robbed the dingle, 131
For whom betrayed the dell, 132
Many will doubtless ask me,



# LXXI

IT makes no difference abroad, The seasons fit the same, The mornings blossom into noons, And split their pods of flame.

Wild-flowers kindle in the woods, The brooks brag all the day; No blackbird bates 133 his jargoning For passing Calvary.

Auto-da-fé<sup>134</sup> and judgment Are nothing to the bee; His separation from his rose



# LXXII

THE mountain sat upon the plain In his eternal chair, His observation omnifold, 135 His inquest everywhere.

The seasons prayed around his knees, Like children round a sire: Grandfather of the days is he, Of dawn the ancestor.

# LXXIII

I'LL tell you how the sun rose,— A ribbon at a time. The steeples swam in amethyst, The news like squirrels ran.

The hills untied their bonnets, The bobolinks begun. Then I said softly to myself, "That must have been the sun!"

But how he set, I know not. There seemed a purple stile Which little yellow boys and girls Were climbing all the while

Till when they reached the other side, A dominie in gray
Put gently up the evening bars,
And led the flock away.

#### LXXIV

THE butterfly's assumption-gown, 137 In chrysoprase apartments hung, This afternoon put on.

How condescending to descend, And be of buttercups the friend In a New England town!

# LXXV

OF all the sounds despatched abroad, There's not a charge to me Like that old measure in the boughs, That phraseless melody

The wind does, working like a hand Whose fingers comb the sky, Then quiver down, with tufts of tune Permitted gods and me.

When winds go round and round in bands,

And thrum $\frac{138}{}$  upon the door,

And birds take places overhead, To bear them orchestra,

I crave him grace, of summer boughs, If such an outcast be, He never heard that fleshless chant Rise solemn in the tree,

As if some caravan of sound On deserts, in the sky, Had broken rank, Then knit, and passed In seamless company.

#### LXXVI

APPARENTLY with no surprise To any happy flower, The frost beheads it at its play In accidental power.

The blond assassin passes on, The sun proceeds unmoved To measure off another day For an approving God.

# LXXVII

'Twas later when the summer went Than when the cricket came, And yet we knew that gentle clock Meant nought but going home.

'T was sooner when the cricket went Than when the winter came, Yet that pathetic pendulum Keeps esoteric time.

# LXXVIII

THESE are the days when birds come back,

A very few, a bird or two, To take a backward look.

These are the days when skies put on The old, old sophistries 139 of June,—
A blue and gold mistake.

Oh fraud that cannot cheat the bee

Oh, fraud that cannot cheat the bee, Almost thy plausibility Induces my belief,

Till ranks of seeds their witness bear,

And softly through the altered air Hurries a timid leaf!

Oh, sacrament of summer days, Oh, last communion in the haze, Permit a child to join,

Thy sacred emblems to partake, Thy consecrated bread to break, Taste thine immortal wine!

#### LXXIX

THE morns are meeker than they were, The nuts are getting brown; The berry's cheek is plumper, The rose is out of town.

The maple wears a gayer scarf, The field a scarlet gown. Lest I should be old-fashioned, I'll put a trinket on.

# LXXX

THE sky is low, the clouds are mean, A travelling flake of snow Across a barn or through a rut Debates if it will go.

A narrow wind complains all day How some one treated him; Nature, like us, is sometimes caught Without her diadem.

# LXXXI

I think the hemlock likes to stand
Upon a marge 140 of snow;
It suits his own austerity,
And satisfies an awe
That men must slake in wilderness,
Or in the desert cloy,—
An instinct for the hoar, the bald,
Lapland's necessity.

The hemlock's nature thrives on cold; The gnash of northern winds Is sweetest nutriment to him, His best Norwegian wines. To satin races he is nought; But children on the Don<sup>141</sup> Beneath his tabernacles<sup>142</sup> play, And Dnieper wrestlers run.

## LXXXII

THERE'S a certain slant of light, On winter afternoons, That oppresses, like the weight Of cathedral tunes.

Heavenly hurt it gives us; We can find no scar, But internal difference Where the meanings are.

None may teach it anything, 'T is the seal, <sup>143</sup> despair,— An imperial affliction Sent us of the air. When it comes, the landscape listens, Shadows hold their breath; When it goes, 't is like the distance On the look of death.

### LXXXIII

THE springtime's pallid landscape Will glow like bright bouquet, Though drifted deep in parian 144 The village lies to-day.

The lilacs, bending many a year, With purple load will hang; The bees will not forget the tune Their old forefathers sang.

The rose will redden in the bog, The aster on the hill Her everlasting fashion set, And covenant gentians frill, Till summer folds her miracle As women do their gown, Or priests adjust the symbols When sacrament is done.

## LXXXIV

SHE slept beneath a tree Remembered but by me. I touched her cradle mute; She recognized the foot, Put on her carmine suit,— And see!

(With a Tulip.)

## LXXXV

A light exists in spring
Not present on the year
At any other period.
When March is scarcely here

A color stands abroad On solitary hills That science cannot overtake, But human nature *feels*.

It waits upon the lawn; It shows the furthest tree Upon the furthest slope we know; It almost speaks to me. Then, as horizons step, Or noons report away, Without the formula of sound, It passes, and we stay:

A quality of loss
Affecting our content,
As trade had suddenly encroached
Upon a sacrament.

# **LXXXVI**

A lady red upon the hill Her annual secret keeps; A lady white within the field In placid lily sleeps!

The tidy breezes with their brooms Sweep vale, and hill, and tree! Prithee, my pretty housewives! Who may expected be?

The neighbors do not yet suspect!
The woods exchange a smile—
Orchard, and buttercup, and bird—

In such a little while!

And yet how still the landscape stands, How nonchalant the wood, As if the resurrection Were nothing very odd!

## LXXXVII

DEAR March, come in! How glad I am! I looked for you before. Put down your hat— You must have walked— How out of breath you are! Dear March, how are you? And the rest? Did you leave Nature well? Oh, March, come right upstairs with me, I have so much to tell!

I got your letter, and the bird's; The maples never knew

That you were coming,—I declare, How red their faces grew! But, March, forgive me— And all those hills You left for me to hue; There was no purple suitable, You took it all with you. Who knocks? That April! Lock the door! I will not be pursued! He stayed away a year, to call When I am occupied. But trifles look so trivial As soon as you have come, That blame is just as dear as praise And praise as mere as blame.

## LXXXVIII

WE like March, his shoes are purple, He is new and high; Makes he mud for dog and peddler, Makes he forest dry; Knows the adder's tongue his coming, And begets her spot. Stands the sun so close and mighty That our minds are hot. News is he of all the others; Bold it were to die

With the blue-birds buccaneering

On his British sky.

## LXXXIX

NOT knowing when the dawn will come I open every door;
Or has it feathers like a bird,
Or billows like a shore?

## XC

A murmur in the trees to note, Not loud enough for wind; A star not far enough to seek, Nor near enough to find;

A long, long yellow on the lawn, A hubbub as of feet; Not audible, as ours to us, But dapperer, more sweet;

A hurrying home of little men To houses unperceived,— All this, and more, if I should tell, Would never be believed.

Of robins in the trundle bed

How many I espy
Whose nightgowns could not hide the wings,
Although I heard them try!

But then I promised ne'er to tell; How could I break my word? So go your way and I'll go mine,—

No fear you'll miss the road.

#### XCI

MORNING is the place for dew, Corn is made at noon, After dinner light for flowers, Dukes for setting sun!

### XCII

TO my quick ear the leaves conferred; The bushes they were bells; I could not find a privacy From Nature's sentinels.

In cave if I presumed to hide, The walls began to tell; Creation seemed a mighty crack To make me visible.

#### **XCIII**

A sepal, 145 petal, and a thorn Upon a common summer's morn, A flash of dew, a bee or two, A breeze A caper in the trees,— And I'm a rose!

## XCIV

HIGH from the earth I heard a bird; He trod upon the trees As he esteemed them trifles, And then he spied a breeze, And situated softly Upon a pile of wind Which in a perturbation Nature had left behind. A joyous-going fellow I gathered from his talk, Which both of benediction And badinage partook, Without apparent burden, I learned, in leafy wood He was the faithful father

Of a dependent brood; And this untoward transport His remedy for care,— A contrast to our respites. How different we are!

## XCV

THE spider as an artist
Has never been employed
Though his surpassing merit
Is freely certified

By every broom and Bridget 146 Throughout a Christian land. Neglected son of genius, I take thee by the hand.

## XCVI

WHAT mystery pervades a well! The water lives so far, Like neighbor from another world Residing in a jar.

The grass does not appear afraid; I often wonder he Can stand so close and look so bold At what is dread to me.

Related somehow they may be,— The sedge 147 stands next the sea, Where he is floorless, yet of fear No evidence gives he.

But nature is a stranger yet;
The ones that cite her most
Have never passed her haunted house,
Nor simplified her ghost.

To pity those that know her not Is helped by the regret That those who know her, know her less The nearer her they get.

### **XCVII**

TO make a prairie it takes a clover and one bee,—
One clover, and a bee,
And revery.
The revery alone will do
If bees are few.

# **XCVIII**

IT's like the light,A fashionless delight,
It's like the bee,—
A dateless melody.

It's like the woods, Private like breeze, Phraseless, yet it stirs The proudest trees.

It's like the morning,—
Best when it's done,—
The everlasting clocks

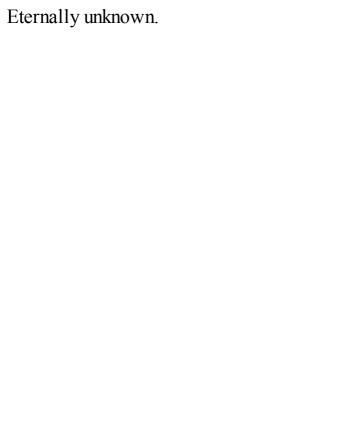


## **XCIX**

A dew sufficed itself
And satisfied a leaf,
And felt, "how vast a destiny!
How trivial is life!"

The sun went out to work,
The day went out to play,
But not again that dew was seen
By physiognomy.

Whether by day abducted, Or emptied by the sun Into the sea, in passing,



### $\mathsf{C}$

His bill an auger 148 is, His head, a cap and frill. He laboreth at every tree,— A worm his utmost goal.

### CI

SWEET is the swamp with its secrets, Until we meet a snake; 'T is then we sigh for houses, And our departure take

At that enthralling gallop
That only childhood knows.
A snake is summer's treason,
And guile is where it goes.

## CII

COULD I but ride indefinite, As doth the meadow-bee, And visit only where I liked, And no man visit me,

And flirt all day with buttercups, And marry whom I may, And dwell a little everywhere, Or better, run away

With no police to follow, Or chase me if I do, Till I should jump peninsulas To get away from you,—

I said, but just to be a bee
Upon a raft of air,
And row in nowhere all day long,
And anchor off the bar,—
What liberty! So captives deem
Who tight in dungeons are.

## CIII

THE moon was but a chin of gold A night or two ago, And now she turns her perfect face Upon the world below.

Her forehead is of amplest blond; Her cheek like beryl stone; Her eye unto the summer dew The likest I have known.

Her lips of amber never part; But what must be the smile Upon her friend she could bestow Were such her silver will!

And what a privilege to be But the remotest star! For certainly her way might pass Beside your twinkling door.

Her bonnet is the firmament,
The universe her shoe,
The stars the trinkets at her belt,
Her dimities of blue.

## CIV

THE bat is dun with wrinkled wings Like fallow article, And not a song pervades his lips, Or none perceptible.

His small umbrella, quaintly halved, Describing in the air An arc alike inscrutable,—
Elate 149 philosopher!

Deputed from what firmament Of what astute abode, Empowered with what malevolence Auspiciously withheld.

To his adroit Creator Ascribe no less the praise; Beneficent, believe me, His eccentricities.

## CV

YOU'VE seen balloons set, haven't you? So stately they ascend It is as swans discarded you For duties diamond.

Their liquid feet go softly out
Upon a sea of blond;
They spurn the air as 't were to mean
For creatures so renowned.

Their ribbons just beyond the eye, They struggle some for breath, And yet the crowd applauds below; They would not encore death.

The gilded creature strains and spins,
Trips frantic in a tree,
Tears open her imperial veins
And tumbles in the sea.

The crowd retire with an oath
The dust in streets goes down,
And clerks in counting-rooms observe,
"'T was only a balloon."

### **CVI**

THE cricket sang,
And set the sun,
And workmen finished, one by one,
Their seam the day upon.

The low grass loaded with the dew, The twilight stood as strangers do With hat in hand, polite and new, To stay as if, or go.

A vastness, as a neighbor, came,— A wisdom without face or name, A peace, as hemispheres at home,— And so the night became.

## CVI

DRAB habitation of whom? Tabernacle or tomb, Or dome of worm, Or porch of gnome, Or some elf's catacomb?

(Sent with a cocoon to her little nephew.)

### **CVIII**

A sloop<sup>150</sup> of amber slips away Upon an ether sea, And wrecks in peace a purple tar, The son of ecstasy.

### CIX

OF bronze and blaze The north, to-night! So adequate its forms, So preconcerted with itself, So distant to alarms,— An unconcern so sovereign To universe, or me, It paints my simple spirit With tints of majesty, Till I take vaster attitudes, And strut upon my stem, Disdaining men and oxygen, For arrogance of them.

But their competeless show Will entertain the centuries When I am, long ago, An island in dishonored grass, Whom none but daisies know.

My splendors are menagerie;

## CX

How the old mountains drip with sunset, And the brake of dun! How the hemlocks are tipped in tinsel By the wizard sun!

How the old steeples hand the scarlet,
Till the ball is full,—
Have I the lip of the flamingo
That I dare to tell?
Then, how the fire ebbs like billows,
Touching all the grass
With a departing, sapphire feature,
As if a duchess pass!

How a small dusk crawls on the village Till the houses blot; And the odd flambeaux no men carry Glimmer on the spot!

Now it is night in nest and kennel, And where was the wood, Just a dome of abyss is nodding Into solitude!—

These are the visions baffled Guido; Titian never told; Domenichino 151 dropped the pencil, Powerless to unfold.

### CXI

THE murmuring of bees has ceased; But murmuring of some Posterior, prophetic, Has simultaneous come,—

The lower metres of the year, When nature's laugh is done,— The Revelations of the book Whose Genesis in June.

## **PART THREE**

## **LOVE**

IT's all I have to bring to-day,
This, and my heart beside,
This, and my heart, and all the fields,
And all the meadows wide.
Be sure you count, should I forget,—
Some one the sun could tell,—
This, and my heart, and all the bees
Which in the clover dwell.

## I

MINE by the right of the white election! Mine by the royal seal! Mine by the sign in the scarlet prison Bars cannot conceal!

Mine, here in vision and in veto!
Mine, by the grave's repeal
Titled, confirmed,—delirious charter!
Mine, while the ages steal!

### II

YOU left me, sweet, two legacies,— A legacy of love A Heavenly Father would content, Had He the offer of;

You left me boundaries of pain Capacious as the sea, Between eternity and time, Your consciousness and me.

## III

ALTER? When the hills do. Falter? When the sun Question if his glory Be the perfect one.

Surfeit? When the daffodil Doth of the dew: Even as herself, O friend!

I will of you!

## IV

ELYSIUM<sup>152</sup> is as far as to The very nearest room, If in that room a friend await Felicity or doom.

What fortitude the soul contains, That it can so endure The accent of a coming foot, The opening of a door!

## V

DOUBT me, my dim companion!
Why, God would be content
With but a fraction of the love
Poured thee without a stint. 153
The whole of me, forever,
What more the woman can,—
Say quick, that I may dower 154 thee
With last delight I own!

It cannot be my spirit,
For that was thine before;
I ceded all of dust I knew,—
What opulence the more
Had I, a humble maiden,

Whose farthest of degree Was that she might Some distant heaven, Dwell timidly with thee!

## VI

IF you were coming in the fall, I'd brush the summer by With half a smile and half a spurn, As housewives do a fly.

If I could see you in a year, I'd wind the months in balls, And put them each in separate drawers, Until their time befalls.

If only centuries delayed, I'd count them on my hand, Subtracting till my fingers dropped

## Into Van Diemen's land. 155

If certain, when this life was out, That yours and mine should be, I'd toss it yonder like a rind, And taste eternity.

But now, all ignorant of the length Of time's uncertain wing, It goads me, like the goblin bee, That will not state its sting.

### VII

I hide myself within my flower, That wearing on your breast, You, unsuspecting, wear me too— And angels know the rest.

I hide myself within my flower, That, fading from your vase, You, unsuspecting, feel for me Almost a loneliness.

## VIII

THAT I did always love, I bring thee proof: That till I loved I did not love enough.

That I shall love alway,

I offer thee
That love is life,
And life hath immortality.
This, dost thou doubt, sweet?
Then have I
Nothing to show
But Calvary.

# IX

HAVE you got a brook in your little heart,
Where bashful flowers blow,
And blushing birds go down to drink,
And shadows tremble so?

And nobody knows, so still it flows, That any brook is there; And yet your little draught of life Is daily drunken there.

Then look out for the little brook in March,

And the snows come hurrying from the hills, And the bridges often go.

And later, in August it may be, When the meadows parching lie, Beware, lest this little brook of life Some burning noon go dry!

When the rivers overflow,

#### X

As if some little Arctic flower, Upon the polar hem, Went wandering down the latitudes, Until it puzzled came To continents of summer, To firmaments of sun, To strange, bright crowds of flowers, And birds of foreign tongue! I say, as if this little flower To Eden wandered in— What then? Why, nothing, only Your inference therefrom!

## XI

MY river runs to thee: Blue sea, wilt welcome me?

My river waits reply.
Oh sea, look graciously!

I'll fetch thee brooks From spotted nooks,—

Say, sea, Take me!

## XII

I cannot live with you,
It would be life,
And life is over there
Behind the shelf

The sexton keeps the key to, Putting up Our life, his porcelain, Like a cup

Discarded of the housewife, Quaint or broken; A newer Sèvres 156 pleases, Old ones crack. I could not die with you,
For one must wait
To shut the other's gaze down,—
You could not.

And I, could I stand by And see you freeze, Without my right of frost, Death's privilege?

Nor could I rise with you, Because your face Would put out Jesus', That new grace Glow plain and foreign On my homesick eye, Except that you, than he Shone closer by.

They'd judge us—how?
For you served Heaven, you know,
Or sought to;
I could not,

Because you saturated sight, And I had no more eyes For sordid excellence As Paradise. And were you lost, I would be,
Though my name
Rang loudest
On the heavenly fame.

And were you saved, And I condemned to be Where you were not, That self were hell to me.

So we must keep apart, You there, I here, With just the door ajar That oceans are, And prayer, And that pale sustenance, Despair!

# XIII

THERE came a day at summer's full Entirely for me; I thought that such were for the saints, Where revelations be.

The sun, as common, went abroad,
The flowers, accustomed, blew,
As if no sail the solstice passed
That maketh all things new.
The time was scarce profaned

speech;
The symbol of a word
Was needless, as at sacrament
The wardrobe of our Lord.

Each was to each the sealed church, Permitted to commune this time, Lest we too awkward show At supper of the Lamb. 157

The hours slid fast, as hours will, Clutched tight by greedy hands; So faces on two decks look back, Bound to opposing lands.

And so, when all the time had failed, Without external sound, Each bound the other's crucifix, We gave no other bond.

# Sufficient troth that we shall rise—Deposed, at length, the grave-To that new marriage, justified Through Calvaries of Love!

## XIV

I'M ceded, I've stopped being theirs; The name they dropped upon my face With water, in the country church, Is finished using now, And they can put it with my dolls, My childhood, and the string of spools I've finished threading too.

Baptized before without the choice, But this time consciously, of grace Unto supremest name, Called to my full, the crescent dropped, Existence's whole arc filled up With one small diadem. My second rank, too small the first, Crowned, crowing on my father's breast, A half unconscious queen;

But this time, adequate, erect, With will to choose or to reject,

And I choose—just a throne.

# XV

'T was a long parting, but the time For interview had come; Before the judgment-seat of God, The last and second time

These fleshless lovers met, A heaven in a gaze, A heaven of heavens, the privilege Of one another's eyes.

No lifetime set on them, Apparelled as the new Unborn, except they had beheld, Was bridal e'er like this?

Born everlasting now.

A paradise, the host, And cherubim and seraphim The most familiar guest.

# XVI

I'M wife; I've finished that, That other state; I'm Czar, I'm woman now: It's safer so.

How odd the girl's life looks Behind this soft eclipse! I think that earth seems so To those in heaven now.

This being comfort, then That other kind was pain; But why compare?



## XVII

SHE rose to his requirement, dropped The playthings of her life To take the honorable work Of woman and of wife.

If aught she missed in her new day Of amplitude, or awe, Or first prospective, or the gold In using wore away,

It lay unmentioned, as the sea Develops pearl and weed, But only to himself is known The fathoms they abide.

## XVIII

COME slowly, Eden! Lips unused to thee, Bashful, sip thy jasmines, As the fainting bee,

Reaching late his flower, Round her chamber hums, Counts his nectars—enters, And is lost in balms! 159

#### XIX

OF all the souls that stand create I have elected one.

When sense from spirit files away, And subterfuge is done;

When that which is and that which was Apart, intrinsic, stand, And this brief tragedy of flesh Is shifted like a sand;

When figures show their royal front And mists are carved away,—
Behold the atom I preferred
To all the lists 160 of clay!

## XX

I have no life but this, To lead it here; Nor any death, but lest Dispelled from there;

Nor tie to earths to come, Nor action new, Except through this extent, The realm of you.

# XX

YOUR riches taught me poverty.

Myself a millionnaire

In little wealths,—as girls could boast,—

Till broad as Buenos Ayre, 161

A different Peru; And I esteemed all poverty, For life's estate with you.

You drifted your dominions

Of mines I little know, myself, But just the names of gems,— The colors of the commonest;

And scarce of diadems

So much that, did I meet the queen, Her glory I should know: But this must be a different wealth, To miss it beggars so.

I'm sure 't is India all day
To those who look on you
Without a stint, without a blame,—
Might I but be the Jew!

I'm sure it is Golconda, 162
Beyond my power to deem,—
To have a smile for mine each day,
How better than a gem!

At least, it solaces to know
That there exists a gold,
Although I prove it just in time
Its distance to behold!

It's far, far treasure to surmise, And estimate the pearl That slipped my simple fingers through While just a girl at school!

#### XXII

I gave myself to him, And took himself for pay. The solemn contract of a life Was ratified this way.

The wealth might disappoint,

Myself a poorer prove
Than this great purchaser suspect,
The daily own<sup>163</sup> of Love
Depreciate the vision;
But, till the merchant buy,
Still fable, in the isles of spice,
The subtle cargoes lie.

At least, 't is mutual risk,— Some found it mutual gain;

Sweet debt of Life,—each night to owe, Insolvent, every noon.

# XXIII

"GOING to him! Happy letter! Tell him

Tell him the page I didn't write;
Tell him I only said the syntax,
And left the verb and the pronoun out.
Tell him just how the fingers hurried,
Then how they waded, slow, slow,
slow;
And then you wished you had eyes in

your pages, So you could see what moved them so.

"Tell him it wasn't a practised writer, You guessed, from the way the sentence you,
As if it held but the might of a child;
You almost pitied it, you, it worked so.
Tell him—No, you may quibble there,
For it would split his heart to know it,
And then you and I were silenter.
"Tell him night finished before we

You could hear the bodice tug, behind

toiled;

finished,

cautious,

And you got sleepy and begged to be ended—
What could it hinder so, to say?
Tell him just how she sealed you,

And the old clock kept neighing 'day!'

But if he ask where you are hid Until to-morrow,—happy letter!
Gesture, coquette, 164 and shake your head!"

# XXIV

THE way I read a letter's this:
'T is first I lock the door,
And push it with my fingers next,
For transport it be sure.

To counteract a knock;
Then draw my little letter forth
And softly pick its lock.
Then, glancing narrow at the wall,

And then I go the furthest off

Then, glancing narrow at the wall, And narrow at the floor, For firm conviction of a mouse Not exorcised before, Peruse how infinite I am To—no one that you know!

And sigh for lack of heaven,—but not

The heaven the creeds bestow.

# XXV

WILD nights! Wild nights!
Were I with thee,
Wild nights should be
Our luxury!

Futile the winds
To a heart in port,—
Done with the compass,
Done with the chart.

Rowing in Eden! Ah! the sea! Might I but moor



# XXVI

THE night was wide, and furnished scant
With but a single star,

That often as a cloud it met Blew out itself for fear.

The wind pursued the little bush, And drove away the leaves November left; then clambered up And fretted in the eaves.

No squirrel went abroad;
A dog's belated feet
Like intermittent plush were heard
Adown the empty street.

To feel if blinds be fast, And closer to the fire Her little rocking-chair to draw, And shiver for the poor,

The housewife's gentle task.

"How pleasanter," said she
Unto the sofa opposite,

"The sleet than May—no thee!"

#### XXVII

DID the harebell loose her girdle To the lover bee, Would the bee the harebell hallow Much as formerly?

Did the paradise, persuaded, Yield her moat of pearl, Would the Eden be an Eden, Or the earl an earl?

### XXVIII

A charm invests a face Imperfectly beheld,— The lady dare not lift her veil For fear it be dispelled.

But peers beyond her mesh, And wishes, and denies,— Lest interview annul a want That image satisfies.

# XXIX

THE rose did caper on her cheek, Her bodice rose and fell, Her pretty speech, like drunken men, Did stagger pitiful.

Her fingers fumbled at her work,— Her needle would not go; What ailed so smart a little maid It puzzled me to know,

Till opposite I spied a cheek That bore another rose; Just opposite, another speech That like the drunkard goes;

A vest that, like the bodice, danced To the immortal tune,—
Till those two troubled little clocks

Till those two troubled little clocks Ticked softly into one.

#### XXX

IN lands I never saw, they say, Immortal Alps look down, Whose bonnets touch the firmament, Whose sandals touch the town,—

Meek at whose everlasting feet A myriad daisies play. Which, sir, are you, and which am I, Upon an August day?

# XXXI

THE moon is distant from the sea, And yet with amber hands She leads him, docile as a boy, Along appointed sands.

He never misses a degree; Obedient to her eye, He comes just so far toward the town, Just so far goes away.

Oh, Signor, thine the amber hand, And mine the distant sea,— Obedient to the least command Thine eyes impose on me.

# XXXII

HE put the belt around my life,—
I heard the buckle snap,
And turned away, imperial,
My lifetime folding up
Deliberate, as a duke would do
A kingdom's title-deed,—
Henceforth a dedicated sort,
A member of the cloud.

Yet not too far to come at call,
And do the little toils
That make the circuit of the rest,
And deal occasional smiles
To lives that stoop to notice mine

# And kindly ask it in,— Whose invitation, knew you not For whom I must decline?

# XXXIII

I held a jewel in my fingers And went to sleep.

The day was warm, and winds were prosy; I said: "'T will keep."

I woke and chid my honest fingers,— The gem was gone; And now an amethyst remembrance Is all I own.

# XXXIV

WHAT if I say I shall not wait?
What if I burst the fleshly gate
And pass, escaped, to thee?
What if I file this mortal off,
See where it hurt me,-that's enough,—
And wade in liberty?

They cannot take us any more,—
Dungeons may call, and guns implore;
Unmeaning now, to me,
As laughter was an hour ago,
Or laces, or a travelling show,
Or who died yesterday!

# XXXV

PROUD of my broken heart since thou didst break it.

Proud of the pain I did not feel till thee, Proud of my night since thou with moons dost

slake it,

Not to partake thy passion, my humility.

#### XXXVI

MY worthiness is all my doubt, His merit all my fear, Contrasting which, my qualities Do lowlier appear;

Lest I should insufficient prove
For his beloved need,
The chiefest apprehension
Within my loving creed.
So I, the undivine abode
Of his elect content,

Conform my soul as 't were a church

Unto her sacrament.

#### XXXVII

LOVE is anterior to life, Posterior to death, Initial of creation, and The exponent of breath.

## XXXVIII

ONE blessing had I, than the rest So larger to my eyes That I stopped gauging, satisfied, For this enchanted size.

It was the limit of my dream,
The focus of my prayer,—
A perfect, paralyzing bliss
Contented as despair.

I knew no more of want or cold, Phantasms both become, For this new value in the soul, Supremest earthly sum.

The heaven below the heaven above Obscured with ruddier hue. Life's latitude leant over-full; The judgment perished, too.

Why joys so scantily disburse, Why Paradise defer, Why floods are served to us in bowts,— I speculate no more.

#### XXXIX

WHEN roses cease to bloom, dear, And violets are done, When bumble-bees in solemn flight Have passed beyond the sun,

The hand that paused to gather Upon this summer's day Will idle lie, in Auburn,—166
Then take my flower, pray!

#### XL

SUMMER for thee grant I may be When summer days are flown!
Thy music still when whippoorwill And oriole are done!

For thee to bloom, I'll skip the tomb And sow my blossoms o'er! Pray gather me, Anemone, Thy flower forevermore!

#### XLI

SPLIT the lark and you'll find the music, Bulb after bulb, in silver rolled, Scantily dealt to the summer morning, Saved for your ear when lutes be old.

Loose the flood, you shall find it patent, Gush after gush, reserved for you; Scarlet experiment! sceptic Thomas, 167
Now, do you doubt that your bird was true?

#### XLII

TO lose thee, sweeter than to gain All other hearts I knew.
'T is true the drought is destitute,
But then I had the dew!

The Caspian<sup>168</sup> has its realms of sand, Its other realm of sea; Without the sterile perquisite<sup>169</sup> No Caspian could be.

# XLIII

POOR little heart!
Did they forget thee?
Then dinna 170 care! Then dinna care!
Proud little heart!
Did they forsake thee?
Be debonair! Be debonair!

Frail little heart!
I would not break thee:
Could'st credit me? Could'st credit me?

Gay little heart! Like morning glory



#### XLIV

THERE is a word Which bears a sword Can pierce an armed man. It hurls its barbed syllables,— At once is mute again. But where it fell The saved will tell On patriotic day, Some epauletted 171 brother Gave his breath away. Wherever runs the breathless sun, Wherever roams the day, There is its noiseless onset, There is its victory! Behold the keenest marksman!

## The most accomplished shot! Time's sublimest target Is a soul "forgot"!

#### **XLV**

I'vE got an arrow here; Loving the hand that sent it, I the dart revere.

Fell, they will say, in "skirmish"! Vanquished, my soul will know, By but a simple arrow Sped by an archer's bow.

#### **XLVI**

HE fumbles at your spirit
As players at the keys
Before they drop full music on;
He stuns you by degrees,

Prepares your brittle substance For the ethereal blow, By fainter hammers, further heard, Then nearer, then so slow

Your breath has time to straighten, Your brain to bubble cool,— Deals one imperial thunderbolt



#### **XLVII**

HEART, we will forget him! You and I, to-night! You may forget the warmth he gave, I will forget the light.

When you have done, pray tell me, That I my thoughts may dim; Haste! lest while you're lagging, I may remember him!

#### XLVIII

FATHER, I bring thee not myself,— That were the little load; I bring thee the imperial heart I had not strength to hold.

The heart I cherished in my own Till mine too heavy grew, Yet strangest, heavier since it went, Is it too large for you?

#### XLIX

WE outgrow love like other things And put it in the drawer, Till it an antique fashion shows Like costumes grandsires 172 wore.

#### L

NOT with a club the heart is broken, Nor with a stone; A whip, so small you could not see it, I've known

To lash the magic creature Till it fell, Yet that whip's name too noble Then to tell.

Magnanimous of bird By boy descried, To sing unto the stone



#### L

MY friend must be a bird, Because it flies! Mortal my friend must be, Because it dies! Barbs has it, like a bee. Ah, curious friend, Thou puzzlest me!

#### LII

HE touched me, so I live to know
That such a day, permitted so,
I groped upon his breast.
It was a boundless place to me,
And silenced, as the awful sea
Puts minor streams to rest.

And now, I'm different from before, As if I breathed superior air, Or brushed a royal gown; My feet, too, that had wandered so, My gypsy face transfigured now To tenderer renown.

#### LIII

LET me not mar that perfect dream By an auroral stain, But so adjust my daily night That it will come again.

## LIV

I live with him, I see his face; I go no more away For visitor, or sundown; Death's single privacy,

The only one forestalling mine, And that by right that he Presents a claim invisible, No wedlock granted me.

I live with him, I hear his voice, I stand alive to-day To witness to the certainty

## Of immortality

Taught me by Time,—the lower way, Conviction every day,— That life like this is endless, Be judgment what it may.

## LV

I envy seas whereon he rides, I envy spokes of wheels Of chariots that him convey, I envy speechless hills

That gaze upon his journey; How easy all can see What is forbidden utterly As heaven, unto me!

I envy nests of sparrows
That dot his distant eaves,
The wealthy fly upon his pane,

## The happy, happy leaves

That just abroad his window Have summer's leave to be, The earrings of Pizarro 174 Could not obtain for me. I envy light that wakes him, And bells that boldly ring To tell him it is noon abroad,— Myself his noon could bring, Yet interdict my blossom

And abrogate my bee, Lest noon in everlasting night Drop Gabriel 175 and me.

#### LVI

A solemn thing it was, I said, A woman white 176 to be, And wear, if God should count me fit, Her hallowed mystery.

A timid thing to drop a life
Into the purple well,
Too plummetless that it come back
Eternity until.

#### LVII

TITLE divine is mine The Wife without

The Sign. Acute degree Conferred on me— Empress of Calvary. Royal all but the Crown— Betrothed, without the swoon God gives us women When two hold Garnet to garnet, Gold to gold— Born—Bridalled—

## Shrouded— In a day Tri-Victory— "My Husband" Women say

Stroking the melody, Is this the way?

# PART FOUR

## TIME AND ETERNITY

## I

ONE dignity delays for all, One mitred 177 afternoon. None can avoid this purple, None evade this crown. Coach it insures, and footmen,

Chamber and state and throng; Bells, also, in the village, As we ride grand along.

What dignified attendants, What service when we pause! How loyally at parting Their hundred hats they raise! How pomp surpassing ermine, <sup>178</sup>
When simple you and I
Present our meek escutcheon, <sup>179</sup>
And claim the rank to die!

## II

DELAYED till she had ceased to know, Delayed till in its vest of snow

Her loving bosom lay.

An hour behind the fleeting breath, Later by just an hour than death,—

Oh, lagging yesterday!

Could she have guessed that it would be;

Could but a crier of the glee

Have climbed the distant hill;

Had not the bliss so slow a pace,— Who knows but this surrendered face Were undefeated still?

Oh, if there may departing be

Any forgot by victory
In her imperial round,
Show them this meek apparelled thing,
That could not stop to be a king,
Doubtful if it be crowned!

#### $\prod$

DEPARTED to the judgment, A mighty afternoon; Great clouds like ushers leaning, Creation looking on.

The flesh surrendered, cancelled, The bodiless begun; Two worlds, like audiences, disperse And leave the soul alone.

## IV

SAFE in their alabaster chambers, Untouched by morning and untouched by noon,

Sleep the meek members of the resurrection, Rafter of satin, and roof of stone.

Light laughs the breeze in her castle of sunshine;
Babbles the bee in a stolid ear;

Pipe the sweet birds in ignorant cadence,—

Ab what saggesty perished bere!

Ah, what sagacity perished here!

Grand go the years in the crescent above them;
Worlds scoop their arcs, and firmaments

row,
Diadems drop and Doges 180 surrender,

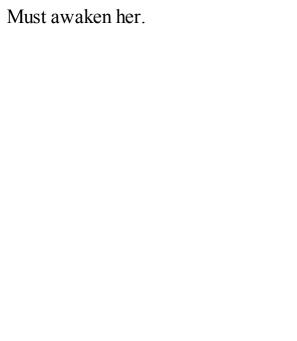
Diadems drop and Doges 180 surrender, Soundless as dots on a disk of snow.

#### V

ON this long storm the rainbow rose, On this late morn the sun; The clouds, like listless elephants, Horizons straggled down.

The birds rose smiling in their nests, The gales indeed were done; Alas! how heedless were the eyes On whom the summer shone!

The quiet nonchalance of death No daybreak can bestir; The slow archangel's syllables



## VI

MY cocoon tightens, colors tease, I'm feeling for the air;
A dim capacity for wings
Degrades the dress I wear.

A power of butterfly must be The aptitude to fly, Meadows of majesty concedes And easy sweeps of sky.

So I must baffle at the hint And cipher at the sign, And make much blunder, if at last I take the clew  $\frac{182}{}$  divine.

#### VII

EXULTATION is the going
Of an inland soul to sea,—
Past the houses, past the headlands,
Into deep eternity!

Bred as we, among the mountains, Can the sailor understand The divine intoxication Of the first league out from land?

#### VIII

LOOK back on time with kindly eyes, He doubtless did his best; How softly sinks his trembling sun In human nature's west!

#### IX

A train went through a burial gate, A bird broke forth and sang, And trilled, and quivered, and shook his throat Till all the churchyard rang;

And then adjusted his little notes, And bowed and sang again. Doubtless, he thought it meet of him To say good-by to men.

#### X

I died for beauty, but was scarce Adjusted in the tomb, When one who died for truth was lain In an adjoining room.

He questioned softly why I failed? "For beauty," I replied.

"And I for truth,—the two are one; We brethren are," he said.

And so, as kinsmen met a night, We talked between the rooms, Until the moss had reached our lips, And covered up our names.

## XI

HOW many times these low feet staggered,

Only the soldered mouth can tell; Try! can you stir the awful rivet?

Try! can you lift the hasps  $\frac{183}{}$  of steel?

Stroke the cool forehead, hot so often, Lift, if you can, the listless hair;

Handle the adamantine 184 fingers Never a thimble more shall wear.

Buzz the dull flies on the chamber window;

Brave shines the sun through the freckled pane;

Fearless the cobweb swings from the

# ceiling— Indolent housewife, in daisies lain!

#### XII

I like a look of agony, Because I know it's true; Men do not sham convulsion, Nor simulate a throe.

The eyes glaze once, and that is death. Impossible to feign
The beads upon the forehead
By homely anguish strung.

#### XIII

THAT short, potential stir
That each can make but once,
That bustle so illustrious
'T is almost consequence,

Is the *éclat* 185 of death.
Oh, thou unknown renown
That not a beggar would accept,
Had he the power to spurn!

#### XIV

I went to thank her,
But she slept;
Her bed a funnelled stone,
With nosegays 186 at the head and foot,
That travellers had thrown,

Who went to thank her;
But she slept.
'T was short to cross the sea
To look upon her like, alive,
But turning back 't was slow.

#### XV

I'VE seen a dying eye
Run round and round a room
In search of something, as it seemed,
Then cloudier become;
And then, obscure with fog,
And then be soldered down,
Without disclosing what it be,
'T were blessed to have seen.

#### XVI

THE clouds their backs together laid,
The north begun to push,
The forests galloped till they fell,
The lightning skipped like mice;
The thunder crumbled like a stuff—
How good to be safe in tombs,
Where nature's temper cannot reach,
Nor vengeance ever comes!

#### XVII

I never saw a moor,
I never saw the sea;
Yet know I how the heather looks,
And what a wave must be.

I never spoke with God, Nor visited in heaven; Yet certain am I of the spot As if the chart were given.

#### XVIII

GOD permits industrious angels Afternoons to play.

I met one,—forgot my school-mates, All, for him, straightway.

God calls home the angels promptly At the setting sun; I missed mine. How dreary marbles,

After playing Crown!

#### XIX

TO know just how he suffered would be dear;

To know if any human eyes were near To whom he could intrust his wavering gaze,

Until it settled firm on Paradise.

To know if he was patient, part content, Was dying as he thought, or different; Was it a pleasant day to die, And did the sunshine face his way? God,
Or what the distant say
At news that he ceased human nature
On such a day?

And wishes, had he any?

What was his furthest mind, of home, or

Just his sigh, accented,
Had been legible to me.
And was he confident until
III fluttered out in everlasting well?

And if he spoke, what name was best, What first, What one broke off with At the drowsiest?

Was he afraid, or tranquil? Might he know How conscious consciousness could

grow, Till love that was, and love too blest to

be, Meet—and the junction be Eternity?

# XX

THE last night that she lived, It was a common night, Except the dying; this to us Made nature different.

We noticed smallest things,—
Things overlooked before,
By this great light upon our minds
Italicized, as 't were.

That others could exist While she must finish quite, A jealousy for her arose So nearly infinite.

We waited while she passed; It was a narrow time, Too jostled were our souls to speak, At length the notice came.

She mentioned, and forgot;
Then lightly as a reed
Bent to the water, shivered scarce,
Consented, and was dead.

And we, we placed the hair,
And drew the head erect;
And then an awful leisure was,



#### XXI

NOT in this world to see his face Sounds long, until I read the place Where this is said to be But just the primer to a life Unopened, rare, upon the shelf, Clasped yet to him and me.

And yet, my primer suits me so
I would not choose a book to know
Than that, be sweeter wise;
Might some one else so learned be,
And leave me just my A B C,
Himself could have the skies.

#### XXII

THE bustle in a house
The morning after death
Is solemnest of industries
Enacted upon earth,—

The sweeping up the heart, And putting love away We shall not want to use again Until eternity.

# XXIII

I reason, earth is short, And anguish absolute. And many hurt; But what of that?

I reason, we could die: The best vitality Cannot excel decay; But what of that?

I reason that in heaven Somehow, it will be even, Some new equation given;



## XXIV

AFRAID? Of whom am I afraid? Not death; for who is he? The porter of my father's lodge As much abasheth me.

Of life? 'T were odd I fear a thing That comprehendeth me In one or more existences At Deity's decree.

Of resurrection? Is the east Afraid to trust the morn With her fastidious forehead? As soon impeach my crown!

## XXV

THE sun kept setting, setting still; No hue of afternoon Upon the village I perceived,— From house to house 't was noon.

The dusk kept dropping, dropping still; No dew upon the grass, But only on my forehead stopped, And wandered in my face.

My feet kept drowsing, drowsing still, My fingers were awake; Yet why so little sound myself

# Unto my seeming make?

How well I knew the light before! I could not see it now.

'T is dying, I am doing; but I'm not afraid to know.

#### XXVI

Two swimmers wrestled on the spar 190 Until the morning sun,
When one turned smiling to the land.
O God, the other one!
The stray ships passing spied a face

The stray ships passing spied a face Upon the waters borne, With eyes in death still begging raised, And hands beseeching thrown.

# XXVII

BECAUSE I could not stop for Death, He kindly stopped for me; The carriage held but just ourselves And Immortality.

We slowly drove, he knew no haste, And I had put away My labor, and my leisure too, For his civility.

We passed the school where children played At wrestling in a ring; We passed the fields of gazing grain, We passed the setting sun.

We paused before a house that seemed A swelling of the ground; The roof was scarcely visible, The cornice 191 but a mound.

Since then 't is centuries; but each Feels shorter than the day I first surmised the horses' heads Were toward eternity.

#### XXVIII

SHE went as quiet as the dew From a familiar flower. Not like the dew did she return At the accustomed hour!

She dropt as softly as a star From out my summer's eve; Less skillful than Leverrier 192 It's sorer to believe!

#### XXIX

AT last to be identified!
At last, the lamps upon thy side,
The rest of life to see!
Past midnight, past the morning star!
Past sunrise! Ah! what leagues there are
Between our feet and day!

#### XXX

EXCEPT to heaven, she is nought; Except for angels, lone; Except to some wide-wandering bee, A flower superfluous blown;

Except for winds, provincial; Except by butterflies, Unnoticed as a single dew That on the acre lies.

The smallest housewife in the grass, Yet take her from the lawn, And somebody has lost the face



#### XXXI

DEATH is a dialogue between
The spirit and the dust.
"Dissolve," says Death. The Spirit, "Sir,
I have another trust."

Death doubts it, argues from the ground. The Spirit turns away,
Just laying off, for evidence,
An overcoat of clay.

#### XXXII

IT was too late for man, But early yet for God; Creation impotent to help, But prayer remained our side.

How excellent the heaven, When earth cannot be had; How hospitable, then, the face Of our old neighbor, God!

# XXXIII<u>193</u>

WHEN I was small, a woman died. To-day her only boy Went up from the Potomac, His face all victory, To look at her; how slowly The seasons must have turned Till bullets clipt an angle, And he passed quickly round! If pride shall be in Paradise I never can decide: Of their imperial conduct,

No person testified.

But proud in apparition,
That woman and her boy
Pass back and forth before my brain,
As ever in the sky.

#### XXXIV

THE daisy follows soft the sun,
And when his golden walk is done,
Sits shyly at his feet.
He, waking, finds the flower near.
"Wherefore, marauder, art thou here?"
"Because, sir, love is sweet!"

We are the flower, Thou the sun! Forgive us, if as days decline, We nearer steal to Thee,—
Enamoured of the parting west,
The peace, the flight, the amethyst,
Night's possibility!

#### XXXV

No rack can torture me, My soul's. at liberty. Behind this mortal bone There knits a bolder one

You cannot prick with saw, Nor rend with scymitar. 195 Two bodies therefore be; Bind one, and one will flee.

The eagle of his nest No easier divest And gain the sky, Than mayest thou,

#### Except thyself may be Thine enemy; Captivity is consciousness, So's liberty.

#### XXXVI

I lost a world the other day. Has anybody found? You'll know it by the row of stars Around its forehead bound.

A rich man might not notice it; Yet to my frugal eye Of more esteem than ducats. 196 Oh, find it, sir, for me!

#### XXXVII

IF I shouldn't be alive
When the robins come,
Give the one in red cravat 197
A memorial crumb.

If I couldn't thank you, Being just asleep, You will know I'm trying With my granite lip!

# XXXVIII

SLEEP is supposed to be, By souls of sanity, The shutting of the eye.

Sleep is the station grand Down which on either hand The hosts of witness stand!

Morn is supposed to be, By people of degree, The breaking of the day. Morning has not occurred!

That shall aurora be

#### East of eternity;

One with the banner gay, One in the red array,— That is the break of day.

#### XXXIX

I shall know why, when time is over, And I have ceased to wonder why; Christ will explain each separate anguish In the fair schoolroom of the sky.

He will tell me what Peter promised, And I, for wonder at his woe, I shall forget the drop of anguish That scalds me now, that scalds me now.

#### XL

I never lost as much but twice, And that was in the sod; Twice have I stood a beggar Before the door of God!

Angels, twice descending, Reimbursed my store. Burglar, banker, father, I am poor once more!

#### XLI

LET down the bars, O Death!
The tired flocks come in
Whose bleating ceases to repeat,
Whose wandering is done.

Thine is the stillest night,
Thine the securest fold; 199
Too near thou art for seeking thee,
Too tender to be told.

#### XLII

GOING to heaven! I don't know when, Pray do not ask me how,— Indeed, I'm too astonished To think of answering you! Going to heaven!— How dim it sounds! And yet it will be done As sure as flocks go home at night Unto the shepherd's arm!

Perhaps you're going too! Who knows? If you should get there first, Save just a little place for me Close to the two I lost! The smallest "robe" will fit me,

And just a bit of "crown"; For you know we do not mind our dress When we are going home.

I'm glad I don't believe it,
For it would stop my breath,
And I'd like to look a little more
At such a curious earth!
I am glad they did believe it
Whom I have never found
Since the mighty autumn afternoon
I left them in the ground.

#### XLIII

AT least to pray is left, is left.

O Jesus! in the air
I know not which thy chamber is,—
I'm knocking everywhere.

Thou stirrest earthquake in the South, And maelstrom in the sea; Say, Jesus Christ of Nazareth, Hast thou no arm for me?

#### **XLIV**

STEP lightly on this narrow spot! The broadest land that grows Is not so ample as the breast These emerald seams enclose.

Step lofty; for this name is told As far as cannon dwell, Or flag subsist, or fame export Her deathless syllable.

#### XLV

MORNS like these we parted; Noons like these she rose, Fluttering first, then firmer, To her fair repose.

Never did she lisp it, And 't was not for me; She was mute from transport, I, from agony!

Till the evening, nearing, One the shutters drew— Quick! a sharper rustling!

# And this linnet<sup>200</sup> flew!

#### XLVI

A death-blow is a life-blow to some Who, till they died, did not alive become;

Who, had they lived, had died, but when They died, vitality begun.

#### XLVII

I read my sentence steadily, Reviewed it with my eyes, To see that I made no mistake In its extremest clause,—

The date, and manner of the shame; And then the pious form That "God have mercy" on the soul The jury voted him.

I made my soul familiar
With her extremity,
That at the last it should not be
A novel agony,

But she and Death, acquainted, Meet tranquilly as friends, Salute and pass without a hint— And there the matter ends.

#### XLVIII

I have not told my garden yet, Lest that should conquer me; I have not quite the strength now To break it to the bee.

I will not name it in the street, For shops would stare, that I, So shy, so very ignorant, Should have the face to die.

The hillsides must not know it, Where I have rambled so, Nor tell the loving forests

## The day that I shall go,

Nor lisp it at the table, Nor heedless by the way Hint that within the riddle One will walk to-day!

#### XLIX

THEY dropped like flakes, they dropped like stars, Like petals from a rose,

When suddenly across the June A wind with fingers goes.

They perished in the seamless grass,— No eye could find the place; But God on his repealless 202 list

Can summon every face.

#### L

THE only ghost I ever saw Was dressed in mechlin, 203—so: He wore no sandal on his foot, And stepped like flakes of snow. His gait was soundless, like the bird, But rapid, like the roe; His fashions quaint, mosaic. 204 Or, haply, mistletoe. His conversation seldom,

His laughter like the breeze
That dies away in dimples
Among the pensive trees.
Our interview was transient,—
Of me, himself was shy;

# And God forbid I look behind Since that appalling day!

#### LI

SOME, too fragile for winter winds, The thoughtful grave encloses,—
Tenderly tucking them in from frost Before their feet are cold.

Never the treasures in her nest The cautious grave exposes, Building where schoolboy dare not look And sportsman is not bold.

This covert<sup>205</sup> have all the children Early aged, and often cold,—
Sparrows unnoticed by the Father;
Lambs for whom time had not a fold.

#### LII

As by the dead we love to sit, Become so wondrous dear, As for the lost we grapple, Though all the rest are here,—

In broken mathematics We estimate our prize, Vast, in its fading ratio, To our penurious eyes!

#### LIII

DEATH sets a thing significant The eye had hurried by, Except a perished creature Entreat us tenderly

To ponder little workmanships
In crayon or in wool,
With "This was last her fingers did,"
Industrious until
The thimble weighed too heavy,

The stitches stopped themselves, And then 't was put among the dust Upon the closet shelves.

A book I have, a friend gave, Whose pencil, here and there, Had notched the place that pleased him,

At rest his fingers are.

Now, when I read, I read not, For interrupting tears Obliterate the etchings

Too costly for repairs.

## LIV

I went to heaven,— 'T was a small town, Lit with a ruby, Lathed<sup>206</sup> with down. Stiller than the fields At the full dew, Beautiful as pictures No man drew. People like the moth, Of mechlin, frames, Duties of gossamer, And eider 207 names. Almost contented I could be 'Mong such unique



## LV

THEIR height in heaven comforts not, Their glory nought to me; 'T was best imperfect, as it was; I'm finite, I can't see.

The house of supposition,
The glimmering frontier
That skirts the acres of perhaps,
To me shows insecure.

The wealth I had contented me; If 't was a meaner size, Then I had counted it until

# It pleased my narrow eyes

Better than larger values, However true their show; This timid life of evidence Keeps pleading, "I don't know."

## LVI

THERE is a shame of nobleness Confronting sudden pelf,—208
A finer shame of ecstasy Convicted of itself.

A best disgrace a brave man feels, Acknowledged of the brave,— One more "Ye Blessed" to be told; But this involves the grave.

## LVII

A triumph may be of several kinds. There's triumph in the room When that old imperator, 209 Death, By faith is overcome.

There's triumph of the finer mind When truth, affronted long, Advances calm to her supreme, Her God her only throng.

A triumph when temptation's bribe Is slowly handed back, One eye upon the heaven renounced And one upon the rack.

Severer triumph, by himself Experienced, who can pass Acquitted from that naked bar, Jehovah's countenance!

#### LVIII

POMPLESS no life can pass away; The lowliest career

To the same pageant wends $\frac{210}{1}$  its way As that exalted here.

How cordial is the mystery!

The hospitable pall

A "this way" beckons spaciously,—

A miracle for all!

### LIX

I noticed people disappeared, When but a little child,— Supposed they visited remote, Or settled regions wild.

Now know I they both visited And settled regions wild, But did because they died,—a fact Withheld the little child!

## LX

I had no cause to be awake,
My best was gone to sleep,
And morn a new politeness took
And failed to wake them up,
But called the others clear,
And passed their curtains by.
Sweet morning, when I over-sleep,
Knock, recollect, for me!

I looked at sunrise once, And then I looked at them, And wishfulness in me arose For circumstance the same. 'T was such an ample peace, It could not hold a sigh,— 'T was Sabbath with the bells divorced, 'T was sunset all the day.

So choosing but a gown And taking but a prayer,

The only raiment I should need, I struggled, and was there.

## LXI

IF anybody's friend be dead, It's sharpest of the theme The thinking how they walked alive, At such and such a time.

Their costume, of a Sunday, Some manner of the hair,— A prank nobody knew but them, Lost, in the sepulchre.

How warm they were on such a day: You almost feel the date, So short way off it seems; and now, They're centuries from that.

You try to touch the smile,

said;

And dip your fingers in the frost:
When was it, can you tell,

You asked the company to tea,
Acquaintance, just a few,

And chatted close with this grand thing

How pleased they were at what you

Past bows and invitations, Past interview, and vow,

That don't remember you?

## Past what ourselves can estimate,— That makes the quick of woe!

## LXII

OUR journey had advanced; Our feet were almost come To that odd fork in Being's road, Eternity by term.

Our pace took sudden awe, Our feet reluctant led. Before were cities, but between, The forest of the dead.

Retreat was out of hope,— Behind, a sealed route, Eternity's white flag before,



## LXIII

AMPLE make this bed.
Make this bed with awe;
In it wait till judgment break
Excellent and fair.

Be its mattress straight, Be its pillow round; Let no sunrise' yellow noise Interrupt this ground.

## **LXIV**

ON such a night, or such a night, Would anybody care If such a little figure Slipped quiet from its chair,

So quiet, oh, how quiet! That nobody might know But that the little figure Rocked softer, to and fro?

On such a dawn, or such a dawn, Would anybody sigh That such a little figure Too sound asleep did lie

For chanticleer to wake it,—
Or stirring house below,
Or giddy bird in orchard,
Or early task to do?

There was a little figure plump For every little knoll, Busy needles, and spools of thread, And trudging feet from school.

Playmates, and holidays, and nuts, And visions vast and small. Strange that the feet so precious charged Should reach so small a goal!

## LXV

ESSENTIAL oils are wrung: The attar from the rose Is not expressed by suns alone, It is the gift of screws.

The general rose decays; But this, in lady's drawer, Makes summer when the lady lies In ceaseless rosemary.

#### LXVI

I lived on dread; to those who know The stimulus there is In danger, other impetus Is numb and vital-less.<sup>211</sup>

As 't were a spur upon the soul, A fear will urge it where To go without the spectre's aid Were challenging despair.

# LXVII

IF I should die, And you should live, And time should gurgle on, And morn should beam, And noon should burn, As it has usual done; If birds should build as early, And bees as bustling go,— One might depart at option From enterprise below! 'T is sweet to know that stocks will stand When we with daisies lie, That commerce will continue, And trades as briskly fly.

It makes the parting tranquil And keeps the soul serene, That gentlemen so sprightly Conduct the pleasing scene!

## LXVIII

HER final summer was it, And vet we guessed it not; If tenderer industriousness Pervaded her, we thought

A further force of life Developed from within,— When Death lit all the shortness up, And made the hurry plain.

We wondered at our blindness,— When nothing was to see But her Carrara<sup>212</sup> guide-post,— At our stupidity,

When, duller than our dulness, The busy darling lay, So busy was she, finishing, So leisurely were we!

## LXIX

ONE need not be a chamber to be haunted,
One need not be a house;
The brain has corridors surpassing
Material place.

Far safer, of a midnight meeting External ghost,
Than an interior confronting
That whiter host.

Far safer through an Abbey gallop, The stones achase, 213 In lonesome place.

Ourself, behind ourself concealed,
Should startle most;
Assassin, hid in our apartment,

Than, moonless, one's own self

encounter

Be horror's least.

The prudent carries a revolver, He bolts the door, O'erlooking a superior spectre More near.

#### LXX

SHE died,—this was the way she died; And when her breath was done, Took up her simple wardrobe And started for the sun. Her little figure at the gate The angels must have spied, Since I could never find her

Upon the mortal side.

## LXXI

WAIT till the majesty of Death Invests so mean a brow! Almost a powdered footman Might dare to touch it now! Wait till in everlasting robes

This democrat is dressed,
Then prate about "preferment"
And "station" and the rest!

Around this quiet courtier Obsequious angels wait! Full royal is his retinue, Full purple is his state! A lord might dare to lift the hat To such a modest clay, Since that my Lord, "the Lord of lords"

Receives unblushingly!

## LXXII

WENT up a year this evening! I recollect it well! Amid no bells nor bravos The bystanders will tell! Cheerful, as to the village, Tranquil, as to repose, Chastened, as to the chapel, This humble tourist rose. Did not talk of returning, Alluded to no time When, were the gales propitious, We might look for him; Was grateful for the roses In life's diverse bouquet, Talked softly of new species

To pick another day.

Beguiling thus the wonder,
The wondrous nearer drew;
Hands bustled at the moorings—
The crowd respectful grew.
Ascended from our vision
To countenances new!
A difference, a daisy,

Is all the rest I knew!

## LXXIII

TAKEN from men this morning, Carried by men to-day, Met by the gods with banners Who marshalled her away.

One little maid from playmates, One little mind from school,— There must be guests in Eden; All the rooms are full.

Far as the east from even, Dim as the border star,— Courtiers quaint, in kingdoms,



#### LXXIV

WHAT inn is this Where for the night Peculiar traveller comes? Who is the landlord? Where the maids? Behold, what curious rooms! No ruddy fires on the hearth, No brimming tankards flow. Necromancer, landlord, Who are these below?

## LXXV

IT was not death, for I stood up, And all the dead lie down; It was not night, for all the bells Put out their tongues, for noon.

It was not frost, for on my flesh I felt siroccos<sup>214</sup> crawl,—
Nor fire, for just my marble feet Could keep a chancel<sup>215</sup> cool.

And yet it tasted like them all; The figures I have seen Set orderly, for burial, Reminded me of mine,

As if my life were shaven
And fitted to a frame,
And could not breathe without a key;
And 't was like midnight, some,

And space stares, all around,
Or grisly frosts, first autumn morns,
Repeal the beating ground.
But most like chaos,—stopless, cool,—
Without a chance or spar,
Or even a report of land
To justify despair.

When everything that ticked has stopped,

#### LXXVI

I should not dare to leave my friend, Because—because if he should die While I was gone, and I—too late— Should reach the heart that wanted me;

If I should disappoint the eyes
That hunted, hunted so, to see,
And could not bear to shut until
They "noticed" me—they noticed me;

If I should stab the patient faith So sure I'd come—so sure I'd come, It listening, listening, went to sleep Telling my tardy name,—

My heart would wish it broke before, Since breaking then, since breaking then, Were useless as next morning's sun, Where midnight frosts had lain!

# LXXVII

GREAT streets of silence led away To neighborhoods of pause; Here was no notice, no dissent, No universe, no laws.

By clocks 't was morning, and for night The bells at distance called; But epoch had no basis here, For period exhaled.

# LXXVIII

A throe upon the features A hurry in the breath, An ecstasy of parting Denominated "Death",—

An anguish at the mention, Which, when to patience grown, I've known permission given To rejoin its own.

# LXXIX

OF tribulation these are they Denoted by the white; The spangled gowns, a lesser rank Of victors designate.

All these did conquer; but the ones Who overcame most times Wear nothing commoner than snow, No ornament but palms.

Surrender is a sort unknown On this superior soil; Defeat, an outgrown anguish, Remembered as the mile Our panting ankle barely gained When night devoured the road; But we stood whispering in the house, And all we said was "Saved!"

# LXXX

I think just how my shape will rise When I shall be forgiven, Till hair and eyes and timid head Are out of sight, in heaven.

I think just how my lips will weigh With shapeless, quivering prayer That you, so late, consider me, The sparrow of your care.

I mind me that of anguish sent, Some drifts were moved away Before my simple bosom broke,— And why not this, if they?

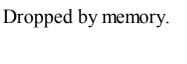
And so, until delirious borne
I con<sup>216</sup> that thing,—"forgiven,"—
Till with long fright and longer trust
I drop my heart, unshriven!<sup>217</sup>

# LXXXI

AFTER a hundred years
Nobody knows the place,—
Agony, that enacted there,
Motionless as peace.

Weeds triumphant ranged, Strangers strolled and spelled At the lone orthography<sup>218</sup> Of the elder dead.

Winds of summer fields Recollect the way,— Instinct picking up the key



### LXXXII

LAY this laurel on the one Too intrinsic for renown. Laurel! veil your deathless tree,— Him you chasten, that is he!

## LXXXIII

THIS world is not conclusion; A sequel stands beyond, Invisible, as music, But positive, as sound. It beckons and it baffles; Philosophies don't know, And through a riddle, at the last, Sagacity must go. To guess it puzzles scholars; To gain it, men have shown Contempt of generations, And crucifixion known.

# LXXXIV

WE learn in the retreating How vast an one Was recently among us. A perished sun

Endears in the departure How doubly more Than all the golden presence It was before!

# LXXXV

THEY say that "time assuages,"— Time never did assuage; An actual suffering strengthens, As sinews do, with age.

Time is a test of trouble, But not a remedy. If such it prove, it prove too There was no malady.

# LXXXVI

WE cover thee, sweet face. Not that we tire of thee, But that thyself fatigue of us; Remember, as thou flee, We follow thee until Thou notice us no more, And then, reluctant, turn away To con thee o'er and o'er, And blame the scanty love We were content to show, Augmented, sweet, a hundred fold If thou would'st take it now.

### LXXXVII

THAT is solemn we have ended,—Be it but a play,
Or a glee<sup>219</sup> among the garrets,
Or a holiday,

Or a leaving home; or later, Parting with a world We have understood, for better Still it be unfurled.

# LXXXVIII

THE stimulus, beyond the grave His countenance to see, Supports me like imperial drams Afforded royally.

# LXXXIX

GIVEN in marriage unto thee, Oh, thou celestial host! Bride of the Father and the Son, Bride of the Holy Ghost!

Other betrothal shall dissolve, Wedlock of will decay; Only the keeper of this seal Conquers mortality.

#### XC

THAT such have died enables us The tranquiller to die; That such have lived, certificate For immortality.

# XCI

THEY won't frown always,—some sweet day
When I forget to tease,
They'll recollect how cold I looked,
And how I just said "please."

Then they will hasten to the door To call the little child, Who cannot thank them, for the ice That on her lisping piled.

#### XCII

'T is an honorable thought, And makes one lift one's hat, As one encountered gentlefolk Upon a daily street,

That we've immortal place, Though pyramids decay, And kingdoms, like the orchard, Flit russetly away.

### XCIII

THE distance that the dead have gone Does not at first appear;
Their coming back seems possible
For many an ardent year.

And then, that we have followed them We more than half suspect, So intimate have we become With their dear retrospect.

# XCIV

How dare the robins sing, When men and women hear Who since they went to their account Have settled with the year!— Paid all that life had earned In one consummate bill, And now, what life or death can do Is immaterial. Insulting is the sun To him whose mortal light, Beguiled of immortality, Bequeaths him to the night. In deference to him Extinct be every hum, Whose garden wrestles with the dew,



# XCV

DEATH is like the insect Menacing the tree, Competent to kill it, But decoyed may be.

Bait it with the balsam,<sup>221</sup>
Seek it with the knife,
Baffle, if it cost you
Everything in life.
Then, if it have burrowed
Out of reach of skill,
Ring the tree and leave it,—

'T is the vermin's will.

# **XCVI**

'T is sunrise, little maid, hast thou No station in the day? 'T was not thy wont to hinder so,— Retrieve thine industry.

'T is noon, my little maid, alas! And art thou sleeping yet? The lily waiting to be wed, The bee, dost thou forget?

My little maid, 't is night; alas,
That night should be to thee
Instead of morning! Hadst thou broached

# Thy little plan to me, Dissuade thee if I could not, sweet, I might have aided thee.

### **XCVII**

EACH that we lose takes part of us; A crescent still abides, Which like the moon, some turbid night, Is summoned by the tides.

# **XCVIII**

NOT any higher stands the grave For heroes than for men; Not any nearer for the child Than numb three-score and ten.<sup>222</sup>

This latest leisure equal lulls
The beggar and his queen;
Propitiate this democrat
By summer's gracious mien. 223

# **XCIX**

As far from pity as complaint, As cool to speech as stone, As numb to revelation As if my trade were bone.

As far from time as history, As near yourself to-day As children to the rainbow's scarf, Or sunset's yellow play

To eyelids in the sepulchre. How still the dancer lies, While color's revelations break,



# C

'T is whiter than an Indian pipe,
'T is dimmer than a lace;
No stature has it, like a fog,
When you approach the place.

Not any voice denotes it here, Or intimates it there; A spirit, how doth it accost? What customs hath the air?

This limitless hyperbole Each one of us shall be; 'T is drama, if (hypothesis)



#### Cl

SHE laid her docile crescent down, And this mechanic stone Still states, to dates that have forgot, The news that she is gone.

So constant to its stolid trust, The shaft that never knew, It shames the constancy that fled Before its emblem flew.

#### CII

BLESS God, he went as soldiers, His musket on his breast; Grant, God, he charge the bravest Of all the martial blest.

Please God, might I behold him In epauletted white, I should not fear the foe then, I should not fear the fight.

### CIII

IMMORTAL is an ample word When what we need is by, But when it leaves us for a time, 'T is a necessity.

Of heaven above the firmest proof We fundamental know, Except for its marauding hand, It had been heaven below.

#### **CIV**

WHERE every bird is bold to go, And bees abashless play, The foreigner before he knocks Must thrust the tears away.

## CV

THE grave my little cottage is, Where, keeping house for thee, I make my parlor orderly, And lay the marble tea,

For two divided, briefly, A cycle, it may be, Till everlasting life unite In strong society.

#### CVI

THIS was in the white of the year, That was in the green, Drifts were as difficult then to think As daisies now to be seen.

Looking back is best that is left, Or if it be before, Retrospection is prospect's half, Sometimes almost more.

#### **CVII**

SWEET hours have perished here; This is a mighty room; Within its precincts hopes have played,

\_\_\_

Now shadows in the tomb.

## CVIII

ME! Come! My dazzled face In such a shining place!

Me! Hear! My foreign ear The sounds of welcome near!

The saints shall meet Our bashful feet.

My holiday shall be That they remember me;

My paradise, the fame



#### CIX

FROM us she wandered now a year, Her tarrying unknown; If wilderness prevent her feet, Or that ethereal zone

No eye hath seen and lived, We ignorant must be. We only know what time of year We took the mystery.

#### CX

I wish I knew that woman's name,
So, when she comes this way,
To hold my life, and hold my ears,
For fear I hear her say
She's "sorry I am dead", again,
Just when the grave and I
Have sobbed ourselves almost to sleep,

Our only lullaby.

## CXI

BEREAVED of all, I went abroad, No less bereaved to be Upon a new peninsula,— The grave preceded me,

Obtained my lodgings ere myself, And when I sought my bed, The grave it was, reposed upon The pillow for my head.

I waked, to find it first awake, I rose,—it followed me; I tried to drop it in the crowd,

To lose it in the sea,

In cups of artificial drowse
To sleep its shape away,—
The grave was finished, but the spade
Remained in memory.

## CXII

I felt a funeral in my brain, And mourners, to and fro, Kept treading, treading, till it seemed That sense was breaking through.

And when they all were seated, A service like a drum Kept beating, beating, till I thought My mind was going numb.

And then I heard them lift a box, And creak across my soul With those same boots of lead, again.

## Then space began to toll

As all the heavens were a bell, And Being but an ear, And I and silence some strange race, Wrecked, solitary, here.

## CXIII

I meant to find her when I came; Death had the same design; But the success was his, it seems, And the discomfit mine.

I meant to tell her how I longed For just this single time; But Death had told her so the first, And she had hearkened him.

To wander now is my abode; To rest,—to rest would be A privilege of hurricane



#### **CXIV**

I sing to use the waiting, My bonnet but to tie, And shut the door unto my house; No more to do have I,

Till, his best step approaching, We journey to the day, And tell each other how we sang To keep the dark away.

## CXV

A sickness of this world it most occasions
When best men die;
A wishfulness their far condition
To occupy.

A chief indifference, as foreign A world must be Themselves forsake contented, For Deity.

## CXVI

SUPERFLUOUS were the sun
When excellence is dead;
He were superfluous every day,
For every day is said
That syllable whose faith
Just saves it from despair,
And whose "I'll meet you" hesitates—
If love inquire, "Where?"

Upon his dateless fame
Our periods may lie,
As stars that drop anonymous
From an abundant sky.

## **CXVII**

So proud she was to die
It made us all ashamed
That what we cherished, so unknown
To her desire seemed.

So satisfied to go
Where none of us should be,
Immediately, that anguish stooped
Almost to jealousy.

## CXVIII

TIE the strings to my life, my Lord, Then I am ready to go! Just a look at the horses— Rapid! That will do!

Put me in on the firmest side, So I shall never fall; For we must ride to the Judgment, And it's partly down hill.

But never I mind the bridges, And never I mind the sea; Held fast in everlasting race By my own choice and thee.

Good-by to the life I used to live, And the world I used to know; And kiss the hills for me, just once; Now I am ready to go!

#### **CXIX**

THE dying need but little, dear,—
A glass of water's all,
A flower's unobtrusive face
To punctuate the wall,

A fan, perhaps, a friend's regret, And certainly that one No color in the rainbow Perceives when you are gone.

#### CXX

THERE'S something quieter than sleep Within this inner room!
It wears a sprig upon its breast,
And will not tell its name.

Some touch it and some kiss it, Some chafe its idle hand; It has a simple gravity I do not understand!

While simple-hearted neighbors Chat of the "early dead", We, prone to periphrasis, 224 Remark that birds have fled!

#### CXXI

THE soul should always stand ajar, That if the heaven inquire, He will not be obliged to wait, Or shy of troubling her.

Depart, before the host has slid
The bolt upon the door,
To seek for the accomplished guest—
Her visitor no more.

# CXXII

THREE weeks passed since I had seen her,—
Some disease had vexed;

'T was with text and village singing I beheld her next,

And a company—our pleasure To discourse alone; Gracious now to me as any, Gracious unto none.

Borne, without dissent of either,
To the parish night;
Of the separated people
Which are out of sight?

## CXXIII

I breathed enough to learn the trick, And now, removed from air, I simulate the breath so well, That one, to be quite sure

The lungs are stirless, must descend Among the cunning cells, And touch the pantomime himself. How cool the bellows feels!

#### **CXXIV**

I wonder if the sepulchre
Is not a lonesome way,
When men and boys, and larks and June
Go down the fields to hay!

## **CXXV**

IF tolling bell I ask the cause.
"A soul has gone to God,"
I'm answered in a lonesome tone;
Is heaven then so sad?

That bells should joyful ring to tell A soul had gone to heaven, Would seem to me the proper way A good news should be given.

## **CXXVI**

IF I may have it when it's dead I will contented be;
If just as soon as breath is out
It shall belong to me,

Until they lock it in the grave, 'T is bliss I cannot weigh, For though they lock thee in the grave, Myself can hold the key.

Think of it, lover! I and thee Permitted face to face to be; After a life, a death we'll say,—



## **CXXVII**

BEFORE the ice is in the pools, Before the skaters go, Or any cheek at nightfall Is tarnished by the snow,

Before the fields have finished, Before the Christmas tree, Wonder upon wonder Will arrive to me!

What we touch the hems of On a summer's day; What is only walking Just a bridge away;

That which sings so, speaks so, When there's no one here,—Will the frock I wept in Answer me to wear?

## **CXXVIII**

I heard a fly buzz when I died; The stillness round my form Was like the stillness in the air Between the heaves of storm.

The eyes beside had wrung them dry, And breaths were gathering sure For that last onset, when the king Be witnessed in his power.

I willed my keepsakes, signed away What portion of me I Could make assignable,—and then There interposed a fly,
With blue, uncertain, stumbling buzz,
Between the light and me;
And then the windows failed, and then
I could not see to see.

## **CXXIX**

ADRIFT! A little boat adrift! And night is coming down! Will no one guide a little boat Unto the nearest town?

So sailors say, on yesterday, Just as the dusk was brown, One little boat gave up its strife, And gurgled down and down.

But angels say, on yesterday, Just as the dawn was red, One little boat o'erspent with gales

# Retrimmed its masts, redecked its sails Exultant, onward sped!

# CXXX

THERE'S been a death in the opposite house
As lately as to-day.

I know it by the numb look Such houses have alway.<sup>225</sup>

The neighbors rustle in and out, The doctor drives away.

A window opens like a pod, Abrupt, mechanically;

Somebody flings a mattress out,—
The children hurry by;
They wonder if It died on that,—
I used to when a boy.

The minister goes stiffly in
As if the house were his,
And he owned all the mourners now,
And little boys besides;

And then the milliner, and the man Of the appalling trade,
To take the measure of the house.
There'll be that dark parade

Of tassels and of coaches soon; It's easy as a sign,— The intuition of the news In just a country town.

#### CXXXI

WE never know we go,—when we are going

We jest and shut the door;

Fate following behind us bolts it, And we accost no more.

And we accost no more

# CXXXII

IT struck me every day
The lightning was as new
As if the cloud that instant slit
And let the fire through.

It burned me in the night, It blistered in my dream; It sickened fresh upon my sight With every morning's beam.

I thought that storm was brief,— The maddest, quickest by; But Nature lost the date of this,



# **CXXXIII**

WATER is taught by thirst; Land, by the oceans passed; Transport, by throe; Peace, by its battles told; Love, by memorial mould; Birds, by the snow.

# **CXXXIV**

WE thirst at first,—'t is Nature's act; And later, when we die, A little water supplicate Of fingers going by.

It intimates the finer want,
Whose adequate supply
Is that great water in the west
Termed immortality.

# CXXXV

A clock stopped—not the mantel's; Geneva's farthest skill Can't put the puppet bowing That just now dangled still.

An awe came on the trinket! The figures hunched with pain, Then quivered out of decimals Into degreeless noon.

It will not stir for doctors, This pendulum of snow; The shopman importunes it,

# While cool, concernless No

Nods from the gilded pointers, 226 Nods from the seconds slim, Decades of arrogance between The dial life and him.

# CXXXVI

ALL overgrown by cunning moss, All interspersed with weed, The little cage of "Currer Bell", 227 In quiet Haworth 228 laid.

This bird, observing others, When frosts too sharp became, Retire to other latitudes, Quietly did the same.

But differed in returning; Since Yorkshire hills are green, Yet not in all the nests I meet Can nightingale be seen.

Gathered from any wanderings,

Gethsemane can tell

Through what transporting anguish She reached the asphodel! 229

Soft falls the sounds of Eden Upon her puzzled ear; Oh, what an afternoon for heaven, When Brontë entered there!

# **CXXXVII**

A toad can die of light!

Death is the common right

Of toads and men,—

Of earl and midge<sup>230</sup>

The privilege.

Why swagger then?

The gnat's supremacy

Is large as thine.

# CXXXVIII

FAR from love the Heavenly Father Leads the chosen child; Oftener through realm of briar Than the meadow mild,

Oftener by the claw of dragon
Than the hand of friend,
Guides the little one predestined
To the native land.

# CXXXIX

A long, long sleep, a famous sleep That makes no show for dawn By stretch of limb or stir of lid,— An independent one.

Was ever idleness like this? Within a hut of stone
To bask the centuries away
Nor once look up for noon?

# **CXL**

'T was just this time last year I died. I know I heard the corn, When I was carried by the farms,— It had the tassels on.

I thought how yellow it would look When Richard went to mill; And then I wanted to get out, But something held my will.

I thought just how red apples wedged The stubble's joints between; And carts went stooping round the fields To take the pumpkins in.

I wondered which would miss me least, And when Thanksgiving came, If father 'd multiply the plates To make an even sum.

And if my stocking hung too high,
Would it blur the Christmas glee,
That not a Santa Claus could reach
The altitude of me?

But this sort grieved myself, and so I thought how it would be When just this time, some perfect year,



# **CXLI**

ON this wondrous sea, Sailing silently, Knowest thou the shore Ho! pilot, ho! Where no breakers roar, Where the storm is o'er?

In the silent west
Many sails at rest,
Their anchors fast;
Thither I pilot thee,—
Land, ho! Eternity!
Ashore at last!

# **PART FIVE**

# THE SINGLE HOUND

ONE sister have I in our house, And one a hedge away, There's only one recorded But both belong to me.

One came the way that I came And wore my past year's gown, The other as a bird her nest, Builded our hearts among.

She did not sing as we did,

It was a different tune, Herself to her a music As Bumble-bee of June.

But up and down the hills
I held her hand the tighter,
Which shortened all the miles.

To-day is far from childhood

And still her hum the years among Deceives the Butterfly, Still in her eye the Violets lie Mouldered this many May.

I spilt the dew but took the morn,

From out the wide night's numbers, Sue<sup>231</sup>—forevermore!

I chose this single star

# **EMILY**

# I

ADVENTURE most unto itself The Soul condemned to be; Attended by a Single Hound—Its own Identity.

# II

THE Soul that has a Guest, Doth seldom go abroad, Diviner Crowd at home Obliterate the need, And courtesy forbid A Host's departure, when Upon Himself be visiting The Emperor of Men!

# $\prod$

EXCEPT the smaller size, no Lives are round,

These hurry to a sphere, and show, and end.

The larger, slower grow, and later hang

— The Summers of Hesperides 232 are long.

#### IV

FAME is a fickle food
Upon a shifting plate,
Whose table once a Guest, but not
The second time, is set.
Whose crumbs the crows inspect,
And with ironic caw
Flap past it to the Farmer's corn;
Men eat of it and die.

# V

THE right to perish might be thought

An undisputed right,

Attempt it, and the Universe upon the opposite

Will concentrate its officers—

You cannot even die,

But Nature and Mankind must pause

To pay you scrutiny.

#### VI

PERIL as a possession
'T is good to bear,
Danger disintegrates satiety;
There's Basis there
Begets an awe,
That searches Human Nature's creases
As clean as Fire.

#### VII

WHEN Etna<sup>233</sup> basks and purrs, Naples is more afraid Than when she shows her Garnet Tooth; Security is loud.

REVERSE cannot befall that fine **Prosperity** Whose sources are interior. As soon Adversity A diamond overtake,

In far Bolivian ground; Misfortune hath no implement

Could mar it, if it found.

# IX

TO be alive is power, Existence in itself, Without a further function, Omnipotence enough.

To be alive and Will—
'T is able as a God!
The Further of ourselves be what—
Such being Finitude?

#### X

WITCHCRAFT has not a pedigree, 'T is early as our breath,
And mourners meet it going out
The moment of our death.

#### XI

EXHILARATION is the Breeze
That lifts us from the ground,
And leaves us in another place
Whose statement is not found;
Returns us not, but after time
We soberly descend,
A little newer for the term
Upon enchanted ground.

# XII

NO romance sold unto,
Could so enthrall a man
As the perusal of
His individual one.
'T is fiction's, to dilute
To plausibility
Our novel, when 't is small enough
To credit,—'t isn't true!

# XIII

IF what we could were what we would

Criterion be small; It is the Ultimate of talk The impotence to tell.

# XIV

PERCEPTION of an
Object costs
Precise the Object's loss.
Perception in itself a gain
Replying to its price;
The Object Absolute is nought,
Perception sets it fair,
And then upbraids a Perfectness
That situates so far.

#### XV

No other can reduce
Our mortal consequence,
Like the remembering it be nought
A period from hence.
But contemplation for
Cotemporaneous nought
Our single competition;
Jehovah's estimate

## XVI

THE blunder is to estimate—
"Eternity is *Then*,"
We say, as of a station.
Meanwhile he is so near,
He joins me in my ramble,
Divides abode with me,
No friend have I that so persists
As this Eternity.

# XVII

MY Wheel is in the dark,—
I cannot see a spoke,
Yet know its dripping feet
Go round and round.

My foot is on the tide—An unfrequented road,
Yet have all roads
A "clearing" at the end.

Some have resigned the Loom, Some in the busy tomb Find quaint employ, Some with new, stately feet Pass royal through the gate, Flinging the problem back at you and I.

# XVIII

THERE is another Loneliness
That many die without,
Not want or friend occasions it,
Or circumstances or lot.

By mortal numeral.

But nature sometimes, sometimes thought,
And whoso it befall
Is richer than could be divulged

#### XIX

SO gay a flower bereaved the mind As if it were a woe, Is Beauty an affliction, then? Tradition ought to know.

### XX

GLORY is that bright tragic thing,
That for an instant
Means Dominion,
Warms some poor name
That never felt the sun,
Gently replacing
In oblivion.

### XXI

THE missing All prevented me
From missing minor things.
If nothing larger than a World's
Departure from a hinge,
Or Sun's extinction be observed,
'T was not so large that I
Could lift my forehead from my work
For curiosity.

### XXII

HIS mind, of man a secret makes, I meet him with a start, He carries a circumference In which I have no part, Or even if I deem I do—He otherwise may know. Impregnable to inquest, However neighborly.

### XXII

THE suburbs of a secret A strategist should keep, Better than on a dream intrude To scrutinize the sleep.

# XXIV

THE difference between despair And fear, is like the one Between the instant of a wreck, And when the wreck has been.

The mind is smooth,—no motion— Contented as the eye Upon the forehead of a Bust, That knows it cannot see.

## XXV

THERE is a solitude of space,
A solitude of sea,
A solitude of death, but these
Society shall be,
Compared with that profounder site,
That polar privacy,
A Soul admitted to Itself:
Finite Infinity.

# XXVI

THE props assist the house Until the house is built, And then the props withdraw— And adequate, erect, The house supports itself; Ceasing to recollect The auger and the carpenter. Just such a retrospect Hath the perfected life, A past of plank and nail, And slowness,—then the scaffolds drop

Affirming it a soul.

## **XXVII**

THE gleam of an heroic act, Such strange illumination— The Possible's slow fuse is lit By the Imagination!

## XXVIII

OF Death the sharpest function,
That, just as we discern,
The Excellence defies us;
Securest gathered then
The fruit perverse to plucking,
But leaning to the sight
With the ecstatic limit
Of unobtained Delight.

### XXIX

DOWN Time's quaint stream Without an oar, We are enforced to sail, Our Port—a secret— Our Perchance—a gale. What Skipper would Incur the risk, What Buccaneer would ride, Without a surety from the wind Or schedule of the tide?

# XXX

I bet with every Wind that blew, till Nature in chagrin Employed a *Fact* to visit me and scuttle my

Balloon!

## XXXI

THE Future never spoke, Nor will he, like the Dumb, Reveal by sign or syllable Of his profound To-come. But when the news be ripe, Presents it in the Act— Forestalling preparation Escape or substitute. Indifferent to him The Dower as the Doom, His office but to execute Fate's Telegram to him.

### XXXII

TWO lengths has every day, Its absolute extent-And area superior By hope or heaven lent. Eternity will be Velocity, or pause, At fundamental signals From fundamental laws. To die, is not to go— On doom's consummate chart No territory new is staked, Remain thou as thou art.

# XXXIII

THE Soul's superior instants Occur to Her alone, When friend and earth's occasion Have infinite withdrawn.

Or she, Herself, ascended To too remote a height, For lower recognition Than Her Omnipotent.

This mortal abolition
Is seldom, but as fair
As Apparition—subject

To autocratic air.

Eternity's disclosure
To favorites, a few,
Of the Colossal substance
Of immortality.

# XXXIV

NATURE is what we see, The Hill, the Afternoon— Squirrel, Eclipse, the Bumble-bee, Nay—Nature is Heaven.

Nature is what we hear, The Bobolink, the Sea-Thunder, the Cricket— Nay,—Nature is Harmony.

Nature is what we know But have no art to say, So impotent our wisdom is



## XXXV

AH, Teneriffe!<sup>234</sup>
Retreating Mountain!
Purples of Ages pause for you,
Sunset reviews her Sapphire Regiment,
Day drops you her red Adieu!

Still, clad in your mail of ices, Thigh of granite and thew<sup>235</sup> of steel—Heedless, alike, of pomp or parting, Ah, Teneriffe! I'm kneeling still.

# XXXVI

SHE died at play, Gambolled away Her lease of spotted hours, Then sank as gaily as a Turk Upon a couch of flowers.

Her ghost strolled softly o'er the hill Yesterday and today, Her vestments as the silver fleece, Her countenance as spray.

# XXXVII

"MORNING" means "Milking" to the Farmer

Dawn to the Apennines-Dice to the Maid

Dice to the Maid.

"Morning" means just Chance to the Lover—

Just Revelation to the Beloved.

Epicures<sup>236</sup> date a breakfast by it!

Heroes a battle,

The Miller a flood

The Miller a flood,

Faint-going eyes their lapse

From sighing.

Faith, the Experiment of our Lord!

## XXXVIII

A little madness in the Spring
Is wholesome even for the King,
But God be with the Clown,
Who ponders this tremendous scene—
This whole experiment of green,
As if it were his own!

# XXXIX

I can't tell you, but you feel it— Nor can you tell me, Saints with vanished slate and pencil Solve our April day.

Sweeter than a vanished Frolic From a vanished Green! Swifter than the hoofs of Horsemen Round a ledge of Dream!

Modest, let us walk among it. With our "faces veiled", As they say polite Archangels Do, in meeting God. 237

Not for me to prate about it,

Not for you to say
To some fashionable Lady—
"Charming April Day!"

Rather Heaven's "Peter Parley", 238

By which, Children—slow—

To sublimer recitations Are prepared to go!

Are prepared to go!

#### XL

SOME Days retired from the rest In soft distinction lie,
The Day that a companion came—
Or was obliged to die.

### XLI

LIKE Men and Women shadows walk
Upon the hills today,
With here and there a mighty bow,
Or trailing courtesy
To Neighbors, doubtless, of their own;
Not quickened to perceive
Minuter landscape, as Ourselves
And Boroughs where we live.

### XLII

THE butterfly obtains
But little sympathy,
Though favorably mentioned
In Entomology.<sup>239</sup>
Because he travels freely
And wears a proper coat,
The circumspect are certain

That he is dissolute.

Had he the homely scutcheon<sup>240</sup> of modest Industry,

'T were fitter certifying for Immortality.

#### **XLIII**

BEAUTY crowds me till I die, Beauty, mercy have on me! But if I expire today, Let it be in sight of thee.

## XLIV

WE spy the Forests and the Hills, The tents to Nature's Show, Mistake the outside for the in And mention what we saw.

Could Commentators on the sign Of Nature's Caravan Obtain "admission," as a child, Some Wednesday afternoon?

## XLV

I never told the buried gold Upon the hill that lies, I saw the sun, his plunder done, Crouch low to guard his prize.

He stood as near, as stood you here, A pace had been between— Did but a snake bisect the brake, My life had forfeit been.

That was a wondrous booty, I hope 't was honest gained—
Those were the finest ingots 241

Whether to keep the secret— Whether to reveal—

That ever kissed the spade.

Whether, while I ponder

Kidd<sup>242</sup> may sudden sail—

Could a Shrewd advise me We might e'en divide—

Should a Shrewd betray me— "Atropos" <sup>243</sup> decide!

### **XLVI**

THE largest fire ever known
Occurs each afternoon,
Discovered is without surprise,
Proceeds without concern:
Consumes, and no report to men,
An Occidental town,
Rebuilt another morning
To be again burned down.

## XLVII

BLOOM upon the Mountain, stated, Blameless of a name. Efflorescence of a Sunset-Reproduced, the same.

Seed, had I, my purple sowing Should endow the Day, Not a tropic of the twilight Show itself away.

Who for tilling, to the Mountain Come, and disappear— Whose be Her renown, or fading, Witness, is not here.

While I state—the solemn petals Far as North and East, Far as South and West expanding, Culminate in rest.

And the Mountain to the Evening Fit His countenance, Indicating by no muscle The Experience.

## **XLVIII**

MARCH is the month of expectation,
The things we do not know,
The Persons of prognostication
Are coming now.
We try to sham becoming firmness,
But pompous joy
Betrays us, as his first betrothal
Betrays a boy.

#### XLIX

THE Duties of the Wind are few—
To cast the Ships at sea,
Establish March,
The Floods escort,
And usher Liberty.

## L

THE Winds drew off Like hungry dogs Defeated of a bone. Through fissures in Volcanic cloud The yellow lightning shown. The trees held up Their mangled limbs Like animals in pain, When Nature falls Upon herself, Beware an Austrian!

#### LI

I think that the root of the Wind is Water, It would not sound so deep Were it a firmamental product, Airs no Oceans keep—
Mediterranean intonations,
To a Current's ear
There is a maritime conviction
In the atmosphere.

## LII

So, from the mould, Scarlet and gold Many a Bulb will rise, Hidden away cunningly From sagacious eyes. So, from cocoon Many a Worm Leap so Highland<sup>244</sup> gay, Peasants like me— Peasants like thee, Gaze perplexedly.

#### LIII

THE long sigh of the Frog
Upon a Summer's day,
Enacts intoxication
Upon the revery.
But his receding swell
Substantiates a peace,
That makes the ear inordinate
For corporal release.

#### LIV

A cap of lead across the sky
Was tight and surly drawn,
We could not find the Mighty Face,
The figure was withdrawn.

A chill came up as from a shaft, Our noon became a well, A thunder storm combines the charms Of Winter and of Hell.

## LV

I send two Sunsets—
Day and I in competition ran,
I finished two, and several stars,
While He was making one.

His own is ampler—
But, as I was saying to a friend,
Mine is the more convenient
To carry in the hand.

(Sent with brilliant flowers.)

#### LVI

OF this is Day composed—
A morning and a noon,
A Revelry unspeakable
And then a gay Unknown;
Whose Pomps allure and spurn—
And dower and deprive,
And penury for glory
Remedilessly leave.

#### LVII

THE Hills erect their purple heads, The Rivers lean to see— Yet Man has not, of all the throng, A curiosity.

#### LVIII

LIGHTLY stepped a yellow star To its lofty place,
Loosed the Moon her silver hat
From her lustral <sup>245</sup>/<sub>245</sub> face.
All of evening softly lit
As an astral hall—
"Father," I observed to Heaven,
"You are punctual."

#### LIX

THE Moon upon her fluent route Defiant of a road,
The stars Etruscan<sup>246</sup> argument,
Substantiate a God.
If Aims impel these Astral Ones,
The Ones allowed to know,
Know that which makes them as forgot
As Dawn forgets them now.

## LX

LIKE some old-fashioned miracle When Summertime is done, Seems Summer's recollection And the affairs of June.

As infinite tradition
As Cinderella's bays,
Or little John <sup>247</sup> of Lincoln Green,
Or Bluebeard's <sup>248</sup> galleries.

Her Bees have a fictitious hum, Her Blossoms, like a dream, Elate—until we almost weep So plausible they seem. Her Memories like strains—review— When Orchestra is dumb, The Violin in balze<sup>249</sup> replaced

And Ear and Heaven numb.

## LXI

GLOWING is her Bonnet, Glowing is her Cheek, Glowing is her Kirtle, 250 Yet she cannot speak!

Better, as the Daisy From the Summer hill, Vanish unrecorded Save by tearful Rill,<sup>251</sup>

Save by loving Sunrise Looking for her face, Save by feet unnumbered Pausing at the place!

#### LXII

FOREVER cherished be the tree, Whose apple Winter warm, Enticed to breakfast from the sky Two Gabriels yestermorn; They registered in Nature's book As Robin—Sire and Son, But angels have that modest way To screen them from renown.

#### LXIII

THE Ones that disappeared are back, The Phoebe<sup>252</sup> and the Crow, Precisely as in March is heard The curtness of the Jay—Be this an Autumn or a Spring? My wisdom loses way, One side of me the nuts are ripe—The other side is May.

## LXIV

THOSE final Creatures,—who they are

\_\_\_

That, faithful to the close, Administer her ecstasy, But just the Summer knows.

## LXV

SUMMER begins to have the look, Peruserof enchanting Book<sup>253</sup>
Reluctantly, but sure, perceives—
A gain upon the backward leaves.

Autumn begins to be inferred By millinery of the cloud, Or deeper color in the shawl That wraps the everlasting hill.

The eye begins its avarice, A meditation chastens speech, Some Dyer of a distant tree Resumes his gaudy industry.

# Conclusion is the course of all, *Almost* to be perennial, And then elude stability

And then elude stability Recalls to immortality.

## LXVI

A prompt, executive Bird is the Jay, Bold as a Bailiff's hymn, Brittle and brief in quality— Warrant in every line;

Sitting a bough like a Brigadier, Confident and straight, Much is the mien Of him in March As a Magistrate.

## LXVII

LIKE brooms of steel The Snow and Wind Had swept the Winter Street, The House was hooked, The Sun sent out Faint Deputies of heat— Where rode the Bird The Silence tied His ample, plodding Steed, The Apple in the cellar snug Was all the one that played.

## **LXVIII**

THESE are the days that Reindeer love And pranks the Northern star, This is the Sun's objective And Finland of the year.

#### LXIX

FOLLOW wise Orion Till you lose your eye, Dazzlingly decamping He is just as high.

## LXX

IN winter, in my room,
I came upon a worm,
Pink, lank, and warm.
But as he was a worm
And worms presume,
Not quite with him at home—
Secured him by a string
To something neighboring,
And went along.

A trifle afterward
A thing occurred,
I'd not believe it if I heard—
But state with creeping blood;

A snake, with mottles rare,
Surveyed my chamber floor,
In feature as the worm before,
But ringed with power.
The very string
With which I tied him, too,
When he was mean and new,

I shrank—"How fair you are!" Propitiation's<sup>254</sup> claw— "Afraid," he hissed, "Of me?"

That string was there.

Then, to a rhythm slim

"No cordiality?"
He fathomed 255 me

Secreted in his form, As patterns swim, Projected him.

That time I flew, Both eyes his way, Lest he pursue— Nor ever ceased to run, Till, in a distant town,

Towns on from mine— I sat me down;

This was a dream.

#### **LXXI**

NOT any sunny tone
From any fervent zone
Finds entrance there.
Better a grave of Balm
Toward human nature's home,
And Robins near,
Than a stupendous Tomb
Proclaiming to the gloom
How dead we are.

# LXXII

FOR Death,—or rather For the things 't will buy, These put away Life's opportunity.

The things that Death will buy Are Room,—Escape From Circumstances, And a Name.

How gifts of Life With Death's gifts will compare,

# We know not— For the rates stop Here.

## LXXIII

DROPPED into the Ether Acre! Wearing the sod gown-Bonnet of Everlasting laces— Brooch frozen on! Horses of blonde— And coach of silver, Baggage a strapped Pearl! Journey of Down And whip of Diamond— Riding to meet the Earl!

## LXXIV

THIS quiet Dust was Gentlemen and Ladies,

And Lads and Girls;

Was laughter and ability and sighing, And frocks and curls.

This passive place a Summer's nimble mansion,

Where Bloom and Bees

Fulfilled their Oriental Circuit,

Then ceased like these.

#### LXXV

'T was comfort in her dying room
To hear the living clock,
A short relief to have the wind
Walk boldly up and knock,
Diversion from the dying theme
To hear the children play,
But wrong, the mere
That these could live,—
And This of ours must die!

#### LXXVI

Too cold is this
To warm with sun,
Too stiff to bended be,
To joint this agate<sup>256</sup> were a feat
Outstaring masonry.
How went the agile kernel out—
Contusion of the husk,
Nor rip, nor wrinkle indicate,—

But just an Asterisk.

#### LXXVII

I watched her face to see which way
She took the awful news,
Whether she died before she heard—
Or in protracted bruise
Remained a few short years with us,
Each heavier than the last—
A further afternoon to fail,
As Flower at fall of Frost.

### **LXXVIII**

TO-DAY or this noon
She dwelt so close,
I almost touched her;
Tonight she lies
Past neighborhood—
And bough and steeple—
Now past surmise.

## LXXIX

I see thee better in the dark, I do not need a light. The love of thee a prism be Excelling violet.

I see thee better for the years
That hunch themselves between,
The miner's lamp sufficient be
To nullify the mine.

And in the grave I see thee best-Its little panels be A-glow, all ruddy with the light

# I held so high for thee!

What need of day to those whose dark Hath so surpassing sun, It seem it be continually At the meridian? 257

#### LXXX

Low at my problem bending, Another problem comes, Larger than mine, serener, Involving statelier sums; I check my busy pencil, My ciphers<sup>258</sup> slip away, Wherefore, my baffled fingers, Time Eternity?

### LXXXI

IF pain for peace prepares, Lo the "Augustan" years Our feet await!

If Springs from Winter rise, Can the Anemone's Be reckoned up?

If night stands first, then noon, To gird us for the sun, What gaze—

# When, from a thousand skies, On our developed eyes Noons blaze!

#### LXXXII

I fit for them,
I seek the dark till I am thorough fit.
The labor is a solemn one,
With this sufficient sweet—
That abstinence as mine produce
A purer good for them,
If I succeed,—
If not, I had
The transport of the Aim.

#### LXXXIII

NOT one by Heaven defrauded stay, Although He seem to steal, He restitutes <sup>260</sup> in some sweet way. Secreted in His will.

# LXXXIV

THE feet of people walking home In gayer sandals go,
The Crocus, till she rises,
The Vassal<sup>261</sup> of the Snow—
The lips at Hallelujah!
Long years of practice bore,
Till bye and bye these Bargemen
Walked singing on the shore.

Pearls are the Diver's farthings Extorted from the Sea,
Pinions<sup>262</sup> the Seraph's wagon,
Pedestrians once, as we—
Night is the morning's canvas,

Death but our rapt attention To immortality.

Larceny, legacy,

My figures fail to tell me
How far the village lies,
Whose Peasants are the angels,
Whose Cantons<sup>263</sup> dot the skies,
My Classics veil their faces,
My Faith that dark adores,
Which from its solemn Abbeys

Such resurrection pours!

## LXXXV

WE should not mind so small a flower, Except it quiet bring Our little garden that we lost Back to the lawn again. So spicy her Carnations red, So drunken reel her Bees, So silver steal a hundred Flutes From out a hundred trees, That whoso sees this little flower, By faith may clear behold The Bobolinks around the throne, And Dandelions gold.

# LXXXVI

To the staunch Dust we safe commit thee;

Tongue if it hath, inviolate to thee—Silence denote and Sanctity enforce thee, Passenger of Infinity!

# LXXXVII

HER "Last Poems"— Poets ended. Silver perished with her tongue, Not on record bubbled other Flute, or Woman, so divine; Not unto its Summer morning Robin uttered half the tune-Gushed too free for the adoring, From the Anglo-Florentine. 264 Late the praise— 'T is dull conferring On a Head too high to crown, Diadem or Ducal<sup>265</sup> showing, Be its Grave sufficient sign. Yet if we, no Poet's kinsman,

Suffocate with easy woe, What and if ourself a Bridegroom, Put Her down, in Italy?

(Written after the death of Mrs. Browning in 1861.)

### **LXXXVIII**

IMMURED<sup>266</sup> in Heaven! What a Cell! Let every bondage be, Thou Sweetest of the Universe, Like that which ravished thee!

#### LXXXIX

I'M thinking of that other morn, When Cerements<sup>267</sup> let go, And Creatures clad in Victory Go up in two by two!

#### XC

THE overtakelessness of those Who have accomplished Death, Majestic is to me beyond The majesties of Earth.

The soul her "not at Home" Inscribes upon the flesh, And takes her fair aerial gait Beyond the hope of touch.

# XCI

THE Look of Thee, what is it like?
Hast thou a hand or foot,
Or mansion of Identity,
And what is thy Pursuit?

Thy fellows,—are they Realms or Themes?
Hast thou Delight or Fear
Or Longing,—and is that for us
Or values more severe?

Let change transfuse all other traits, Enact all other blame,

#### But deign this least certificate— That thou shalt be the same.

#### **XCII**

THE Devil, had he fidelity,
Would be the finest friend—
Because he has ability,
But Devils cannot mend.
Perfidy is the virtue
That would he but resign,—
The Devil, so amended,
Were durably divine.

### **XCIII**

PAPA above!
Regard a Mouse
O'erpowered by the Cat;
Reserve within thy Kingdom
A "mansion" for the Rat!

Snug in seraphic cupboards To nibble all the day, While unsuspecting cycles Wheel pompously away.

#### **XCIV**

NOT when we know The Power accosts, The garment of Surprise Was all our timid Mother wore At Home, in Paradise.

#### XCV

ELIJAH'S<sup>268</sup> wagon knew no thill, Was innocent of wheel, Elijah's horses as unique As was his vehicle. Elijah's journey to portray, Expire with him the skill, Who justified Elijah, In feats inscrutable.

# XCVI

"REMEMBER me," implored the Thief

Oh magnanimity!
"My Visitor in Paradise
I give thee Guaranty."

That courtesy will fair remain,
When the delight is dust,
With which we cite this mightiest case
Of compensated Trust.

Of All, we are allowed to hope, But Affidavit stands That this was due, where some, we fear, Are unexpected friends.

#### **XCVII**

TO this apartment deep No ribaldry may creep; Untroubled this abode By any man but God.

#### XCVIII

"SOWN in dishonor?"
Ah! Indeed!
May this dishonor be?

If I were half so fine myself, I'd notice nobody!

I a notice nobody!

"Sown in corruption?"

By no means!

Apostle is askew;

Corinthians 1:15, narrates

A circumstance or two! 269

#### **XCIX**

THROUGH lane it lay, through bramble, Through clearing and through wood, Banditti<sup>270</sup> often passed us Upon the lonely road.

The wolf came purring curious, The owl looked puzzled down, The serpent's satin figure Glid stealthily along.

The tempest touched our garments,
The lightning's poignards<sup>271</sup> gleamed,
Fierce from the crag above us
The hungry vulture screamed.

The valley murmured "Come"—

The satyr's fingers beckoned,

These were the mates—and this the road Those children fluttered home.

#### $\mathbf{C}$

WHO is it seeks my pillow nights? With plain inspecting face, "Did you, or did you not?" to ask, 'T is Conscience, childhood's nurse.

With martial hand she strokes the hair Upon my wincing head, "All rogues shall have their part in"—

What-

The Phosphorus  $\frac{273}{}$  of God.

#### Cl

His Cheek is his Biographer—As long as he can blush,
Perdition is Opprobrium;
Past that, he sins in peace.

Thief

#### CII

"HEAVENLY Father," take to thee The supreme iniquity, Fashioned by thy candid hand In a moment contraband. Though to trust us seem to us More respectful—"we are dust." 274 We apologize to Thee For Thine own Duplicity.

#### CIII

THE sweets of Pillage can be known To no one but the Thief, Compassion for Integrity Is his divinest Grief.

### CIV

THE Bible is an antique volume Written by faded men, At the suggestion of Holy Spectres— Subjects—Bethlehem— Eden—the ancient Homestead— Satan—the Brigadier, Judas—the great Defaulter, David—the Troubadour. Sin—a distinguished Precipice Others must resist, Boys that "believe" Are very lonesome— Other boys are "lost." Had but the tale a warbling Teller All the boys would comeOrpheus' 276 sermon captivated, It did not condemn.

## CV

A little over Jordan,
As Genesis record,
An Angel and a Wrestler
Did wrestle long and hard. 277
Till, morning touching mountain,
And Jacob waxing strong,
The Angel begged permission
To breakfast and return.

"Not so," quoth wily Jacob, And girt his loins anew, "Until thou bless me, stranger!" The which acceded to:

# Light swung the silver fleeces Peniel<sup>278</sup> hills among, And the astonished Wrestler

And the astonished Wrestler Found he had worsted God!

## CVI

DUST is the only secret,
Death the only one
You cannot find out all about
In his native town:
Nobody knew his father,
Never was a boy,
Hadn't any playmates
Or early history.

Industrious, laconic, Punctual, sedate, Bolder than a Brigand,<sup>279</sup> Swifter than a Fleet, Builds like a bird too,

# Christ robs the next— Robin after robin Smuggled to rest!

#### **CVII**

AMBITION cannot find him,
Affection doesn't know
How many leagues of Nowhere
Lie between them now.
Yesterday undistinguished—
Eminent to-day,
For our mutual honorImmortality!

#### CVIII

EDEN is that old-fashioned House We dwell in every day, Without suspecting our abode Until we drive away. How fair, on looking back, the Day We sauntered from the door, Unconscious our returning Discover it no more.

#### CIX

CANDOR, my tepid Friend, Come not to play with me! The Myrrhs and Mochas<sup>280</sup> of the Mind Are its Iniquity.

#### CX

SPEECH is a symptom of affection,
And Silence one,
The perfectest communication
Is heard of none—
Exists and its endorsement
Is had within—
Behold! said the Apostle,
Yet had not seen.

## CXI

WHO were "the Father and the Son"—
We pondered when a child,
And what had they to do with us—
And when portentous told
With inference appalling,
By Childhood fortified,
We thought, "at least they are no worse
Than they have been described."

Who are "the Father and the Son"—Did we demand today,
"The Father and the Son" himself
Would doubtless specify,
But had they the felicity

When we desired to know, We better Friends had been, perhaps, Than time ensue to be.

We start, to learn that we believe
But once, entirely—

Belief, it does not fit so well When altered frequently.

We blush, that Heaven if we achieve,

Event ineffable—

We shall have shunned, until ashamed To own the Miracle.

#### **CXII**

THAT Love is all there is, Is all we know of Love; It is enough, the freight should be Proportioned to the groove.

## **CXIII**

THE luxury to apprehend
The luxury 't would be
To look at thee a single time,
An Epicure of me,

In whatsoever Presence, makes, Till, for a further food I scarcely recollect to starve, So first am I supplied.

The luxury to meditate
The luxury it was
To banquet on thy Countenance,

## A sumptuousness bestows

On plainer days,
Whose table, far as
Certainty can see,
Is laden with a single crumb—
The consciousness of Thee.

#### **CXIV**

THE Sea said "Come" to the Brook, The Brook said "Let me grow!" The Sea said "Then you will be a Sea— I want a brook, Come now!"

## **CXV**

ALL I may, if small,
Do it not display
Larger for its Totalness?
'T is economy
To bestow a world
And withhold a star,
Utmost is munificence;
Less, though larger, Poor.

#### **CXVI**

LOVE reckons by itself alone, "As large as I" relate the Sun To one who never felt it blaze, Itself is all the like it has.

#### **CXVII**

THE inundation of the Spring
Submerges every soul,
It sweeps the tenement away
But leaves the water whole.
In which the Soul, at first alarmed,
Seeks furtive for its shore,
But acclimated, gropes no more
For that Peninsular.

## **CXVIII**

NO Autumn's intercepting chill Appalls this Tropic Breast, But African exuberance And Asiatic Rest.

#### **CXIX**

VOLCANOES be in Sicily And South America, I judge from my geography. Volcanoes nearer here, A lava step, at any time, Am I inclined to climb, A crater I may contemplate, Vesuvius 281 at home.

#### CXX

DISTANCE is not the realm of Fox, Nor by relay<sup>282</sup> as Bird; Abated, Distance is until Thyself, Beloved!

#### **CXXI**

THE treason of an accent Might vilify the Joy— To breathe,—corrode the rapture Of Sanctity to be.

#### **CXXII**

How destitute is he
Whose Gold is firm,
Who finds it every time,
The small stale sum—
When Love, with but a pence
Will so display,
As is a disrespect to India!<sup>283</sup>

#### CXXIII

CRISIS is sweet and, set of Heart Upon the hither 284 side,
Has dowers of prospective
Surrendered by the Tried.
Inquire of the closing Rose
Which Rapture she preferred,
And she will tell you, sighing,
The transport of the Bud.

## **CXXIV**

TO tell the beauty would decrease, To state the Spell demean, There is a syllableless sea Of which it is the sign.

My will endeavours for its word And fails, but entertains A rapture as of legacies—Of introspective mines.

## **CXXV**

TO love thee, year by year,
May less appear
Than sacrifice and cease.
However, Dear,
Forever might be short
I thought, to show,
And so I pieced it with a flower now.

#### **CXXVI**

I showed her heights she never saw— "Wouldst climb?" I said, She said "Not so"— "With me?" I said, "With me?" I showed her secrets Morning's nest, The rope that Nights were put across— And now, "Wouldst have me for a Guest?" She could not find her yes— And then, I brake my life, and Lo! A light for her, did solemn glow, The larger, as her face withdrew— And could she, further, "No?"

## **CXXVII**

ON my volcano grows the grass,—
A meditative spot,
An area for a bird to choose
Would be the general thought.

How red the fire reeks below, How insecure the sod— Did I disclose, would populate With awe my solitude.

## **CXXVIII**

IF I could tell how glad I was,
I should not be so glad,
But when I cannot make the Force
Nor mould it into word,
I know it is a sign
That new Dilemma be
From mathematics further off,
Than from Eternity.

#### **CXXIX**

HER Grace is all she has, And that, so vast displays, One Art, to recognize, must be, Another Art to praise.

#### **CXXX**

NO matter where the Saints abide, They make their circuit fair; Behold how great a Firmament Accompanies a star!

#### CXXXXI

TO see her is a picture,
To hear her is a tune,
To know her an intemperance
As innocent as June;
By which to be undone
Is dearer than Redemption—
Which never to receive,
Makes mockery of melody
It might have been to live.

## **CXXXII**

SO set its sun in thee,
What day is dark to me—
What distance far,
So I the ships may see
That touch how seldomly
Thy shore?

#### **CXXXIII**

HAD this one day not been, Or could it cease to be— How smitten, how superfluous Were every other day!

Lest Love should value less What Loss would value more, Had it the stricken privilege— It cherishes before.

#### CXXXIV

THAT she forgot me was the least, I felt it second pain,
That I was worthy to forget
What most I thought upon.

Faithful, was all that I could boast, But Constancy became, To her, by her innominate, 285
A something like a shame.

## **CXXXV**

THE incidents of Love Are more than its Events, Investments best expositor Is the minute per cents.

## **CXXXVI**

A little overflowing word
That any hearing had inferred
For ardor or for tears,
Though generations pass away,
Traditions ripen and decay,
As eloquent appears.

#### **CXXXVII**

JUST so, Jesus raps—He does not weary—

Last at the knocker and first at the bell,
Then on divinest tiptoe standing
Might He out-spy the lady's soul.
When He retires, chilled and weary—
It will be ample time for me;
Patient, upon the steps, until then—
Heart, I am knocking low at Thee!

#### CXXXVIII

SAFE Despair it is that raves, Agony is frugal, Puts itself severe away For its own perusal.

Garrisoned no Soul can be In the front of Trouble, Love is one, not aggregate, Nor is Dying double.

#### **CXXXIX**

THE Face we choose to miss, Be it but for a day— As absent as a hundred years When it has rode away.

#### CXL

OF so divine a loss We enter but the gain, Indemnity for loneliness That such a bliss has been.

THE healed Heart shows its shallow scar With confidential moan, Not mended by Mortality Are fabrics truly torn. To go its convalescent way So shameless is to see,

More genuine were Perfidy

Than such Fidelity.

#### **CXLII**

GIVE little anguish

Lives will fret.

Give avalanches—

And they'll slant,

Straighton looks

Straighten, look cautious for their breath,

But make no syllable— Like Death,

Who only shows his

WHO OHLY SHOWS HIS

Marble disc—

Sublimer sort than speech.

#### **CXLIII**

TO pile like Thunder to its close,
Then crumble grand away,
While everything created hidThis would be Poetry:
Or Love,—the two coeval came—
We both and neither prove,
Experience either, and consume—
For none see God and live.

#### **CXLIV**

THE Stars are old, that stood for me—
The West a little worn,
Yet newer glows the only Gold
I ever cared to earn—
Presuming on that lone result
Her infinite disdain,
But vanquished her with my defeat,
'T was Victory was slain.

#### **CXLV**

ALL circumstances are the frame In which His Face is set, All Latitudes exist for His Sufficient continent.

The light His Action and the dark The Leisure of His Will, In Him Existence serve, or set A force illegible.

## **CXLVI**

I did not reach thee,
But my feet slip nearer every day;
Three Rivers and a Hill to cross,
One Desert and a Sea—
I shall not count the journey one
When I am telling thee.

Two deserts—but the year is cold So that will help the sand—
One desert crossed, the second one Will feel as cool as land.
Sahara is too little price
To pay for thy Right hand!

The sea comes last. Step merry, feet!

To play together we are prone,
But we must labor now,
The last shall be the lightest load
That we have had to draw.

So short have we to go

The Sun goes crooked—that is night—Before he makes the bend
We must have passed the middle sea,
Almost we wish the end
Were further off—too great it seems
So near the Whole to stand.

We step like plush, we stand like snow-The waters murmur now, Three rivers and the hill are passed,

# Two deserts and the sea! Now Death usurps my premium<sup>286</sup> And gets the look at Thee.

# INSPIRED BY EMILY DICKINSON'S POETRY

Dickinson is *the* American poet whose work consisted in exploring states of psychic extremity.

—Adrienne Rich

# **Poetry**

"You who desired so much," begins Hart Crane's 1927 poem "To Emily Dickinson." He goes on to write: "Truly no flower yet withers in your hand." Emily Dickinson has kindled poetic fervor in writers for much of the twentieth century. Examples abound of

poets who invite Dickinson into their poems and who, like Crane, personally address her. Adrienne Rich invokes Dickinson in her 1964 poem "I Am in Danger—Sir—," whose title comes from a letter Dickinson wrote to Atlantic Monthly editor Thomas Higginson. In another poem, "The Spirit of Place" (1981), Rich speaks of Dickinson's Amherst house: "This place is large enough for both of us / the river-fog will do for privacy / this is my third and last address to you." In "The Uses of Emily" (1986), the poet Maxine Kumin disparages "masculine critics" who give little heed to the women poets of their day, instead electing Dickinson as the safe choice, the "one woman worth

mention." She goes on to note that Thomas Higginson was disdainful of Dickinson's poetry in the years just following her death.

Dickinson has served as an inspiration

for countless poems, notably John Berryman's "Your Birthday in

Wisconsin You are 140," Robert Bly's "Visiting Emily Dickinson's Grave with Robert Francis," Amy Clampitt's "Amherst," Archibald MacLeish's "In and Come In," Carl Sandburg's "Public Letter to Emily Dickinson," and William Stafford's "Emily." Visiting Emily: Poems Inspired by the Life and Work of Emily Dickinson (Sheila Coghill and Thom Tammaro, eds., Iowa City:

University of Iowa Press, 2000), an anthology of poems by more than eighty poets, celebrates the mystifying poet of Amherst and confirms her extraordinary influence on modern poetry.

## <u>Theater</u>

Susan Glaspell's 1930 play Alison's

House explores the lingering influence of a great poet, modeled after Emily Dickinson, on her family eighteen years after her death. As in much of her work,

Glaspell focuses on the past as a source of strength and insight. In 1931 Glaspell received a Pulitzer Prize for *Alison's House*; she was the second woman ever

career, Glaspell wrote thirteen plays, fourteen novels, and more than fifty short stories, articles, and essays.

Playwright William Luce delves into

to receive the Pulitzer. Throughout her

Dickinson's private life and thoughts in his one-woman play *The Belle of Amherst* (1976). The play focuses on the poet's passionate relationships with her childhood friends and her father, and Luce interweaves her poetry and epigrams into the script. *The Belle of Amheret of Sere a unique climpas into the* 

Luce interweaves her poetry and epigrams into the script. *The Belle of Amherst* offers a unique glimpse into the mythologized psychology of Dickinson, particularly in regard to her strong motivation to write. The actress Julie Harris portrayed Dickinson in a 1976

Broadway performance of *The Belle of Amherst*. The show was filmed and aired on television, and Harris received her fifth Best Actress Tony Award for the role.

#### **Dance**

Can the life and poetry of Emily

Dickinson be danced? For Martha Graham, the answer was an obvious yes. The acclaimed dancer and choreographer Martha Graham is remembered for her many innovations in modern dance; indeed, her name has

become synonymous with the form. Her work Letter to the World, which

premiered in 1940, takes its title from Dickinson's lines "This is my letter to the world, / That never wrote to me" (p. 5). Clad in a full, white gown reminiscent of the clothes Dickinson wore from her twenties on, Graham portrays the inner life of the poet—her torment, loss, and struggle to be happy. Barbara Morgan's well-known photograph of the performance captures Graham kicking her leg over her back, with her white dress swept up about her. Andy Warhol created a silkscreen print of the image entitled "Letter to the World (The Kick)." In her poem "Martha Graham in 'Letter to the World' " (2001), Lyn Lifshin writes, "Her words, a swirl of / her body."

# **Music**

The passion and eccentricity of Dickinson's poetry translate well into music. Composers as diverse as Jan Meyerowitz, Vincent Per sichetti, and Rudolf Escher have adapted Dickinson into their own symphonic poems. A work by Samuel Barber for a cappella chorus, "Let Down the Bars, O Death" (1936), is based on one of Dickinson's poems (p. 208). In 1950 Aaron Copland finished his work for voice and piano titled Twelve Poems of Emily Dickinson; his idiosyncratic approaches to each poem often mirror Dickinson's

own erratic use of punctuation and language.

In 2001 Simon Holt composed A

Ribbon of Time, a cycle of five pieces based on Dickinson's "I heard a fly buzz when I died" (p. 252). The second piece in the cycle, "Two movements for string quartet," won the 2002 Royal Philharmonic Society Music Award for Chamber-scale Composition; in the piece, the arrangements for the strings are spare and precise, creating a space for the buzzing fly, which is represented by a viola.

# Visual Art

Dickinson's poems make her writing ideal raw material for visual artists. Her poetry has been incorporated into the works of such artists as Barbara Penn, Elaine Rei chek, and Liz Rideal. In her paper sculptures, New York-based artist Lesley Dill uses a blend of exotic papers, including rice and metallic papers, to fashion dresses and necklaces reminiscent of Dickinson's customary attire; she then lithographs Dickinson's text onto the sculptures.

The power and simplicity of

# COMMENTS & QUESTIONS

In this section, we aim to provide the reader with an array of perspectives on the text, as well as questions that challenge those perspectives. The commentary has been culled from sources as diverse as reviews contemporaneous with the work, letters written by the author, literary criticism of later generations, and appreciations written throughout history. Following the commentary, a series of questions seeks to filter Emily Dickinson's Collected Poems through a variety of points of view and bring about a richer understanding of these enduring works.

# **Comments**

## SATURDAY REVIEW

The poems of Miss Emily Dickinson (who has hitherto been known to

Englishmen chiefly if not only by some very injudicious praise of the kind usual with Mr. Howells) are posthumously published, and from the short preface written by her sympathetic and friendly editor we learn some interesting facts of her life. She appears never to have travelled, or, indeed, left the house of her father in Amherst, Mass., where she

only appeared in society at a yearly reception given by her father to his friends. We are told that she wrote verses abundantly, but "absolutely without the thought of publication, and solely by way of expression of the writer's own mind." The editor prepares us for the want of form and polish in her poems, but expects us to regard them as "poetry torn up from the roots, with rain and dew and earth still clinging to them, giving a freshness and a fragrance not otherwise to be conveyed." A merit is here implied in their very imperfections as producing the effect of poetry drawn an absolutely natural unconventional source. We very much

led the life of an absolute recluse, and

may be fairly adduced from the uneducated and illiterate character of some of these verses, although we fully recognize in them the unmistakable touch of a true poet. In these days considerable mastery over form in poetry is not uncommon, but in our minor poets it is rare indeed to find much original thought, or a strongly marked individuality. For this reason it is, perhaps, difficult not to overvalue these qualities, when we find them, as in Miss Dickinson, separated from any merits of form. We continually see the thoughts of prose put into verse, but, while some of the poems in the present volume can

doubt, however, whether this conclusion

are, first, a faculty for seizing the impression or feelings of the moment, and fixing them with rare force and accuracy; secondly, a vividness of imagery, which impresses the reader as thoroughly unconventional, and shows considerable imaginative power....

scarcely be described as in verse at all, they almost all contain a genuinely poetical thought, or image, or feeling. Miss Dickinson's chief characteristics

The editor suggests a comparison between the poems of this writer and those of William Blake; but, beyond the fact that they are both quite indifferent to the technical rules of art, the comparison is not very far-reaching. Miss Dickinson possesses little of that lyrical faculty to which Blake owes his reputation; but, on the other hand, she is gifted with a far saner mind. Her poems, however, may be said to be distinctively American in their peculiarities, and occasionally call to mind the verses of Emerson. The editor with his unfailing sympathy tells us that, "though curiously indifferent to all conventional rules," she yet had "a vigorous literary standard of her own, and often altered a word many times to suit an ear which had its own tenacious fastidiousness." Some of the poems, however, seem destitute of any metre whatever, the lines do not scan, the rhymes are arbitrarily thrown in or left out, in accordance with no fixed system, and grammar, and even good taste are only conspicuous by their absence. But in some of her roughest poems there is still an idea which forces the reader to attend to its meaning, and impresses him, in spite of the irritation he may feel at the form.

—September 5, 1891

# THE NATION

The curious fame of [Emily Dickinson]

is something unique in literature, being wholly posthumous and achieved without puffing or special effort, and, indeed, quite contrary to the expectation of both editors and publishers. No

volumes of American poetry, not even the most popular of Longfellow's, have had so wide or so steady a sale. On the other hand, the books met with nothing but vehement hostility and derision on the part of leading English critics, and the sale of the first volume, when reprinted there, did not justify the issue of a second. The sole expressed objection to them, in the English mind, lay in their defects or irregularities of manner; and yet these were not nearly so defiant as those exhibited by Whitman, who has always been more unequivocally accepted in England than at home. There is, however, ample evidence that to a minority, at least, of English readers, Emily Dickinson is

due to the peculiarly American quality of the landscape, the birds, the flowers, she delineates. What does an Englishman know of the bobolink, the whippoorwill, the Baltimore oriole, even of the American robin or blue-jay? These have hardly been recognized as legitimate stock properties in poetry, either on the part of the London press or of that portion of the American which calls itself "cosmopolitan." To use them is still regarded, as when Emerson and Lowell were censured for their use, "a foolish affectation of the familiar." Why not stick to the conventional skylark and nightingale? Yet, as a matter of fact, if

very dear. Some consideration is also

discourse to the poet, it is better that a Spaniard should write as a Spaniard and a Dutchman as a Dutchman. If Emily Dickinson wishes to say, in her description of a spirit, "'Tis whiter than an Indian pipe," let her say it.

we may again draw upon Don Quixote's

—October 8, 1896

# MARTHA HALE SHACKFORD

The secret of Emily Dickinson's wayward power seems to lie in three special characteristics, the first of which is her intensity of spiritual experience. Hers is the record of a soul endowed

with unceasing activity in a world not material, but one where concrete facts are the cherished revelation of divine significances. Inquisitive always, alert to the inner truths of life, impatient of the brief destinies of convention, she isolated herself from the petty demands of social amenity. A sort of tireless, probing energy of mental action absorbed her, yet there is little speculation of a purely philosophical sort in her poetry. Her stubborn beliefs, learned in childhood, persisted to the end,—her conviction that life is beauty, that love explains grief, and that immortality endures. The quality of her writing is profoundly stirring, because it betrays, not the intellectual pioneer, but the acutely observant woman, whose capacity for feeling was profound....

It is essentially in the world of spiritual forces that her depth of poetic

originality is shown. Others may

describe nature, but few can describe life as she does. Human nature, the experiences of the world of souls, was her special study, to which she brought, in addition to that quality of intensity, second characteristic,—keen

sensitiveness to irony and paradox. Nearly all her perceptions are tinged with penetrating sense of the contrasts in human vicissitude. Controlled, alert, expectant, aware of the perpetual compromise between clay and spirit, she

pathos contend in her. It is this which gives her style those sudden turns and that startling imagery. Humor is not, perhaps, a characteristic associated with pure lyric poetry, and yet Emily Dickinson's transcendental humor is one of the deep sources of her supremacy. Both in thought and in expression she gains her piercing quality, her undeniable spiritual thrust, by this gift, stimulating, mystifying, but forever inspiring her readers to a profound conception of high destinies. The most apparent instances of this keen, shrewd delight in challenging convention, in the effort to establish,

accepted the inscrutable truths of life in a fashion which reveals how humor and aesthetic elegance, they are quivering to express living ideas, and so they come surprisingly close to what we are fond of calling the commonplace. She reverses the usual, she hitches her star to a wagon, transfixing homely daily phrases for poetic purposes. Such an audacity has seldom invaded poetry with a desire to tell immortal truths through the medium of a deep sentiment for old habitual things. It is true that we permit this liberty to the greatest poets, Shakespeare, Keats, Wordsworth, and

through contrast, reconcilement of the earthly and the eternal, are to be found in her imagery. Although her similes and metaphors may be devoid of languid

some others; but in America our poets have been sharply charged not to offend in this respect. Here tradition still animates many critics in the belief that real poetry must have exalted phraseology.... The expectation of finding in her work some quick, perverse, illuminating comment upon eternal truths certainly keeps a reader's interest from flagging, but passionate intensity and fine irony do not fully explain Emily Dickinson's significance. There is a third characteristic trait, a dauntless courage in accepting life. Existence, to her, was a momentous experience, and she let no promises of a future life deter her from feeling the throbs of this one. No false

present anguish. An energy of pain and joy swept her soul, but did not leave any residue of bitterness or of sharp innuendo against the ways of the Almighty. Grief was a faith, not a disaster. She made no effort to smother the recollections of old companionship by that species of spiritual death to which so many people consent.... The willingness to look with clear directness at the spectacle of life is observable everywhere in her work. Passionate fortitude was hers, and this is the greatest contribution her poetry makes to the reading world. It is not expressed

precisely in single poems, but rather is

comfort released her from dismay at

elaborate philosophy, yet with irresistible ways of expression, Emily Dickinson's poems have true lyric appeal, because they make abstractions such as love, hope, loneliness, death, and immortality, seem near and intimate and faithful.

present in all, as key and interpretation of her meditative scrutiny. Without

# **Questions**

—from *Atlantic Monthly* (January 1913)

1. Is it possible to abstract a consistent philosophy or religion or morality from Emily Dickinson's poetry?

Dickinson's God? 3. That Love is all there is, Is all we know of Love.

2. What are the attributes of Emily

- So wrote Dickinson in *The Single* Hound (page 312). Given all that we know of her life, what do you think she meant by the word
  - "Love?" A relation to God? Charity and understanding for fellow humans, or a sense of togetherness with them? Sex?
- 4. Take a poem by Dickinson that moves you. Scan it and the prevailing meter is almost sure to be iambic (an unstressed syllable

followed by a stressed syllable).

See whether the irregularities are significant. In general, do you feel that there is a convergence of form and content in her poems? After all, she has many subjects but writes mostly within one form.

# FOR FURTHER READING

# **Works by Dickinson**

Letters. 3 vols. Edited by Thomas H.

Johnson and Theodora Ward. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1958. Based on the three-volume edition is the one-volume Selected Letters, edited by Thomas H. Johnson; Cambridge, MA: Harvard University Press, 1971. The 1971 edition is the source for most of the quotations in the Introduction to this edition. Dickinson's letters are an indispensable supplement to the poems.

The Manuscript Books of Emily

Dickinson: A Facsimile Edition. Edited by R. W. Franklin. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1981. Allows readers to see Dickinson's poems, and her frequent use of variant words, in her own hand.

The Master Letters of Emily Dickinson.

University of Massachusetts Press, 1998.

The Poems of Emily Dickinson. 3 vols. Edited by Thomas H. Johnson.

Edited by R. W. Franklin. Amherst:

Cambridge, MA: Harvard University Press, 1955. This edition, with the poems arranged chronologically and the poet's idiosyncrasies intact, includes variant readings critically compared

distillation of the three-volume edition is the one-volume The Complete Poems of Emily Dickinson, edited by Thomas H. Johnson (Boston: Little, Brown, 1976), which brings together the original texts of all 1,775 of Dickinson's poems. In the Introduction to this edition, quotations from poems not included in this edition are from the one-volume publication. The Poems of Emily Dickinson. Edited by R. W. Franklin. Cambridge, MA:

with all known manuscripts. A

Harvard University Press, 1999. The most accurate version available today. The University of Michigan Humanities Text Initiative, in its *American Verse* 

Project, contains poems from several

Thomas Higginson and Mabel Loomis Todd (*Poems*, 1891, 1910, and 1914). (www.hti. umich.edu/index.html)

editions of Dickinson's poems edited by

# **Biography**

Farr, Judith. The Passion of Emily

Dickinson. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1992. Farr says that "although this book is not a biography, it attempts an inclusive vision of the poetry of Emily Dickinson, read in the context of her time, environment, and personal circumstances."

Habegger, Alfred. My Wars Are Laid Away in Books: The Life of Emily 2001. Habegger writes that this book was written "with the feeling that it was time someone assess recent findings and claims relating to this poet."

Sewall, Richard B. The Life of Emily

Dickinson. New York: Random House,

Dickinson. 1974. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1994. Generally agreed to be the most thorough biography of the poet.

Wolff, Cynthia Griffin. *Emily Dickinson*. New York: Alfred A. Knopf, 1986. Particularly interesting for its psychoanalytic insights.

# **Context**

to the Bible in Emily Dickinson's Poetry. Lanham, MD: Scarecrow Press, 1997.

Capps, Jack L. Emily Dickinson's Reading, 1836-1886. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1966.

Diehl, Joanne Feit. Dickinson and the

Bennett, Fordyce R. A Reference Guide

Princeton University Press, 1981. Traces the influence of romantic poets on Dickinson's work.

Keller, Karl. The Only Kangaroo Among the Beauty: Emily Dickinson

and America. Baltimore, MD: Johns Hopkins University Press, 1979. Places Dickinson in the context of other

Romantic Imagination. Princeton, NJ:

American writers, from Anne Bradstreet to Robert Frost. St. Armand, Barton Levi. Emily

Dickinson and Her Culture: The Soul's

Society. Cambridge and New York: Cambridge University Press, 1984. Solidly locates Dickinson in her time, exploring contemporary attitudes toward

Webster, Noah. An American Dictionary of the English Language. 1828. Reprint: New York: Johnson Reprint Corp., 1970.

# **Criticism**

death, heaven, nature, etc.

Bennett, Paula. Emily Dickinson,

Bogan, Louise, Archibald MacLeish, and Richard Wilbur. *Emily Dickinson: Three Views*. Amherst, MA: Amherst College Press, 1960. Three sensitive papers by poets, delivered at the

Amherst Bicentennial in 1959.

Woman Poet. Iowa City: University of

Iowa Press, 1990.

Cameron, Sharon. *Choosing Not Choosing: Dickinson's Fascicles*. Chicago: University of Chicago Press, 1993. Cameron argues that Dickinson's manuscript variants should be treated as an essential part of the poems.

Farr, Judith, ed. *Emily Dickinson: A Collection of Critical Essays*. Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall, 1996.

Dickinson's Poetry. New York: Modern Language Association of America, 1989. Ferlazzo, Paul J., ed. Critical Essays on Emily Dickinson. Boston: G. K. Hall, 1984. Halio, Marcia Peoples, ed. Emily Dickinson: A Collection of Poems.

Fast, Robin Riley, and Christine Mack Gordon, eds. *Approaches to Teaching* 

Harcourt Brace Casebook Series in Literature. Fort Worth, TX: Harcourt College Publishers, 1998. This small book includes several of the best, most representative essays on Dickinson, as well as advice to students writing about her.

Howe, Susan. My Emily Dickinson.

Berkeley, CA: North Atlantic Books, 1985. Perhaps the most personal book of criticism on Dickinson; Howe's exploration of Dickinson's variants and her lengthy interpretation of "My life had stood a loaded gun" (The Complete Poems of Emily Dickinson, edited by Thomas H. Johnson, poem 754) are especially dazzling. Kazin, Alfred. "Wrecked, Solitary, Here: Dickinson's Room of Her Own." In his An American Procession. New York: Alfred A. Knopf, 1984. Martin, Wendy, ed. The Cambridge Companion to Emily Dickinson. Cambridge and New York: Cambridge University Press, 2002. Helpfully publication history, poetic strategies and themes, and cultural contexts.

Miller, Cristanne. *Emily Dickinson: A Poet's Grammar*. Cambridge, MA:

Harvard University Press, 1987.

Excellent

divided into sections biography and

Oberhaus, Dorothy Huff. *Emily Dickinson's Fascicles: Method and Meaning*. University Park: Pennsylvania State University Press, 1995.

Paglia, Camille. "Amherst's Madame de Sade: Emily Dickinson." In her Sexual Personae: Art and Decadence from Nefertiti to Emily Dickinson. New

Nefertiti to Emily Dickinson. New Haven: Yale University Press, 1990. Paglia asserts that "violence is her love

Wolosky, Shira. *Emily Dickinson: A Voice of War*. New Haven: Yale University Press, 1984. Wolosky

counters ahistorical readings of Dickinson by arguing that many of her

song and lullaby."

modern Literature Inspired
by Dickinson

Byatt, A. S. *Possession: A Romance*. New York: Random House, 1990.

Collins, Billy. Picnic, Lightning.

Pittsburgh, PA: University of Pittsburgh Press, 1998.

Faber, 1986.
Crane, Hart. *The Poems of Hart Crane*.
Edited by Marc Simon. New York:
Liveright Publishing, 1986.
e. e. cummings. e. e. cummings:
Complete Poems 1904-1962. Edited by
George J. Firmage. New York: Liveright
Publishing, 1994.

Cope, Wendy. Making Cocoa for Kingsley Amis. London: Faber and

Farr, Judith. *I Never Came to You in White*. Boston: Houghton Mifflin, 1996. Frost, Robert. *The Poetry of Robert Frost*. Edited by Edward Con nery Lathem. New York: Holt, Rinehart and Winston, 1969.

Elizabeth Bishop with Marianne Moore and Robert Lowell. New York: Farrar, Straus and Giroux, 1989. Contains remarks about Dickinson by Elizabeth Bishop. Rich, Adrienne. The Fact of a

Doorframe: Selected Poems, 1950-

Kalstone, David. Becoming a Poet:

2001. New York: W. W. Norton, 2002.
Stevens, Wallace. The Collected Poems.
New York: Vintage Books, 1982.
Williams, William Carlos. Interview in Poets at Work: The Paris Review

*Interviews*, edited by George Plimpton.

New York: Viking, 1989.

# Other Dickinson Resources

Eberwein, Jane Donahue, ed. An Emily

Dickinson Encyclopedia. Westport, CT: Greenwood Press, 1998. Contains entries on all aspects of Dickinson's life, culture, and work.

The Emily Dickinson International

Society. The Society creates a forum for scholarship on Dickinson and her relation to the tradition of American poetry and women's literature. (www.cwru.edu/affil/edis/edisindex.htm

Grabher, Gudrun, Roland Hagenbüchle, and Cristanne Miller, eds. *The Emily Dickinson Handbook*. Amherst: University of Massachusetts Press,

1998. A source for quick reference containing basic and up-to-date information on the poet's life, her art, the manuscripts, and the current state of Dickinson scholarship.

## **INDEX OF FIRST LINES**

#### A

A bird came down the walk A cap of lead across the sky A charm invests a face A clock stopped—not the mantel's A death-blow is a life-blow to some A deed knocks first at thought A dew sufficed itself Adrift! A little boat adrift! A drop fell on the apple tree Adventure most unto itself A face devoid of love or grace Afraid? Of whom am I afriad? After a hundred years

Ah, Teneriffe! Retreating Mountain! A lady red upon the hill A light exists in spring A little madness in the Spring A little overflowing word A little over Jordan A little road not made of man All circumstances are the frame All I may, if small All overgrown by cunning moss A long, long sleep, a famous sleep Alter? When the hills do Ambition cannot find him A modest lot, a fame *petite* Ample make this bed A murmur in the trees to note An altered look about the hills

A narrow fellow in the grass An awful tempest mashed the air An everywhere of silver Angels in the early morning A poor torn heart, a tattered heart Apparently with no surprise A precious, mouldering pleasure 't is A prompt, executive Bird is the Jay Arcturus is his other name Are friends delight or pain? A route of evanescence As by the dead we love to sit As children bid the guest good-night A sepal, petal, and a thorn As far from pity as complaint A shady friend for torrid days Ashes denote that fire was

A sickness of this world it most occasions As if some little Arctic flower As imperceptibly as grief A sloop of amber slips away A solemn thing it was, I said A something in a summer's day A spider sewed at night At half-past three a single bird A thought went up my mind to-day A throe upon the features At last to be identified! At least to pray is left, is left A toad can die of light! A train went through a burial gate A triumph may be of several kinds A word is dead

A wounded deer leaps highest

#### B

Beauty crowds me till I die Because I could not stop for Death Before I got my eye put out Before the ice is in the pools Before you thought of spring Belshazzar had a letter Bereaved of all, I went abroad Besides the Autumn poets sing Blazing in gold and quenching in purple Bless God, he went as soldiers Bloom upon the Mountain, stated Bring me the sunset in a cup

## <u>C</u>

Candor, my tepid Friend
Come slowly, Eden!
Could I but ride indefinite
Could mortal lip divine
Crisis is sweet and, set of Heart

#### <u>D</u>

Dare you see a soul at the white heat?
Dear March, come in!
Death is a dialogue between
Death is like the insect
Death sets a thing significant
Delayed till she had ceased to know
Delight becomes pictorial

Did the harebell loose her girdle Distance is not the realm of Fox Doubt me, my dim companion! Down Time's quaint stream Drab habitation of whom? Dropped into the Drowning is not so pitiful Dust is the only secret  $\mathbf{E}$ 

Departed to the judgment

Each life converges to some centre Each that we lose takes part of us Eden is that old-fashioned House Elijah's wagon knew no thill Elysium is as far as to Except the heaven had come so near
Except the smaller size, no Lives are
round
Except to heaven, she is nought
Exhilaration is the Breeze
Experiment to me
Exultation is the going

F

Essential oils are wrung

# Faith is a fine invention Fame is a fickle food Far from love the Heavenly Father Farther in summer than the birds Fate slew him, but he did not drop Father, I bring thee not myself

Finite to fail, but infinite to venture Follow wise Orion Forbidden fruit a flavor has For Death,—or rather For each ecstatic instant Forever cherished be the tree Frequently the woods are pink From all the jails the boys and girls From cocoon forth a butterfly From us she wandered now a year G

Few get enough,—enough is one

#### U

Give little anguish
Given in marriage unto thee
Glee! the great storm is over!

Glowing is her Bonnet God gave a loaf to every bird God made a little gentian God permits industrious angels Going to heaven! "Going to him! Happy letter! Tell him Good night! which put the candle out? Great streets of silence led away

Glory is that bright tragic thing

# <u>H</u>

Had this one day not been
Have you got a brook in your little heart
Heart not so heavy as mine
Heart, we will forget him!
He ate and drank the precious words

Heaven is what I cannot reach! "Heavenly Father," take to thee He fumbles at your spirit He preached upon "breadth" till it argued him narrow He put the belt around my life Her final summer was it Her Grace is all she has Her "Last Poems" He touched me, so I live to know High from the earth I heard a bird His bill an auger is His Cheek is his Biographer His mind, of man a secret makes Hope is a subtle glutton Hope is the thing with feathers How dare the robins sing

How happy is the little stone
How many times these low feet
staggered
How still the bells in steeples stand
How the old mountains drip with sunset

How destitute is he

#### Ι

I bet with every Wind that blew, till
Nature in chagrin
I breathed enough to learn the trick
I bring an unaccustomed wine
I cannot live with you
I can't tell you, but you feel it
I can wade grief,
I did not reach thee

I died for beauty, but was scarce I dreaded that first robin so I envy seas whereon he rides If anybody's friend be dead I felt a cleavage in my mind I felt a funeral in my brain If I can stop one heart from breaking If I could tell how glad I was If I may have it when it's dead If I should die If I shouldn't be alive I fit for them I found the phrase to every thought If pain for peace prepares If recollecting were forgetting If the foolish call them "flowers" If tolling bell I ask the cause

If what we could were what we would If you were coming in the fall I gained it so, I gave myself to him I had a daily bliss I had a guinea golden I had been hungry all the years I had no cause to be awake I had no time to hate, because I have a king who does not speak I have no life but this I have not told my garden yet I heard a fly buzz when I died I held a jewel in my fingers I hide myself within my flower I know a place where summer strives I know some lonely houses off the road

I know that he exists I like a look of agony I like to see it lap the miles I lived on dread; to those who know I live with him, I see his face I'll tell you how the sun rose I lost a world the other day I many times thought peace had come I'm ceded, I've stopped being theirs I meant to find her when I came I meant to have but modest needs I measure every grief I meet Immortal is an ample word Immured in Heaven! What a Cell! I'm nobody! Who are you? I'm thinking of that other morn I'm wife; I've finished that

I never hear the word "escape" I never lost as much but twice I never saw a moor I never told the buried gold In lands I never saw, they say I noticed people disappeared In winter, in my room I read my sentence steadily I reason, earth is short, Is bliss, then, such abyss I see thee better in the dark I send two Sunsets I shall know why, when time is over Is Heaven a physician? I should have been too glad, I see I should not dare to leave my friend I showed her heights she never saw

I sing to use the waiting I started early, took my dog I stepped from plank to plank I taste a liquor never brewed It can't be summer,—that got through It dropped so low in my regard I think just how my shape will rise I think that the root of the Wind is Water I think the hemlock likes to stand It makes no difference abroad It might be easier I took my power in my hand It's all I have to bring to-day It sifts from leaden sieves It's like the light It sounded as if the streets were running It's such a little thing to weep

It tossed and tossed It was not death, for I stood up It was too late for man I've got an arrow here I've seen a dying eye I watched her face to see which way I went to heaven I went to thank her I wish I knew that woman's name I wonder if the sepulchre I worked for chaff, and earning wheat I years had been from home

It struck me every day

## <u>•</u>

Just lost when I was saved!

Just so, Jesus raps—He does not weary
—

## L

Lay this laurel on the one

Let down the bars, O Death! Let me not mar that perfect dream Life, and Death, and Giants Lightly stepped a yellow star Like brooms of steel Like Men and Women shadows walk Like mighty footlights burned the red Like some old-fashioned miracle Like trains of cars on tracks of plush Look back on time with kindly eyes Love is anterior to life

Love reckons by itself alone Low at my problem bending

# M

March is the month of expectation Me! Come! My dazzled face Mine by the right of the white election! Mine enemy is growing old Morning is the place for dew "Morning" means "Milking" to the Farmer Morns like these we parted Much madness is divinest sense Musicians wrestle everywhere My cocoon tightens, colors tease My country need not change her gown

My friend must be a bir
My life closed twice before its close
My nosegays are for captives
My river runs to thee
My Wheel is in the dark
My worthiness is all my doubt

### N

Nature rarer uses yellow
Nature, the gentlest mother
New feet within my garden go
No Autumn's intercepting chill
No brigadier throughout the year
No matter where the Saints abide
No other can reduce

Nature is what we see

No romance sold unto Not any higher stands the grave Not any sunny tone Not in this world to see his face Not knowing when the dawn will come Not one by Heaven defrauded stay Not when we know Not with a club the heart is broken

No rack can torture me

# <u>O</u>

Of all the souls that stand create
Of all the sounds despatched abroad
Of bronze and blaze
Of Death the sharpest function
Of so divine a loss

Of this is Day composed Of tribulation these are they One blessing had I, than the rest One day is there of the series One dignity delays for all One need not be a chamber to be haunted One of the ones that Midas touched One sister have I in our house On my volcano grows the grass On such a night, or such a night On the bleakness of my lot On this long storm the rainbow rose On this wondrous sea Our journey had advanced Our lives are Swiss Our share of night to bear

Pain has an element of blank

didst break it

Papa above! Regard a Mouse Perception of an Perhaps you'd like to buy a flower Peril as a possession Pigmy seraphs gone astray Pink, small, and punctual Pompless no life can pass away Poor little heart! Portraits are to daily faces Prayer is the little implement Presentiment is that long shadow on the lawn Proud of my broken heart since thou

# R

Read, sweet, how others strove
"Remember me," implored the Thief
Remembrance has a rear and front
Remorse is memory awake
Reverse cannot befall the fine Prosperity

## S

Safe Despair it is that raves
Safe in their alabaster chambers
She died at play
She died,—this was the way she died
She laid her docile crescent down
She rose to his requirement, dropped
She slept beneath a tree

She sweeps with many-colored brooms She went as quiet as the dew Sleep is supposed to be So bashful when I spied her So, from the mould Softened by Time's consummate plush So gay a flower bereaved the mind Some Days retired from the rest Some keep the Sabbath going to church Some rainbow coming from the fair! Some things that fly there be Some, too fragile for winter winds So proud she was to die So set its sun in thee Soul, wilt thou toss again? South winds jostle them "Sown in dishonor?"

Split the lark and you'll find the music Step lightly on this narrow spot! Success is counted sweetest Summer begins to have the look Summer for thee grant I may be Superfluous were the sun Superiority to fate Surgeons must be very careful Sweet hours have perished here Sweet is the swamp with its secrets

Speech is a symptom of affection

# T

Taken from men this morning
Talk with prudence to a beggar
That I did always love

That is solemn we have ended That Love is all there is That she forgot me was the least That short, potential stir That such have died enables us The bat is dun with wrinkled wings The bee is not afraid of me The Bible is an antique volume The blunder is to estimate The body grows outside The bone that has no marrow The brain is wider than the sky The brain within its groove The bustle in a house The butterfly obtains The butterfly's assumption-gown The clouds their backs together laid The cricket sang The daisy follows soft the sun The day came slow, till five o'clock The Devil, had he fidelity The difference between despair The distance that the dead have gone The Duties of the Wind are few The dying need but little, dear The Face we choose to miss The farthest thunder that I heard The feet of people walking home The Future never spoke The gentian weaves her fringes The gleam of an heroic act The grass so little has to do The grave my little cottage is The healed Heart shows its shallow scar

The heart asks pleasure first The Hills erect their purple heads The incidents of Love The inundation of the Spring Their height in heaven comforts not The largest fire ever known The last night that she lived The leaves, like women, interchange The long sigh of the Frog The Look of Thee, what is it like? The luxury to apprehend The missing All prevented me The moon is distant from the sea The Moon upon her fluent route The moon was but a chin of gold The morns are meeker than they were The mountain sat upon the plain

The murmuring of bees has ceased The murmur of a bee The mushroom is the elf of plants The nearest dream recedes, unrealized The night was wide, and furnished scant The Ones that disappeared are back The one that could repeat the summer day The only ghost I ever saw The overtakelessness of those The past is such a curious creature The pedigree of honey The props assist the house The rat is the concisest tenant. There came a day at summer's full There came a wind like a bugle There is a flower that bees prefer

There is another Loneliness There is a shame of nobleness There is a solitude of space There is a word There is no frigate like a book There's a certain slant of light There's been a death in the opposite house There's something quieter than sleep The reticent volcano keeps The right to perish might be thought The robin is the one The rose did caper on her cheek These are the days that Reindeer love These are the days when birds come back The Sea said "Come" to the Brook

The show is not the show The skies can't keep their secret! The sky is low, the clouds are mean The soul selects her own society The soul should always stand ajar The Soul's superior instants The Soul that has a Guest The Soul unto itself The spider as an artist The springtime's pallid landscape The Stars are old, that stood for me The stimulus, beyond the grave The suburbs of a secret The sun just touched the morning; The sun kept setting, setting still The sweets of Pillage can be known The thought beneath so slight a film

The treason of an accent The way I read a letter's this The wind begun to rock the grass The Winds drew off The wind tapped like a tired man They dropped like flakes, they dropped like stars They say that "time assuages" They won't frown always,—some sweet day This is my letter to the world, This is the land the sunset washes This merit hath the worst This quiet Dust was Gentlemen and Ladies This was in the white of the year This world is not conclusion

Those final Creatures,—who they are— Though I get home how late, how late! Three weeks passed since I had seen her Through lane it lay, through bramble Through the straight pass of suffering Tie the strings to my life, my Lord 'T is an honorable thought 'T is little I could care for pearls 'T is so much joy! 'T is so much joy! 'T is sunrise, little maid, hast thou 'T is whiter than an Indian pipe Title divine is mine To be alive is power To-day or this noon To fight aloud is very brave To hang our head ostensibly To hear an oriole sing

To help our bleaker parts

To know just how he suffered would be dear

To learn the transport by the pain

To lose one's faith surpasses

To lose thee, sweeter than to gain

To love thee, year by year

To make a prairie it takes a clover

To my quick ear the leaves conferred
Too cold is this
To pile like Thunder to its close
To see her is a picture

To tell the beauty would decrease
To the staunch Dust we safe commit thee

To this apartment deep
To venerate the simple days
'T was a long parting, but the time

'T was just this time last year I died
'T was later when the summer went
'T was such a little, little boat
Two butterflies went out at noon
Two lengths has every day
Two swimmers wrestled on the spar

'T was comfort in her dying room

# <u>U</u>

Undue significance a starving man attaches
Unto my books so good to turn
Upon the gallows hung a wretch

Victory comes late Volcanoes be in Sicily

# W

Wait till the majesty of Death Water is taught by thirst We cover thee, sweet face We learn in the retreating We like March, his shoes are purple We never know how high we are We never know we go,—when we are going Went up a year this evening! We outgrow love like other things We play at paste We should not mind so small a flower

We spy the Forests and the Hills We thirst at first,—'t is Nature's act What if I say I shall not wait? What inn is this What mystery pervades a well! What soft, cherubic creatures When Etna basks and purrs When I hoped I feared When I was small, a woman died When night is almost done When roses cease to bloom, dear Where every bird is bold to go Where ships of purple gently toss Whether my bark went down at sea While I was fearing it, it came Who has not found the heaven below Who is it seeks my pillow nights?

Who never wanted,—maddest joy Who robbed the woods "Whose are the little beds," I asked Who were "the Father and the Son" Wild nights! Wild nights! Will there really be a morning? Witchcraft has not a pedigree Within my reach!

Who never lost, are unprepared

# Y

You cannot put a fire out
You left me, sweet, two legacies
Your riches taught me poverty
You've seen balloons set, haven't you?

- Attractive, pretty (Scottish).
- Rough, overgrown land.

2

3

6

Fluctuating, persistent fever, such as accompanies tuberculosis.

Things that soothe or eliminate pain.

<u>5</u>

Greek lyric poet (c.600 B.C.) of Lesbos, whose work survives only in fragments.

Beatrice Portinari, Dante's muse, who

appears in his epic poem *The Divine Comedy* (1308-1321).

7

Fine-grained calfskin, lambskin, or

kidskin used for the pages and bindings of books.

Is necessary or proper for.

†Rooster.

10

Tall, single-handled drinking vessel.

Bundle of sticks or branches bound together.

Plant with speckled white, purplish, or yellow tubular flowers.

12

Small portions.

Angels of the highest order.

Small sailing ship.

13

Last king of Babylonia (c.540 B.C.); in the Bible, he was warned of his death by mysterious writing that appeared on the

mysterious writing that appeared wall of his palace (see Daniel 5).

16

Try.

# <u>17</u>

Reference to the Bible, Matthew 19:14: "But Jesus said, Suffer little children, and forbid them not, to come unto me" (King James Version; henceforth KJV).

<u>18</u>

Small sailing ship.

<u>19</u>

Cochineal is a red dye made from female cochineal insects; mazarin is a deep purplish blue.

<u>20</u>

Large vessels for holding wine or other drinks.

<u>21</u>

Fruit of a tropical Asian tree, used to make cold drinks. 22 Francisco Pizarro (c.1475-1541),

Spanish explorer and conqueror of Peru. 23 The reference is to the Himalaya, a

range in south-central Asia. 24

Coins formerly used in Great Britain, worth about one-fourth of a penny.

25

Pledge of fidelity; betrothal. 26

God's; Jehovah, a variation of Yahweh,

is a name the ancient Hebrews used for the deity.

27

Angels of the second-highest order.
28

The Apennines are a mountain chain in Italy.

<u>29</u>

Meaning a loud preacher or orator; in the Bible (Mark 3:14—17) Boanerges, "sons of thunder," is the surname Jesus gave to his disciples James and John.

British governmental department

30

charged with the collection and management of the national revenue.

31

At his Crucifixion, Christ cried down

from the cross: "Eli, Eli, lama sabach thani?" The phrase means, "My God, my God, why hast thou forsaken me?" (Aramaic; see the Bible, Matthew 27:46,

KJV).

"Palm" refers to the palms the populace spread in his path to welcome Jesus when he entered Jerusalem a week before his Crucifixion; Palm Sunday (the

Sunday before Easter) commemorates

city
where Jesus was crucified.

33

that event. Calvary is a hill outside the

Garden outside Jerusalem where Jesus was betrayed (see the Bible, Matthew 26: 36-50).

34
Two-masted sailing ship.

<u>35</u>

Granary. 36

Town in northeastern Massachusetts; site of a battle fought on April 19, 1775, that

marked the start of the American Revolution.

In the Bible (1 Samuel 17), the young shepherd David, who became king of

Judah and Israel, used a slingshot and stones to kill Goliath, champion of the Philistines.

38

Muslin is a plain-woven cotton fabric; broadcloth a densely textured woolen fabric; and organdy a stiff, transparent fabric of cotton or silk.

Clothing.

39

40
Meaning without cease; a good example of Dickinson's habit of coining words.

<u>41</u>

City in south-central Bolivia, founded after silver was discovered there in 1545.

42 Food

Food; delicious dishes.

<u>43</u>

Metallic sulfide minerals, most commonly, gold-colored pyrite.

<u>44</u>

Gentle breeze.

<u>45</u>

American migratory songbird.

47

Slow, stately dances that originated in seventeenth-century France.

Wake-up call, especially from a bugle.

46

48

In the future; likely to come about.

Those honored or awarded prizes for great achievements.

50

Strapped or encircled, as with a belt or band.

```
51
Crown.
 52
Forbidden.
 53
Light literary or intellectual writings
(French).
 54
Ancient units of linear measure.
 55
High-speed sailing vessel.
 56
Swift horses.
```

57

Gold coin issued in England from 1663 to 1813, worth one pound, one shilling.

58

In medieval Europe, a lyric poet who

wrote and performed songs about courtly love.

59

60
One of the Pleiades, a star cluster named for the daughters of Atlas in Greek

for the daughters of Atlas in Greek mythology.

Accompanying.

Home (Scottish).

<u>52</u>

Dickinson is quoting from the Lord's Prayer. 64 Funnel-shaped device used to feed grain into a mill. 65 Small flute. 66 Room or unfinished part of a house just under the roof. 67 Cut with blows of a heavy instrument.

Salts or esters of carbonic acid, which

releases carbon dioxide.

63

### <u>68</u>

and a ruler of the Jews. Jesus said, "Except a man be born again, he cannot see the kingdom of God." Nicodemus asked Jesus, "How can a man be born when he is old?" (John 3:3-4, KJV).

In the Bible, Nicodemus was a Pharisee

<u>69</u>

Dimity is a sheer cotton fabric of plain weave in checks or stripes.

<u>70</u>

Restraint.

<u>71</u>

Small hand drums or tambourines.

<u> 72</u>

73

Clothing.

Tyre was an ancient Phoenician city on the eastern Mediterranean Sea in what is today southern Lebanon.

<u>74</u>

Vivid reddish orange.

<u>75</u>

Old name for a late-flowering aster. Other plants mentioned include: anemone, a type of buttercup; batschia, the old name for a plant with delicate blue flowers; epigea, a trailing evergreen shrub; and rhodora, an azalea with rose-purple flowers.

```
76
Town in Switzerland.
77
```

Ambush.

<u>78</u>

Lustrous fabric made with flat patterns in a satin weave.

<u>79</u>

Borough of southwestern England.

<u>80</u>

Marked by dullness and drabness.

<u>81</u>

Mystical poem or incantation.

<u>32</u>

83
Lengthy, usually religious, choral work.
84
Fragrant oil.
85
Burma, now known as Myanmar, is a

Mythological hero and leader of the Argonauts, who went in search of the Golden Fleece.

Payment, compensation.

country in southeastern Asia.

86

Playful repartee, banter.

88
Capital of Tunisia, a country in northern Africa.
89
Composed of hemp, a tough, fibrous plant used to make rope.
90

Fourth-brightest star in the sky and the brightest in the constellation Boötes.

91
Happens.

Step or steps for passing over a fence or wall.

<u>93</u>

92

Without a splash. 95 Covered with truffles (fungi that are considered a delicacy). 96 Weedy plant, especially the common vetch. 97 judas Iscariot, who betrayed Jesus (see the Bible, Matthew 26:14-16).

Art of discovering character from

Earthworm.

94

98

outward appearance.

Extremely hard stone; unbreakable or extremely hard substance.

<u>100</u>

99

Urgent states of affairs.

<u>101</u>

Variably colored, transparent to translucent glassy mineral.

<u>102</u>

Large vessels for holding wine or other drinks.

<u>103</u>

Beads of polished shells strung in strands and used by Native Americans as

money, ceremonial pledges, or ornaments.

104

Loose thread.

Authoritative decree.

This word seems to be Dickinson's coinage.

107

Liturgical song. 108

105

Druids were ancient Celtic priests associated with magic and wizardry

```
Also known as olivine, a greenish mineral.
```

<u>110</u>

109

Blue-flowering herb.

Crimson or purple dye.

111

<u>112</u>

American writer William Cullen Bryant (1794-1878) refers to this flower in his poem "The Death of the Flowers."

113

Scottish poet James Thomson (1700—1748), best known for his long poem The Seasons.

```
114
Creeping plant with fragrant white or pink flowers.
115
```

Rhine wine.

116
Loose white ecclesiastical vestment

with large open sleeves.

<u>117</u>

Church officer who tends church property and performs minor duties, such as ringing the bell for services.

Orchid.

118

<u>119</u>

120
Of a region of southwestern Russia on

Title for a gentleman (Spanish).

the coast of the Black Sea.

121

Protective charms.

<u>122</u>

Shaft of a vehicle.

<u>123</u>

Vertical triangular ends of a building extending from the cornice or eaves to the ridge of the roof.

<u>124</u>

More happily.

```
Flaming torches.

127

Inlet of the East China Sea.

128
```

Meaning iridescent; an opal is an

Translucent quartz in parallel layers of different colors.

Apple-green qu

125

**Festival** 

126

129

130

Apple-green quartz.

iridescent mineral.

```
131
Small wooded valley.
```

<u>132</u>

Secluded hollow or small valley.

<u>133</u>

Restrains, lessens in intensity.

<u>134</u>

Ceremony accompanying judgment by the Inquisition; the burning of a heretic.

135

Dickinson's coinage, meaning "reaching everywhere."

<u>136</u>

Schoolmaster or clergyman.

```
Assumption is the process of being taken up to heaven.
```

<u>138</u>

Strum, or make a monotonous humming sound.

<u>139</u>

140

Subtly deceptive reasons or arguments.

Margin (archaic).

Margin (archaic)

<u>141</u>

The Don and the Dnieper (mentioned two lines down) are rivers in Russia.

<u>142</u>

A tabernacle is a tent sanctuary; also a house of worship.

143

Here and elsewhere in Dickinson's

work, "seal" likely has biblical resonance, as in the Seven Seals of the Apocalypse (see Revelation 5).

144
Porcelain

Porceiair 145

One of the leaves composing the calyx of a flower.

<u>146</u>

A patron saint of Ireland; founder of several convents.

Tufted marsh plant.

148

Tool for boring holes.

149

Elated.

150

A fore- and aft-rigged boat.

147

151
Guido Reni (1575-1642), Italian painter known for his religious and mythological subjects. Tiziano Vicellio (14857-

1576), Italian painter renowned for his use of color. Italian painter (1581-1641), a leader of the Baroque eclectic

school; also known as Domenico Zampieri. 152 In Greek mythology, the home of the blessed after death. 153 Cease. 154 Endow. 155 Tasmania; founded as a penal colony in the early 1800s. 156 Fine French porcelain, often elaborately

decorated.

## <u>157</u>

(KJV).

A reference to the Bible, Revelation 19:9, describing a metaphorical marriage between the church and Jesus (the

Lamb): "Blessed are they which are called unto the marriage supper of the Lamb"

158
Marriage ceremony.

159

Pleasing fragrances.

Narrow strips.

```
161Buenos Aires, the capital of Argentina.162
```

Ruined city in south-central India, where diamonds from nearby mines were cut and sold during the fifteenth century.

<u>163</u>

Owning.

<u>164</u>

Flirt

<u>165</u>

Plant with bell-shaped blue or white flowers.

<u>166</u>

167 The Apostle Thomas was at first skeptical that Jesus had risen (see the Bible, John 20:24-28). 168 Caspian Sea, a saline lake between southeastern Europe and western Asia. 169 Extra payment or profit.

Reddish brown.

170Do not (Scottish dialect).171

Outfitted with shoulder ornaments, especially on military uniforms.

```
172
Male ancestors, forefathers.
```

<u>173</u>

Of the dawn.

<u>174</u>

Francisco Pizarro (c.1475-1541), Spanish explorer and conqueror of Peru.

<u>175</u>

Archangel acting as the messenger of God (see the Bible, Luke 1:19).

<u>176</u>

A rare autobiographical note; Dickinson wore only white from her twenties on.

<u>177</u>

A miter is the liturgical headdress of a Christian bishop.

178

Valuable white fur of a weasel.

Shield or shield-shaped emblem bearing a coat of arms.

<u>180</u>

Elected chief magistrates of the former republics of Venice and Genoa.

181

Solve, as a problem.

182

Clue.

Metal fasteners. 184 Unyielding, like the hard precious stone adamant 185 Brilliant display, as in a performance. 186 Small bunches of flowers.

183

187
Low-growing shrub with small, usually pinkish-purple flowers, which grows abun dantly on moors.

Abashes, disconcerts.

Includes.

<u>190</u>

The biblical story of Jacob wrestling the angel (see the Bible, Genesis 32:24-30) seems to inform this poem; a spar is a stout pole used to support sails and rigging.

<u>191</u>

Horizontal molded crown atop a building or wall.

<u>192</u>

Urbain-Jean-Joseph Leverrier (1811-1877), a French astronomer who Neptune. <u>193</u>

discovered evidence of the planet

Thomas H. Johnson, editor of The Complete Poems of Emily Dickinson (see For Further Reading) dates this poem from 1862; perhaps Dickinson is commenting on the Civil War.

Cut off, shortened.

194

195

Scimitar; a curved sword.

196
Gold coins once used as currency in some European countries.

```
197
Scarf worn around the neck; necktie.
 198
Chief of the twelve Apostles;
traditionally regarded as the first bishop
of Rome.
 199
Flock of sheep.
 200
Small, brownish finch.
 201
Quote from "The Jesus Prayer": "Lord
Jesus Christ, Son of God, have mercy on
me, a sinner."
```

```
203
Delicate lace.
 204
Relating to Moses, the Hebrew prophet
who led the Israelites out of Egypt.
 205
Covered shelter; hiding place.
 206
Spread.
 207
Down of an eider duck.
 208
```

Wealth or riches, especially when

Irrevocable.

```
dishonestly acquired.
 209
Army commander in the ancient Roman
Republic.
 210
Proceeds.
 211
Lifeless.
 212
Town of northern Italy known for its
marble quarries.
 213
In pursuit.
```

<u>214</u>

Hot southerly winds.

<u>215</u>

Area in a church containing the altar and seating for clergy and choir.

<u>216</u>

Study or examine carefully; memorize. 217

Unabsolved (as by a confession).

218
Art or study of standard spelling.

<u>219</u>

Unaccompanied part-song for three or more male voices, popular in the eighteenth century.

```
Lured away.

221

Oily aromatic resin from plants.

222
```

Seventy (a score is equivalent to twenty).

223

Bearing or manner.

224

Circumlocution, or long-winded speech. 225

Always.

<u>226</u>

220

Scale indicators on a clock.
227

Pen name of the English novelist Charlotte Brontë (1816-1855).

<u>228</u>

Town in Yorkshire, a county in northern England where Brontë spent most of her life.

<u>229</u>

Plant in the lily family; in Greek poetry and mythology, the flower of Hades and the dead.

<u>230</u>

Gnatlike fly.

In Greek mythology, the garden of the Hesperides contained the golden apples given to Hera as a wedding gift.

Susan Dickinson, Emily's friend and the

wife of her brother, Austin.

233
Mount Etna, a volcano in Sicily.

234
Tenerife (formerly Teneriffe) is the largest of the Canary Islands of Spain

largest of the Canary Islands of Spain.

235

Muscle.

<u>236</u>

People devoted to sensuous pleasure and

luxurious living. 237

Throughout the Bible, beings confronting God do not look at him directly.

<u>238</u>

Peter Parley's Winter Evening Tales (1829), by American writer Samuel

Goodrich, was a popular book of didactic tales for children.

<u>239</u>

Scientific study of insects.

<u>240</u>

Escutcheon; a shield or shield-shaped emblem bearing a coat of arms.

# <u>241</u>

Blocks of metal, such as gold.

<u>242</u>

William "Captain" Kidd (c.1645-1710), British sea captain and pirate.

<u>243</u>

In Greek mythology, three goddesses called the Fates controlled a person's life.

Clotho spun the thread of life; Lachesis measured its length; Atropos cut it.

<u>244</u>

High or mountainous land, particularly the Highlands of central and northern Scotland. Purifying.

245

<u>246</u>

Relating to Etruria, an ancient country of west-central Italy.

<u>247</u>

Companion of the legendary medieval hero Robin Hood.

<u>248</u>

Character in a fairy tale by the French author Charles Perrault, who marries and then murders one wife after another.

<u>249</u>

Felt-like material, often bright green, used to cover gaming tables.

```
250
Woman's long dress or skirt (archaic).
```

Small brook.

<u>252</u>

253

251

North American bird.

Examiner, reader.

<u>254</u>

Propitiation is an act of appeasement or conciliation.

<u>255</u>

Measured the depths of; understood.

<u>256</u>

or clouding.

257

Fine-grained quartz with colored bands

Midday (archaic).

Numbers; zeros.

<u>259</u>

During the reign of the emperor Augustus (27 B.C.-A.D. 14), Rome enjoyed a flourishing of art and culture.

<u>260</u>

Restores; reimburses.

<u> 261</u>

Subordinate or dependent.

```
262
Wings.
```

<u>263</u>

Small territorial divisions of a country.

<u>264</u>

The reference is to the English poet Elizabeth Barrett Browning (1806-1861), who lived in Italy for many years.

<u>265</u>

Relating to a duke or dukedom.

<u>266</u>

Enclosed, or imprisoned.

<u> 267</u>

Burial shrouds.

## <u>268</u>

Ninth-century B.C. Hebrew prophet who, according to the Bible, was carried skyward in a chariot of fire (see 2 Kings 2:11).

<u>269</u>

1 Corinthians describes Christ's resurrection; the poem specifically refers to 1 Corinthians 15:42-43: "So also is the resurrection of the dead. It is sown in corruption; it is raised in corruption: it is sown in dishonour; it is raised in glory" (KJV).

<u>270</u>

Bandits (Italian).

<u>.71</u>

Daggers with slender blades. 272

In Greek mythology, an immortal woodland goat-man given to unrestrained revelry.

<u>273</u>

Highly reactive nonmetallic element; a luminous substance.

<u>274</u>

Possibly an allusion to Old Testament passages: Job states that man's "foundation is in the dust" (Job 4:19, KJV); Abraham claims that he is "but dust and ashes" (Genesis 18:27, KJV).

```
Ghostly apparitions; phantoms.

276

In Greek mythology, a renow
```

275

In Greek mythology, a renowned poet and musician.

```
<u>277</u>
```

In the Bible (Genesis 32:22-32), Jacob wrestles by the Jabbok River (a tributary of the Jordan) with an angel who turns out to be God.

278
Face of God.

<u>279</u>

Robber, or bandit.

<u> 280</u>

Myrrhs are bitter resins used in perfume and incense; mochas are pungent Arabian coffees.

281

282

Act of passing something along.

Active volcano in southern Italy.

<u>283</u>

Perhaps an allusion to the opulence of Indian costumes.

<u>284</u>

Near.

<u>285</u>

Anonymous.

#### <u>286</u>

Prize or reward.